इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

BHDC-109
हिन्दी उपन्यास

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

पाठ्यक्रम विशेषज्ञ समिति

संकाय सदस्य

प्रो. कुलदीप चंद अग्निहोत्री
कुलपति, केन्द्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश
धर्मशाला (हिमाचल प्रदेश)

प्रो. सत्यकाम, समकुलपति
प्रो. शत्रुघ्न कुमार
प्रो. स्मिता चतुर्वेदी, (पाठ्यक्रम संयोजक)
प्रो. जितेन्द्र कुमार श्रीवास्तव

प्रो. महेन्द्रपाल शर्मा
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
जामिया मिल्लिया इस्लामिया, नई दिल्ली

प्रो. चंदन कुमार
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

प्रो. अनिल राय
प्रोफेसर, हिंदी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

पाठ्यक्रम संयोजन, संशोधन एवं संपादन

प्रो. स्मिता चतुर्वेदी
हिंदी संकाय, मानविकी विद्यापीठ,
इग्नू, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम निर्माण समिति

पाठ लेखक	इकाई संख्या	खंड संयोजक एवं संपादक
प्रो. रामदरश मिश्र नई दिल्ली	1	**प्रो. स्मिता चतुर्वेदी** हिंदी संकाय, मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली
डॉ. इन्दिरा जोशी जोधपुर	3	
डॉ. एन.ई. विश्वनाथ अय्यर	4	
डॉ. एन. रवीन्द्रनाथ	5	
प्रो. रामबक्ष प्रोफेसर (सेवानिवृत्त), भारतीय भाषा केन्द्र जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	2, 6, 7, 8 एवं 12	
डॉ. राकेश कुमार एसोसिएट प्रोफेसर, रामलाल आनंद कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय, नई दिल्ली	9, 10, 11	
प्रो. स्मिता चतुर्वेदी प्रोफेसर, हिंदी संकाय मानविकी विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली	13, 14	
प्रो. प्रज्ञा प्रोफेसर, हिंदी विभाग किरोड़ीमल कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	15, 16, एवं 17	

सचिवालयीय सहयोग

श्री नवल कुमार
मानविकी विद्यापीठ, इग्नू

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

सामग्री निर्माण

श्री तिलक राज सहायक कुलसचिव सा.नि.वि.प्र., इग्नू, नई दिल्ली	श्री यशपाल अनुभाग अधिकारी सा.नि.वि.प्र., इग्नू, नई दिल्ली

मार्च, 2021

© *इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, 2021*

ISBN:_____

सर्वाधिकार सुरक्षित, इस कार्य का कोई भी अंश किसी भी रूप में पुनः प्रकाशित नहीं किया जा सकता, अनुलिपिक या किसी अन्य साधन द्वारा, इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के बिना किसी लिखित आदेश व पुनः इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय के कोर्स की सूचना विश्वविद्यालय के मैदान गढ़ी कार्यालय, नई दिल्ली–110068 के द्वारा प्राप्त की जा सकती है अथवा विश्वविद्यालय की वेबसाइट http://www.ignou.ac.in देखें

इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय नई दिल्ली की ओर से कुलसचिव, सा. नि. वि. प्र. द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित।

मुद्रित : ऐजुकेशनल स्टोर्स, एस–5 बुलन्दशहर रोड इण्डस्ट्रीयल एरिया, साईट–1 गाजियाबाद (उ.प्र.)–201009

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

BHDC-109_4th proof.indd 4 8/6/2021 2:08:56 PM

पाठ्यक्रम परिचय

प्रस्तुत पाठ्यक्रम बी.ए (ऑनर्स) हिंदी का है। इस पाठ्यक्रम में तीन खंड है जिनमें 17 इकाइयाँ हैं। यह हिंदी उपन्यासों से संबद्ध पाठ्यक्रम है। इस पाठ्यक्रम में आप जिन पाँच उपन्यासों का अध्ययन करेंगे, वे हैं– 'निर्मला' (प्रेमचंद), 'त्याग–पत्र' (जैनेन्द्र कुमार), 'मानस का हंस' (अमृतलाल नागर), 'मृगनयनी' (वृंदावन लाल वर्मा) और 'आपका बंटी' (मन्नू भंडारी)। इन उपन्यासों से संबद्ध मूल्यांकन की इकाइयाँ इस पाठ्यक्रम में दी गई हैं। साथ ही इन उपन्यास लेखकों का परिचय और उपन्यासों की जानकारी उपन्यास साहित्य से संबद्ध इकाइयों में प्रस्तुत की गई हैं, जिससे उपन्यास के अध्ययन के पूर्व आप उपन्यास और उस उपन्यास के लेखक से परिचित हो सकें।

पाठ्यक्रम का उद्देश्य है आपको कुछ विशिष्ट हिंदी उपन्यासों से परिचित कराना। पाठ्यक्रम में उपन्यासों को समझने के लिए उनके विशिष्ट विषयों को सरल भाषा में विश्लेषित करने का प्रयास किया गया है। किसी भी विधा की रचना का वाचन करते हुए यह आवश्यक होता है कि आप उसके कथानक या अंतर्वस्तु को गहनता से समझें। अतः मूल उपन्यास पर विचार करने के क्रम में हमने उस उपन्यास के विविध पक्षों को उद्घाटित करने का प्रयास किया है, जिससे आप उपन्यास को ठीक तरह से समझ सकें। पाठ्यक्रम की इकाइयों में उस विशिष्ट उपन्यास की कथावस्तु, चरित्रों, भाषा, शैली और उपन्यास रचना में लेखक की दृष्टि तथा उद्देश्य पर विचार किया गया है। पाठ्यक्रम की पहली इकाई में आप उपन्यास के स्वरूप और विकास का अध्ययन करेंगे। इसी इकाई में आप उपन्यास के प्रमुख तत्वों के संदर्भ में भी जानकारी प्राप्त करेंगे। इन इकाइयों का अध्ययन करने के उपरांत आप उपन्यासों का मूल्यांकन और विश्लेषण सरलता से कर सकेंगे।

उपन्यास के कुछ अंशों की व्याख्या भी अभ्यास के रूप में उपन्यासों से संबद्ध इकाई में दी जा रही है। पाठ्यक्रम में 'परिशिष्ट' के अंतर्गत उपन्यासों के प्रमुख व्याख्यांश दिए गए हैं। इनकी व्याख्या स्वयं करने का अभ्यास करें। पाठ्यक्रम में निर्धारित उपन्यास आपको पुस्तकालय से सरलता से प्राप्त हो सकते हैं। आपसे अपेक्षा की जाती है कि आप उन उपन्यासों का गंभीरता से अध्ययन करें जिससे उन उपन्यासों से संबद्ध इकाइयों के विषयों को समझने में कठिनाई न हो। हमारा प्रयत्न है कि इस पाठ्यक्रम की सहायता से आप इन विशिष्ट उपन्यासों को भली–भाँति समझ लें और उनका आस्वादन कर सकें।

शुभकामनाओं के साथ!

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

BHDC-109_4th proof.indd 6 8/6/2021 2:08:56 PM

इग्नू
जन–जन का
विश्वविद्यालय

BHDC-109
हिन्दी उपन्यास

खंड

1
हिंदी उपन्यास का स्वरूप–विकास और 'निर्मला'

इकाई 1
हिंदी उपन्यास : स्वरूप और विकास 9

इकाई 2
प्रेमचंद का परिचय और उनके उपन्यास 30

इकाई 3
'निर्मला' : कथावस्तु 43

इकाई 4
'निर्मला' : चरित्र चित्रण 64

इकाई 5
'निर्मला' : परिवेश और संरचना–शिल्प 89

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

खंड 1 का परिचय

हिंदी उपन्यास पाठ्यक्रम के अंतर्गत आप प्रथम खंड का अध्ययन करने जा रहे हैं। यह खंड प्रेमचंद के विशिष्ट उपन्यास 'निर्मला' पर आधारित है। इस खंड में कुल पाँच इकाइयाँ हैं–

इकाई 1 हिंदी उपन्यास : स्वरूप और विकास

इकाई 2 प्रेमचंद का परिचय और उपन्यास साहित्य

इकाई 3 'निर्मला' : कथावस्तु

इकाई 4 'निर्मला' : चरित्र चित्रण

इकाई 5 'निर्मला' : परिवेश और संरचना–शिल्प

इनमें से पहली इकाई 'उपन्यास के स्वरूप और विकास' से संबंधित है। खंड की पहली इकाई में आप उपन्यास विधा का सामान्य ज्ञान प्राप्त करेंगे। साथ ही साथ इस इकाई के अध्ययन से आप यह भी जान पाएँगे कि हिंदी भाषा में इस विधा का प्रारंभ एवं विकास–विस्तार किस प्रकार हुआ। आप इसके माध्यम से यह भी जान सकेंगे कि हिंदी के आरंभिक उपन्यासकार कौन–कौन थे तथा किन रचनाओं से हिंदी उपन्यास का स्तर विश्व की अन्य भाषाओं में उच्चकोटि के उपन्यासों के समकक्ष पहुँच सका। दूसरी इकाई में आप 'प्रेमचंद और उनके उपन्यासों' की जानकारी प्राप्त करेंगे। इस इकाई में प्रेमचंद का जीवन परिचय दिया गया है तथा उनके उपन्यास साहित्य से परिचित कराया गया है। इसी इकाई में प्रेमचंद की रचनात्मक विशेषताओं पर भी विचार किया गया है। इकाई तीन में 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु तथा उसकी विशेषताओं पर विचार किया गया है। किसी रचना के पीछे कोई न कोई संदेश छिपा रहता है, लेकिन अपनी रचना का शीर्षक लेखक किस आधार पर निर्धारित करता है, उसे भी बताया जाएगा। इकाई चार में हम आपको 'निर्मला' उपन्यास के महत्वपूर्ण तत्व चरित्र चित्रण के बारे में बताएँगे और 'निर्मला' उपन्यास के विशिष्ट चरित्रों की विशेषताओं पर चर्चा करेंगे। इकाई पाँच, उपन्यास के 'संरचना–शिल्प' से संबंधित है। इस इकाई में प्रथमतः निर्मला उपन्यास के परिवेश को विश्लेषित किया गया है। इसके बाद आपको उपन्यास की शैली, भाषा एवं संवाद के बारे में विस्तृत जानकारी दी गई है।

अगर आप इस खंड की इकाइयों को ध्यान से पढ़ेंगे तो आप उपन्यास विधा का सही विश्लेषण प्रस्तुत कर पाएँगे। 'निर्मला' उपन्यास का अध्ययन आप पुस्तकालय से लेकर अवश्य करें तभी इकाइयों में विश्लेषित विषयों को आप आसानी से समझ पाएँगे। परिशिष्ट के अंतर्गत 'निर्मला' उपन्यास के विशिष्ट गद्यांश दिए गए हैं, उनकी व्याख्या करने का स्वयं प्रयास करें।

खंड के अंत में अध्ययन के लिए कुछ पुस्तकों के नाम दिए जा रहे हैं आप उनका भी अध्ययन करें।

शुभकामनाओं सहित!

BHDC-109_4th proof.indd 8 8/6/2021 2:08:56 PM

इकाई 1 हिंदी उपन्यास : स्वरूप और विकास

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य

1.1 प्रस्तावना

1.2 उपन्यास का रचनागत वैशिष्ट्य

- 1.2.1 कथावस्तु
- 1.2.2 चरित्र-चित्रण
- 1.2.3 परिवेश
- 1.2.4 संरचना शिल्प
- 1.2.5 प्रतिपाद्य

1.3 उपन्यास के भेद

- 1.3.1 कथावस्तु के आधार पर
- 1.3.2 चरित्र-चित्रण के आधार पर
- 1.3.3 परिवेश के आधार पर
- 1.3.4 शैली के आधार पर
- 1.3.5 प्रतिपाद्य के आधार पर

1.4 हिंदी उपन्यास का विकास

- 1.4.1 प्रेमचंद-पूर्व हिंदी उपन्यास
- 1.4.2 प्रेमचंद-युगीन हिंदी उपन्यास
- 1.4.3 प्रेमचंदोत्तर युग के हिंदी उपन्यास

1.5 सारांश

1.6 शब्दावली

1.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1.0 उद्देश्य

इस इकाई में हम आपको उपन्यास के स्वरूप और हिंदी उपन्यास के विकास के बारे में बताएंगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उपन्यास के स्वरूप को बता सकेंगे;
- उपन्यास और कहानी में अंतर कर सकेंगे;
- उपन्यास के रचनागत वैशिष्ट्य को बता सकेंगे;
- हिंदी उपन्यास के विकास को पहचान सकेंगे; और
- हिंदी उपन्यास के विकास के विभिन्न चरणों में इस विधा में क्या–क्या परिवर्तन हुए तथा कौन–कौन से लेखकों ने इस विधा के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया, इस इतिहास को प्रस्तुत कर सकेंगे।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

1.1 प्रस्तावना

उपन्यास का अध्ययन करने से पूर्व आप यह जानना चाहेंगे कि उपन्यास क्या है, इसमें कौन-कौन से तत्व हैं, इन तत्वों की क्या-क्या विशेषताएँ होती हैं, तथा उपन्यास कितने प्रकार के होते हैं? इस इकाई में हम इन सभी बातों की जानकारी प्राप्त करेंगे। साथ ही, आपके लिए यह जानना भी आवश्यक होगा कि हिंदी उपन्यास का विकास कैसे हुआ और किन-किन उपन्यासकारों ने इस विधा के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान किया है। हिंदी उपन्यास का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। इस विधा का आरंभ शताब्दी के प्रथम दशक में हुआ। यों भारतेन्दु युग से पूर्व श्रद्धाराम फुल्लौरी ने 'भाग्यवती' (1877) नामक उपन्यास की रचना की लेकिन भारतेन्दु युग से ही इस विधा का विकास प्रारंभ हुआ। पं. रामचंद्र शुक्ल ने लाला श्रीनिवास दास के 'परीक्षा गुरु' (1882) उपन्यास को ''पहला अंग्रेजी ढंग का नावेल'' कहा था। हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रथमतः तिलिस्मी, जासूसी, ऐय्यारी उपन्यासों की धूम रही। मुंशी प्रेमचंद के आगमन से इस विधा को नया आयाम मिला। हम इस खंड में जिस उपन्यास को पढ़ेंगे वह तिलिस्मी, जासूसी आदि उपन्यासों से नितान्त भिन्न प्रकार का है। इस इकाई में हम देखेंगे कि किस प्रकार उपन्यास विधा में नए-नए प्रयोग होते गए। इकाई में हम उपन्यास के तत्वों का अध्ययन करेंगे जिससे उपन्यास को समझने में सहायता मिलेगी।

1.2 उपन्यास का रचनागत वैशिष्ट्य

हम उपन्यास का अध्ययन करने जा रहे हैं। वास्तव में उपन्यास शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। उप+न्यास। ''उप'' उपसर्ग का अर्थ होता है–सामने या समीप और ''न्यास'' शब्द का अर्थ होता है धरोहर और रखना। इस आधार पर उपन्यास शब्द का अर्थ इस प्रकार किया जा सकता है कि एक लेखक अपने जीवन और समाज के आस-पास जो कुछ देखता-सुनता और अनुभव करता है उसे अपने भाव-विचार से कल्पना के द्वारा सजा-सँवार कर हमारे सामने प्रस्तुत करता है। चूँकि उपन्यास में वर्णित घटना को लेखक समाज से ही ग्रहण करता है और कल्पना के द्वारा सुन्दर ढंग से हमारे सामने प्रस्तुत करता है इसलिए वह हमें रुचिकर लगता है। यानी वह साहित्यिक रचना जिसे पढ़कर लगे कि उसमें वर्णित घटना हमारे निकट की नहीं बल्कि हमारी ही है, उपन्यास कहते हैं। उपन्यास आधुनिक जीवन के यथार्थ को बहुत निकटता से पहचानने और उपस्थित करने वाली विधा है। उपन्यास को परिभाषा में बाँधना आसान नहीं है। फिर भी, उसकी परिभाषा करते हुए यह कहा जा सकता है कि उपन्यास वह आधुनिक गद्य विधा है जो यथार्थ को बहुत सहजता से उभारती है। उपन्यास की कथा काल्पनिक होती है लेकिन वह जीवन के यथार्थ की ही कथा होती है। उसके पात्र जीवंत और यथार्थ होते हैं, घटनाएँ हमारे जीवन के बीच की होती हैं और उनमें एक तार्किक संगति होती है अर्थात् किसी घटना के घटित होने के कारण एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। उपन्यास के बारे में प्रेमचंद ने कहा है–''मैं उपन्यास को मानव-जीवन का चित्र मात्र समझता हूँ। मानव-जीवन पर प्रकाश डालना और उसके रहस्यों को खोजना ही उपन्यास के मूल तत्त्व हैं।''

आपमें से बहुतों ने कोई न कोई उपन्यास अवश्य पढ़ा होगा। पहले के उपन्यासों में चमत्कार से भरपूर अजीबोग़रीब घटनाओं का जमघट रहता था। नायक के हैरतअंगेज करतबों से पाठक को आनंद मिलता था। जासूसी, ऐय्यारी आदि उपन्यास ही सबसे पहले काफी लोकप्रिय हुए। इस खंड में हम इनसे भिन्न प्रकार के उपन्यास का अध्ययन करेंगे। पहले के उपन्यासों में घटना प्रधान होती थी। अपने उद्देश्य की पूर्ति लेखक घटना के माध्यम से ही करता था। घटनाओं को अपनी इच्छा के अनुरूप ढालने से

BHDC-109_4th proof.indd 10 8/6/2021 2:08:56 PM

उसमें वास्तविकता नहीं रह जाती थी। आज का उपन्यासकार इस प्रकार के वर्णन को महत्त्व नहीं देता। वह उपन्यास में वास्तविकता लाने का प्रयास करता है। इसके लिए वह पात्रों का चरित्र-चित्रण इस रूप में करता है कि वे काल्पनिक न लगें। पात्रों में सजीवता लाने का वह भरसक प्रयत्न करता है। वह यह भी ध्यान में रखता है कि पात्रों द्वारा किए जाने वाले कार्य असंभव प्रतीत न हों। इन्हीं सब बातों को दृष्टि में रखकर आज का उपन्यासकार जीवन के यथार्थ को अपनी रचना में उतारने का प्रयत्न करता है। जब इन बातों को दृष्टि में रखकर हम आज के उपन्यासों की पहले के उपन्यास से तुलना करते हैं तो एक स्पष्ट बदलाव नज़र आता है।

आधुनिक युग में वैज्ञानिक उन्नति के कारण जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में तेज़ी से विकास और परिवर्तन आया है। मुद्रण और परिवहन के विकास से पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन में क्रांतिकारी परिवर्तन शुरू हुआ। गद्य की विविध विधाओं पर इस परिवर्तन का व्यापक प्रभाव पड़ा। उपन्यास विधा का विकास साहित्य में केंद्रीय विधा के रूप में हुआ। बड़े-बड़े उपन्यास लिखे जाने लगे। प्रारंभ में भिन्न-भिन्न भाषाओं से हिंदी में अनुवाद द्वारा भी इस विधा का विकास हुआ। पत्र-पत्रिकाओं के विकास से जहाँ कहानी जैसी स्वतंत्र विधा का विकास हुआ वहाँ उपन्यास के रूप में भी परिवर्तन शुरू हुआ।

उपन्यास का जन्म पश्चिम में हुआ। पश्चिम के उपन्यासकारों ने उपन्यास विधा को नया रूप प्रदान किया। उपन्यास विधा लोकप्रियता प्राप्त करती गई साथ ही साथ समयानुसार इसमें परिवर्तन भी आता गया। उपन्यास की रचना-प्रक्रिया पर विचार करते हुए सोचा गया कि उपन्यास क्या है? मानव जीवन से इसका क्या संबंध है? और इसे किस उद्देश्य से लिखा जाता है? उपन्यास विधा अन्य विधाओं से किस प्रकार भिन्न है? क्या उपन्यास और कहानी एक ही विधा है? आइए, इन प्रश्नों का उत्तर खोजने का प्रयत्न करें।

सर्वप्रथम हम देखें कि उपन्यास और कहानी में क्या अंतर है। जैसा कि हमने पहले भी कहा है कि आपमें से बहुत से लोगों ने उपन्यास और कहानी दोनों का अध्ययन किया होगा। यदि आप किसी उपन्यास की तुलना किसी लंबी से लंबी कहानी से करें तो आप पाएँगे कि उपन्यास की तुलना में कहानी का आकार काफी छोटा होता है। दोनों विधाओं में क्या यह अंतर अनायास आता है? नहीं, ऐसी बात नहीं है। यह अंतर मूलभूत बातों के कारण आता है। उपन्यास और कहानी में सबसे बड़ा अंतर यह है कि उपन्यास में जहाँ जीवन का व्यापक चित्रण किया जा सकता है वहाँ कहानी में जीवन के व्यापक चित्रण की गुंजाइश नहीं रहती। उपन्यासकार जहाँ संपूर्ण जीवन को आधार बनाता है वहीं कहानीकार जीवन के किसी एक खंड को, घटना या एक अनुभव को ही इस कथा का आधार बनाता है। इस मूलभूत अंतर के कारण ही दोनों विधाओं के तत्त्वों में अंतर भी अपने आप आ जाते हैं। जब रचनाकार किसी पात्र के संपूर्ण जीवन का चित्रण करता है तो स्वतः ही घटनाओं की संख्या भी बढ़ जाएगी, पात्रों की संख्या भी बढ़ जाएगी और विस्तार से पात्रों के संपूर्ण जीवन का चित्रण करना पड़ेगा। यदि रचनाकार जीवन की एक घटना या छोटे खंड का चित्रण करेगा तो घटना, पात्र और अन्य ब्योरे भी सीमित हो जाएँगे। उसे अपने विचारों को सांकेतिक रूप से प्रस्तुत करना पड़ेगा। इस प्रकार इन दोनों विधाओं में मूलभूत अंतर जीवन के व्यापक चित्रण और जीवन के किसी एक खंड का चित्रण करने के कारण आ जाता है।

आइए, हम दो उदाहरणों द्वारा इस अंतर को समझने का प्रयत्न करें। इस खंड की आगे की इकाइयों में हम 'निर्मला' उपन्यास पढ़ेंगे। हो सकता है आपमें से कुछ लोगों ने इसे पढ़ा भी हो। आपने प्रेमचंद की कहानी 'पूस की रात' का भी अध्ययन किया होगा, इस कहानी का आकार 'निर्मला' उपन्यास से काफी छोटा है। यह अंतर किसलिए है?

BHDC-109_4th proof.indd 11 8/6/2021 2:08:57 PM

'पूस की रात' में एक घटना का वर्णन है–हल्कू किसान पर कुछ कर्जा है। वह उसे चुका पाने में असमर्थ है। उसने मेहनत करके फसल उगायी है, फसल तैयार हो चुकी है। उसे यह आशा है कि फसल कटने पर उसे बेचकर वह महाजन के कर्ज को चुका देगा। लेकिन कर्जा चुकाने में सारा धन निकल जाएगा और उसे फिर मजदूरी करके पेट पालना पड़ेगा। इसी विचार को लिये हुए वह कड़ाके की ठंड में अपनी खेती की रक्षा करने जाता है। लेकिन जानवर उसके खेत चर जाते हैं। ठंड के कारण विवशता से वह खेत की रखवाली नहीं कर पाता। इस कहानी में पूस की रात की इस घटना को ही मुख्य आधार बनाया गया है। हल्कू मुख्य चरित्र है। इसके विपरीत 'निर्मला' उपन्यास (जो कि प्रेमचंद के अन्य उपन्यासों से आकार में काफी छोटा है) में निर्मला के संपूर्ण जीवन को कथा का आधार बनाया गया है। कथा का आंरभ निर्मला के परिचय से होता है, फिर विवाह की बात चलती है। विवाह तय हो जाता है। पिता की आकस्मिक मृत्यु के कारण विवाह स्थगित हो जाता है। धनाभाव के कारण माता दहेज देने की स्थिति में नहीं है। सगाई टूट जाती है। पंडित के प्रयत्न से एक अधेड़, विधुर व्यक्ति तोताराम के साथ निर्मला का विवाह हो जाता है। तोताराम के तीन बेटे हैं और बड़ा बेटा उम्र में निर्मला के बराबर का है। निर्मला के जीवन की करुण कहानी ही उपन्यास का कथात्मक कलेवर है। अनमेल विवाह के कारण मानसिक यंत्रणा, पति की शंका के कारण बड़े बेटे की मृत्यु, दूसरे बेटे द्वारा आत्महत्या, तीसरे बेटे का घर से भाग जाना, बेटी का जन्म, पति का गृह त्याग, अत्यधिक गरीबी आदि। इन सारी विपत्तियों से जूझती हुई निर्मला की मृत्यु के साथ उपन्यास समाप्त होता है। इस प्रकार मुख्य पात्र निर्मला के कमोबेश संपूर्ण जीवन को लेखक ने उपन्यास में ढाला है। अन्य पात्र भी कम महत्त्वपूर्ण नहीं हैं। निर्मला के चरित्र को करुण बनाने के लिए अन्य पात्रों की रचना की गई है। मुख्य कथानक के साथ प्रासंगिक कथाओं की रचना की गई है। ये प्रासंगिक कथाएँ मुख्य कथा को सशक्त बनाती हैं। कहानी का परिवेश अत्यधिक लंबा है। कई वर्षों के लंबे काल खंड में उपन्यास फैला हुआ है। इसके विपरीत 'पूस की रात' मात्र एक रात की कहानी है।

उपर्युक्त उदाहरणों से यह स्पष्ट है कि केवल आकार की दृष्टि से ही नहीं, बल्कि संरचनागत दृष्टि से भी उपन्यास और कहानी में अंतर होता है, उपन्यास में संपूर्ण जीवन का परिचय दिया जाता है। जबकि कहानी में जीवन के किसी एक अंश का। उपन्यास या कहानी के लिए सबसे आवश्यक बात है, उसमें कथा का होना। अगर किसी रचना में कथा ही नहीं होगी तो उसे कहानी या उपन्यास नहीं कह सकते। उपन्यास पर विचार करने पर हम पाएँगे कि उनमें निम्नलिखित बातें होती हैं :

1. उसमें किसी घटना का वर्णन रहता है।
2. घटना किसी पात्र या पात्रों से संबंधित होती है।
3. घटना का संबंध किसी स्थान और समय से होता है।
4. घटना के वर्णित पात्र आपस में वार्तालाप करते हैं।
5. प्रत्येक लेखक घटना को अपने ढंग से प्रस्तुत करता है।
6. रचना करने के पीछे लेखक के सामने कोई न कोई कारण होता है।

किसी भी उपन्यास में इन छह बातों का होना आवश्यक है। यह और बात है कि किसी उपन्यास में इनमें से दो-एक बातें अधिक महत्त्वपूर्ण ढंग से व्यक्त हुई हों। इन्हें ही हम उपन्यास के तत्त्व के नाम से जानते हैं। शास्त्रीय भाषा में इसे निम्नलिखित रूप में व्यक्त करेंगे :

BHDC-109_4th proof.indd 12 8/6/2021 2:08:57 PM

1. कथावस्तु
2. पात्र या चरित्र-चित्रण
3. देशकाल या परिवेश
4. संवाद और भाषा
5. शैली
6. उद्देश्य

उपन्यास के इन्हीं तत्त्वों के आधार पर हम इस विधा की चर्चा करेंगे। इन तत्त्वों को हम कुछ अलग ढंग से बताएँगे। संवाद, भाषा और शैली को हमने 'संरचना–शिल्प' का नाम दिया है। इसी प्रकार उद्देश्य के लिए हमने 'प्रतिपाद्य' शब्द का प्रयोग किया है। इस प्रकार हम उपन्यास के विभिन्न तत्वों को निम्नलिखित रूपों में प्रस्तुत कर सकते हैं :

1. कथावस्तु
2. पात्र या चरित्र-चित्रण
3. परिवेश
4. संरचना–शिल्प और
5. प्रतिपाद्य

आइए, अब हम उपन्यास के इन तत्वों का अलग-अलग विवेचन करें।

बोध प्रश्न

1. आरंभिक उपन्यासों की विशेषताएँ नीचे बताई गई हैं उनमें से कौन-सी विशेषताएँ सही नहीं है।
   - i) आरंभिक उपन्यासों में मानसिक द्वंद्व का चित्रण होता था। ( )
   - ii) आरंभिक उपन्यास चमत्कारी घटनाओं से भरे होते थे। ( )
   - iii) कल्पना और अवास्तविकता का समावेश रहता था। ( )
   - iv) जीवन का यथार्थवादी चित्रण होता था ( )
2. तीन पंक्तियों में कथावस्तु, चरित्र-चित्रण और परिवेश के आधार पर उपन्यास और कहानी में अंतर बताइए।

   .....

   .....

   .....
3. नीचे कुछ वाक्य दिए जा रहे हैं। आप इनके द्वारा उपन्यास के तत्वों का निर्धारण कीजिए।
   - i) उपन्यास में पात्रों से संबंधित घटना का वर्णन होता है। ( )
   - ii) उपन्यास में वर्णित पात्र आपस में बातचीत करते हैं। ( )
   - iii) उपन्यास में वर्णित घटना का संबंध किसी स्थान और काल से रहता है। ( )
   - iv) उपन्यासकार अपने ढंग से कथा को प्रस्तुत करता है। ( )
   - v) कथा को कहने के पीछे कोई न कोई कारण होता है। ( )

BHDC-109_4th proof.indd 13 8/6/2021 2:08:57 PM

अभ्यास

1. चार पंक्तियों में आरंभिक और आज के उपन्यास की विशेषताओं की तुलना प्रस्तुत कीजिए।

.....

.....

.....

.....

1.2.1 कथावस्तु

उपन्यास में जिस घटना का वर्णन किया जाता है, उसे कथावस्तु कहते हैं। इस विधा में घटना का विस्तार से वर्णन रहता है। स्थूल घटना के विस्तार के लिए इसमें पर्याप्त अवसर रहता है अर्थात् रचनाकार सीमा के अंदर बँधा नहीं रहता।

उपन्यास में कथावस्तु ठोस और शृंखलाबद्ध होनी चाहिए अन्यथा कथा में अस्वाभाविकता आ जाती है। शृंखलाबद्ध का तात्पर्य है एक प्रसंग का दूसरे प्रसंग से संबंध, मूल भाव, या प्रसंग को विस्तार से वर्णन करने का अवसर उपन्यास में रहता है। अतः रचनाकार बड़े कौशल के साथ इसका वर्णन कर सकता है। विस्तार करते समय यह भी ध्यान में रखना आवश्यक होता है कि कहीं कोई प्रसंग अप्रासंगिक तो नहीं हुआ जा रहा है। उपन्यास की कथा चरित्र को विकसित करने वाली और स्पष्ट होनी चाहिए। काल्पनिक और अविश्वसनीय लगने वाली घटना का चित्रण उपन्यास में नहीं होना चाहिए। इससे उपन्यास में, अस्वाभाविकता आ जाती है। आधुनिक उपन्यास में सामाजिक समस्या को ही कथावस्तु के रूप में स्थान दिया गया। पहले के उपन्यास में कथा के आरंभ से अंत तक एक शृंखला होती थी अर्थात् प्रथम कथावस्तु का आंरभ मध्य और अंत होता था। लेकिन आज ऐसा नहीं है। आज कथा का आरंभ किसी भी घटना या वर्णन आदि से हो सकता है, अर्थात् कथा के अनुसार कहीं से भी कहानी शुरू हो सकती है। पात्रों के वार्तालाप से, किसी पात्र के अंतर्द्वंद्व से कथा की शुरूआत हो सकती है। आज के उपन्यास में यह आवश्यक नहीं कि उसमें कोई निश्चित अंत हो अर्थात् कथा की समाप्ति बीच में भी हो सकती है।

1.2.2 चरित्र-चित्रण

आपने पढ़ा है कि कहानी में पात्रों की संख्या सीमित होती है लेकिन उपन्यास में ऐसा नहीं होता। पात्रों की संख्या इसमें अधिक तो होती ही है साथ ही एक से अधिक पात्र महत्त्वपूर्ण हो सकते हैं।

वैसे चरित्र-प्रधान उपन्यास में एक पात्र को केंद्र में रखकर कथा का विकास किया जाता है। आगे हम 'निर्मला' उपन्यास को पढ़ेंगे इसमें 'निर्मला' ही मुख्य पात्र है। यह उपन्यास उसके संपूर्ण जीवन पर आधारित है। सारी घटनाएँ उसीके इर्द-गिर्द घूमती हैं।

उपन्यास में चरित्र के विकास के लिए पर्याप्त अवकाश रहता है अर्थात् पात्र के चरित्र की छोटी-से-छोटी विशेषताओं को भी बताया जा सकता है। जिस उपन्यास में मानव के मनोभावों के संघर्ष को लेखक विषयवस्तु के रूप में चुनता है उसमें चरित्र के विकास का पर्याप्त अवकाश रहता है। आज के उपन्यास में कल्पित और अविश्वसनीय लगने वाले चरित्रों की सृष्टि नहीं की जाती। ऐसे पात्रों का चुनाव किया जाता है जो स्वाभाविक लगें। यानी कि पाठक को लगे कि पात्र उसके आस-पास के जीवन का ही है। आप जब हिंदी के अच्छे उपन्यासों का अध्ययन करेंगे तो पाएँगे कि किसी-किसी उपन्यास में पात्र किसी वर्ग के प्रतिनिधि के रूप में प्रस्तुत किए गए हैं। जैसे प्रेमचंद के

BHDC-109_4th proof.indd 14 8/6/2021 2:08:57 PM

पात्र वर्ग-विशेष का प्रतिनिधित्व करते हैं। उदाहरण के रूप में 'गोदान' का पात्र होरी भारतीय किसान वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है। जैनेंद्र के उपन्यासों में पात्रों के अंतर्द्वन्द्व को विशेष स्थान दिया गया है। जिस उपन्यास में मानव के सूक्ष्म मनोभाव को चित्रित किया जाता है उसके पात्र वास्तविक लगते हैं।

यदि उपन्यासकार अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए पात्रों को मनचाहा रूप प्रदान करता है तो वह स्वयं की संतुष्टि तक सीमित रह जाता है। उस रचना को पढ़कर पाठक वर्ग प्रभावित नहीं हो सकता ।

उपन्यासकार चरित्र-चित्रण के लिए कई प्रकार की विधियाँ अपनाता है। सबसे पहले तो वह पात्र द्वारा किए जाने वाले कार्यों द्वारा उसका चरित्र उजागर करता है। पात्र के मन में जो विचार उठते हैं, जो भावनाएँ उभरती हैं, उनसे भी उसका चरित्र स्पष्ट होता है। एक पात्र दूसरे पात्र के बारे में जो कुछ कहता है वह भी पात्र के चरित्र-चित्रण में सहायक होता है। कभी-कभी लेखक स्वयं भी पात्रों के चरित्र को उज़ागर करता है। उदाहरण के लिए जब आप आगे की इकाइयों में 'निर्मला' उपन्यास का वाचन करेंगे तो पाएँगे कि परिच्छेद तीन में लेखक अपनी ओर से उपन्यास के एक पात्र बाबू भालचंद्र के बारे में लिखता है। ''बाबू भालचंद्र दीवानखाने के सामने आराम कुर्सी पर नंगधड़ंग लेटे हुए हुक्का पी रहे थे। बहुत ही स्थूल ऊँचे कद के आदमी थे।'' इस प्रकार पाठ्यक्रम के अन्य उपन्यासों के अध्ययन की प्रक्रिया में आप देखेंगे कि लेखक ने स्वयं भी पात्रों के बारे में बहुत सारी बातें कहीं हैं। इस प्रकार कई विधियों से पात्रों का चरित्र-चित्रण किया जाता है।

1.2.3 परिवेश

परिवेश का अर्थ है, देशकाल अर्थात् उपन्यास में वर्णित घटनाओं का संबंध किस काल, देश और किस स्थान से है। इन्हीं सब बातों की जानकारी परिवेश के अंतर्गत दी जाती है। लेखक को उस काल, स्थान की जानकारी होनी चाहिए जिस काल और स्थान को वह अपनी रचना में लेता है। यदि लेखक बिना जानकारी के परिवेश का वर्णन करता है तो उससे रचना में अस्वाभाविकता का समावेश हो जाएगा और कथा में बनावटीपन झलकेगा। यथार्थ से दूर होने पर पाठक को उसमें अरुचि भी हो सकती है। यदि लेखक ने ग्रामीण जीवन को रचना का आधार बनाया है तो उसे ग्रामीण जीवन के परिवेश का यथार्थ ज्ञान होना चाहिए। जब तक वह स्वयं उस परिवेश का सूक्ष्मता से अध्ययन नहीं कर लेता और उसकी जानकारी प्राप्त नहीं कर लेता तब तक यथार्थ चित्रण नहीं कर सकता। रचना में कृत्रिमता आ जाएगी। गाँव के घर, गलियाँ, चौपाल, खेत-खलिहान, लोगों के रहन-सहन, खान-पान, पहनावा, रीति-रिवाज, अनुष्ठान, पशुधन आदि की पूर्ण जानकारी के बाद ही लेखक ग्रामीण जीवन को सच्चे अर्थों में अपनी रचना के माध्यम से प्रस्तुत कर सकता है। इसी प्रकार लेखक यदि शहर के जीवन को कथानक का आधार बनाता है तो उसे उन सारी बातों की जानकारी आवश्यक हो जाएगी जिनसे शहरी जीवन जुड़ा हुआ है।

कथानक का संबंध किसी काल और समय-विशेष से जुड़ा होता है। लेखक को काल की सही जानकारी होनी चाहिए। उदाहरण के लिए, उपन्यास की कथा किसी काल-विशेष से जुड़ी है तो उस काल की विशेषताओं की जानकारी आवश्यक है। जैसे लेखक यदि गुप्तकाल या मुग़लकाल से जुड़ा हुआ कथानक लेता है तो इन कालों की जानकारी होनी चाहिए और उसी के अनुरूप परिवेश का चित्रण करना जरूरी है। यदि गुप्तकाल में आधुनिक काल की विशेषताओं को रखा जाएगा तो इससे कथा में अस्वाभाविकता तथा बनावटीपन नज़र आएगा। यथार्थ से अलग होने पर पाठक के मन पर प्रभाव नहीं पड़ेगा। कथानक का परिवेश जितना स्वाभाविक और यथार्थपरक होगा, उपन्यास उतना ही विश्वसनीय और यथार्थ नजर आएगा।

BHDC-109_4th proof.indd 15 8/6/2021 2:08:58 PM

उपन्यास में परिवेश का चित्रण विस्तार से किया जा सकता है। उपन्यासकार लंबे-चौड़े विवरण द्वारा परिवेश को समझा सकता है, लेकिन विस्तार देते समय यह ध्यान देना भी जरूरी है कि आवश्यकता से अधिक विस्तार न हो जाए। परिवेश का चित्रण ऐसा हो जिससे उपन्यास में वर्णित कार्य-व्यापार स्वाभाविक लगे, पात्र सजीव लगें और कहानी के विकास में मदद मिले।

परिवेश के स्वाभाविक चित्रण के लिए यह जरूरी है कि लेखक को वर्णित कथा से संबद्ध देशकाल की सही जानकारी हो अर्थात् तत्कालीन समय के लोगों का रहन-सहन कैसा था, किस तरह की सामाजिक व्यवस्था थी, उस समय के मत-मतान्तर क्या थे, सभ्यता ने कितनी प्रगति कर ली थी, मानव मूल्यों की स्थापना किस स्तर तक हो चुकी थी, इन सब बातों की जानकारी आवश्यक है। रचनाकार अगर इस प्रकार की जानकारी नहीं रखता है तो वह स्वाभाविक चित्रण करने में खरा नहीं उतर पाएगा।

1.2.4 संरचना-शिल्प

संरचना–शिल्प से हमारा तात्पर्य है कि उपन्यास की शैली किस प्रकार की है, उपन्यास की भाषा किस प्रकार की है और उपन्यास में संवाद किस प्रकार के हैं। आपने कुछ उपन्यासों का अध्ययन किया होगा। एक दो उपन्यास पढ़ने के बाद आपने अनुभव किया होगा कि इनमें कुछ अंतर है। आइए, देखें कि यह अंतर किस प्रकार हो जाता है। वास्तव में प्रत्येक उपन्यासकार चाहे वह किसी विषय वस्तु पर उपन्यास लिख रहा हो अपनी एक विशेष रीति अपनाता है। इस प्रकार प्रत्येक उपन्यासकार का उपन्यास लिखने का एक ढंग होता है। अपने तरीके से वह कथावस्तु प्रस्तुत करता है। रचना में भाषा का प्रयोग–संवाद की योजना आदि करने का एक अलग तरीका अपनाता है।

शैली : शैली का तात्पर्य है, रचना करने का ढंग। लेखक की व्यक्तिगत रुचि और विषयवस्तु के कारण ही शैली में परिवर्तन होता है। अपनी रुचि के अनुसार लेखक जिस तरीके से कथावस्तु को प्रस्तुत करता है उससे शैली में परिवर्तन आता है। व्यक्तिगत रुचि के अनुसार कुछ लेखक मनुष्य जीवन के बाह्य पक्ष पर बल देते हैं, तो कुछ मनुष्य के मनोभावों पर बल देते हैं। उदाहरण के लिए आप प्रेमचंद के उपन्यासों को लें तो आप देखेंगे कि जीवन के बाह्य पक्ष पर बल दिया गया है। समाज का यथार्थ चित्रण करते समय वे यद्यपि कभी-कभी पात्रों की मनोदशा का भी सुंदर चित्रण करते हैं लेकिन जीवन में घट रही घटनाएँ ही उनकी कथावस्तु का मुख्य आधार हैं। हिंदी के एक और उपन्यासकार जैनेंद्र कुमार की रचनाओं को जब आप पढ़ेंगे तो पाएँगे कि इसमें बाह्य घटनाओं का वर्णन कम है जबकि मानव-मन अर्थात् पात्रों के मन में उठने वाले भावों को विस्तार से प्रस्तुत किया गया है। इस प्रकार लेखक की व्यक्तिगत रुचि द्वारा उपन्यास की शैली में भिन्नता आती है। प्रेमचंद ने जो शैली अपनाई उसे वर्णनात्मक शैली तथा जैनेंद्र कुमार ने जो शैली अपनाई उसे अंतर्द्वंद्वात्मक या मनोवैज्ञानिक शैली कहते हैं।

संवाद : संवाद का अर्थ तो आप जान ही गए हैं। उपन्यास में वर्णित पात्र आपस में वार्तालाप करते हैं जिनसे कथावस्तु आगे बढ़ती है ऐसे वार्तालाप को ही संवाद कहा जाता है। संवादों से जहाँ कथा आगे बढ़ती है वहीं पात्रों के चरित्र की विशेषताओं का अनुमान भी लगता है। संवाद द्वारा उपन्यास में *नाटकीयता* आती है। चरित्र उद्घाटन के लिए पात्रानुकूल संवाद की योजना आवश्यक है। उपन्यासकार यदि पात्रों के अनुकूल संवाद नहीं लिखता है, इससे तो अस्वाभाविकता आ जाती है। यदि उपन्यास का पात्र शिक्षित है, तो उसके अनुकूल ही संवाद होना चाहिए। यदि पात्र ग्राम जीवन से संबंधित है, तो उसके परिवेश के अनुकूल ही संवाद आवश्यक है। उदाहरण के लिए हम यहाँ प्रेमचंद के पात्रों का संवाद दे रहे हैं, जिससे आपको स्पष्ट पता चल जाएगा कि किस प्रकार पात्रानुकूल संवाद होने चाहिए।

BHDC-109_4th proof.indd 16 8/6/2021 2:08:59 PM

ग्रामीण पात्र

पात्र : होरी

होरी ने अपने झुर्रियों से भरे माथे को सिकोड़कर कहा – ''तुझे–रस पानी की पड़ी है, मुझे यह चिन्ता है कि सवेर हो गई तो मालिक से भेंट न होगी।''

शहरी पात्र

पात्र : मिर्जा

मिर्जा ने घिघियाकर कहा –''देवी जी, खुदा के लिए इस मूँजी को रुपये दे दीजिए।''

पात्र : मेहता

मिस्टर मेहता उसी ठंडे मन से बोले–नहीं-नहीं, मैं इसे बुरा नहीं समझता। समाज व्यक्ति से ही बनता है। और व्यक्ति को भूलकर हम किसी व्यवस्था पर विचार नहीं कर सकते।

आपने देखा कि प्रत्येक पात्र की भाषा में अंतर है। होरी की भाषा ग्राम जीवन से संबंधित है, तो मिर्ज़ा की भाषा पर शहरी जीवन का प्रभाव है। मेहता की भाषा एक शिक्षित व्यक्ति की भाषा है।

भाषा : भाषा ही वह माध्यम है जिससे उपन्यासकार रचना में रोचकता लाता है। सहज, पात्रानुकूल भाषा के प्रयोग से पात्र सजीव लगते हैं। कभी-कभी उपन्यासकार को पात्रों को छोड़कर अपनी ओर से कुछ कहना पड़ता है। ऐसे समय में लेखक की भाषा अलग हो जाती है। वहाँ वह विचारक के रूप में भाषा का प्रयोग करता है। उपन्यास के लिए सबसे आवश्यक बात है, भाषा का सरल होना। यदि भाषा जटिल होगी तो पाठक के लिए कठिनाई उत्पन्न होगी। इसलिए जहाँ तक संभव हो सहज बोलचाल की भाषा का प्रयोग करना चाहिए। भाषा की सरलता के लिए आवश्यक है कि प्रचलित शब्दों और छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग किया जाए।

1.2.5 प्रतिपाद्य

प्रतिपाद्य का अर्थ है, उद्देश्य। उपन्यास में क्या कहा गया है और क्यों कहा गया है, उसी को उद्‌देश्य कहते हैं। उपन्यास के प्रतिपाद्य को समझने के लिए सबसे पहले यह आवश्यक है कि हम उपन्यास को ठीक से समझें। उसके बाद उसमें निहित संदेश को पहचानें। उस संदेश का सामाजिक और साहित्यिक मूल्यांकन करने के बाद ही हम जान सकते हैं कि लेखक ने रचना के माध्यम से जो संदेश दिया है वह कितना उचित है और उसका पाठकों पर क्या प्रभाव होगा। कोई भी लेखक बिना उद्‌देश्य के उपन्यास नहीं लिखता। श्रेष्ठ उपन्यासकार अपने उद्‌देश्य की रचना अलग से नहीं करता। रचना का उद्‌देश्य रचना में ही निहित होता है।

बोध प्रश्न

4. नीचे कथावस्तु की विशेषताएँ दी जा रही हैं आप बताइए कि इनमें से कौन-सी विशेषता एक अच्छे उपन्यास का गुण नहीं हैं।

   क) ठोस और सुसंबद्ध कथानक ( )

   ख) जीवन के यथार्थ को आधार बनाकर कथावस्तु की योजना करना ( )

   ग) वास्तविक और अविश्वसनीय घटनाओं का चित्रण ( )

   घ) उपदेशात्मक कथावस्तु ( )

BHDC-109_4th proof.indd 17 8/6/2021 2:08:59 PM

5. चरित्र-चित्रण के लिए रचनाकार कुछ विधियाँ अपनाता है। उनमें से एक है पात्रों द्वारा किए जाने वाले कार्य। आप अन्य तीन महत्त्वपूर्ण विधियाँ बताइए।

.....

.....

.....

6. रचनाकार जब परिवेश का यथार्थ चित्रण करता है तब उपन्यास में निम्नलिखित बातें मिलती हैं। इनमें से एक गलत है।

क) उपन्यास में वर्णित घटनाएँ स्वाभाविक लगती हैं ( )

ख) पात्र सजीव लगते हैं ( )

ग) उपन्यास का नाम स्पष्ट होता है ( )

घ) कथावस्तु के विकास में सहायता मिलती है ( )

7. शैली का निर्धारण कई कारणों से होता है। आप दो कारण बताइए।

.....

.....

अभ्यास

2. उपन्यास के विभिन्न तत्वों का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

.....

.....

1.3 उपन्यास के भेद

आपने देखा कि उपन्यास के कुछ तत्त्व सभी उपन्यासों में मिलते हैं। लेकिन आप यह भी देखेंगे कि सभी उपन्यासों में ये तत्त्व एक-समान नहीं होते। किसी उपन्यास में पात्र महत्त्वपूर्ण होते हैं, तो किसी में घटना महत्त्वपूर्ण हो जाती है। किसी उपन्यास का प्रतिपाद्य केवल मनोरंजन करना होता है, तो किसी का सामाजिक मूल्यों का निर्धारण। किसी उपन्यास में कथावस्तु लिखने का ढंग फंतासी का होता है, तो किसी में सीधे-सीधे वर्णन किया जाता है। तात्पर्य यह है कि प्रत्येक उपन्यास का अलग रूप, तरीका या ढंग और उद्देश्य होता है। इस प्रकार प्रत्येक उपन्यास दूसरे से भिन्न होता है। आइए, भिन्न प्रकार के उपन्यासों के बारे में जानें।

1.3.1 कथावस्तु के आधार पर

प्रत्येक उपन्यास का कथानक अलग-अलग हो सकता है, कोई उपन्यास तत्कालीन यथार्थ से संबंधित हो सकता है, किसी का संबंध पुराण कथा से हो सकता है, किसी का संबंध अतीत से हो सकता है। इसी प्रकार समकालीन यथार्थ से संबंधित उपन्यासों में कोई कथावस्तु सामाजिक और कोई पारिवारिक हो सकती है। इस प्रकार उपन्यासों को कथावस्तु की दृष्टि से निम्नलिखित वर्गों में रखा जा सकता है।

1. ऐतिहासिक
2. परिवारिक
3. सामाजिक
4. पौराणिक

} विषयवस्तु की दृष्टि से

BHDC-109_4th proof.indd 18 8/6/2021 2:08:59 PM

5. घटना प्रधान
6. भाव प्रधान

} वर्णनशैली की दृष्टि से

1. **ऐतिहासिक उपन्यास** : ऐतिहासिक उपन्यासों का संबंध अतीत से होता है। अर्थात् उनकी कथावस्तु अतीत से जुड़ी होती है। ऐसे उपन्यासों में यह आवश्यक नहीं कि लेखक इतिहास-सम्मत सच्ची घटना को ही कथावस्तु का आधार बनाए, बल्कि इसमें वह कल्पना द्वारा कथा की संरचना कर सकता है। लेकिन सबसे प्रमुख बात यह है कि ऐसे उपन्यासों में भी समकालीन जीवन के सत्य का उद्घाटन होता है अर्थात् समकालीन जीवन की समस्याओं को अतीत की घटना के आधार पर प्रस्तुत किया जाता है। उदाहरण के लिए–आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के उपन्यास 'बाणभट्ट की आत्मकथा' में बाणभट्ट के युग की कथा के माध्यम से आज के समाज में व्याप्त जातिप्रथा, धार्मिक विद्वेष, युद्धोन्माद आदि पर करारी चोट की गई है।

2. **पारिवारिक उपन्यास** : जिस उपन्यास में परिवार की समस्या या घटना को कथावस्तु का मुख्य आधार बनाया जाय, उन्हें पारिवारिक उपन्यास कहते हैं। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि परिवार समाज की इकाई है। अर्थात् परिवार समाज का ही एक अंग है अतः परिवार से जुड़े होने के कारण ऐसे उपन्यास को सामाजिक उपन्यास के अंतर्गत भी रख सकते हैं, उदाहरण के लिए प्रेमचंद के 'निर्मला' उपन्यास में अनमेल विवाह के कारण परिवार से उत्पन्न समस्या को दर्शाया गया है।

3. **सामाजिक उपन्यास** : सामाजिक समस्या या घटना को लेकर लिखे जाने वाले उपन्यास सामाजिक उपन्यास कहलाते हैं। उदाहरण के लिए 'सेवासदन' और 'निर्मला' सामाजिक उपन्यास हैं।

4. **पौराणिक उपन्यास** : जिस उपन्यास में कथा का आधार पौराणिक गाथा हो वह पौराणिक उपन्यास कहलाता है। ऐतिहासिक उपन्यास के समान इसमें कथा का आधार तो पुराण से संबंधित होता हैं लेकिन उद्देश्य आधुनिक होता है। उदाहरण–हजारी प्रसाद द्विवेदी का उपन्यास ''अनामदास का पोथा''।

5. **घटना-प्रधान उपन्यास** : जिस उपन्यास में घटना की प्रधानता हो वह घटना प्रधान उपन्यास कहलाता है। ऐसे उपन्यासों में कथा की रोचकता घटना के विकास से जुड़ी रहती है। तेज़ी से बदलती हुई घटनाएँ कथा को रोचक बनाती है। पाठक उपन्यास को इसलिए पढ़ता जाता है कि कथा में एक के बाद एक आने वाली घटनाओं के साथ यह संभावना बनी रहती है कि आगे क्या होगा? जासूसी, ऐय्यारी, तिलिस्मी उपन्यास इसी वर्ग में आते हैं। आप इसी पाठ में हिंदी उपन्यास के विकास के अंतर्गत पढ़ेंगे कि हिंदी के आरंभिक उपन्यास इसी प्रकार के होते थे। इस श्रेणी के अंतर्गत देवकीनंदन खत्री के उपन्यास 'चंद्रकांता' और 'चंद्रकांता संतति' के उल्लेख किए जा सकते हैं।

6. **भाव-प्रधान उपन्यास** : जिन उपन्यासों में भावनात्मक संघर्ष को कथा का आधार बनाया जाता है उसे भाव-प्रधान उपन्यास कहते हैं। ऐसे उपन्यासों में पात्रों के मन में उठने वाले भावों का चित्रण किया जाता है। उदाहरण के लिए जैनेंद्र कुमार के उपन्यास 'सुनीता' को इसी वर्ग में रखा जा सकता है।

1.3.2 चरित्र-चित्रण के आधार पर

जिस उपन्यास में किसी मुख्य चरित्र को केंद्र में रखकर कथा का विकास किया जाता है उसे चरित्र-प्रधान उपन्यास कहते हैं। उदाहरण के लिए इस खंड में जिस उपन्यास

BHDC-109_4th proof.indd 19 8/6/2021 2:08:59 PM

का अध्ययन करेंगे वह चरित्र प्रधान उपन्यास है। निर्मला, उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र है। पूरी कथा उसके जीवन से संबंधित है। अन्य छोटी कथाएँ उसके चरित्र को पुष्ट करने के लिए निर्मित हुई हैं। चरित्र प्रधान उपन्यास में एक केंद्रीय चरित्र के साथ-साथ कई अन्य चरित्र होते हैं और उपन्यासकार पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को चित्रित करने के लिए घटनाओं और प्रसंगों की रचना के साथ-साथ पात्रों के अंतः और बाह्य संघर्षों के चित्रण पर भी बल देता है। अर्थात् पात्रों के मनोभावों को विस्तार से प्रस्तुत करता है। जैनेंद्र, अज्ञेय, इलाचंद्र जोशी के उपन्यास इस कोटि के माने जा सकते हैं।

1.3.3 परिवेश के आधार पर

प्रत्येक उपन्यास का कोई न कोई परिवेश होता है। लेकिन जिस उपन्यास में अन्य तत्त्वों की अपेक्षा परिवेश की प्रधानता होती है उसे परिवेश-प्रधान उपन्यास के अंतर्गत रखा जा सकता है। लेखक जिस परिवेश को अपनाता है उसकी संपूर्ण विशेषता को प्रकट करता है। आंचलिक उपन्यासों को परिवेश प्रधान उपन्यास कहा जा सकता है क्योंकि उनमें अंचल विशेष की स्थानीय विशेषताओं को लेखक विस्तार से चित्रित करता है। उदाहरण के लिए फणीश्वरनाथ रेणु का उपन्यास 'मैला आँचल' को लिया जा सकता है, जिसमें बिहार के पूर्णिया क्षेत्र की आंचलिकता को विस्तार से पेश किया गया है और इसी वजह से इस उपन्यास को आंचलिक उपन्यास की संज्ञा दी गई है। परिवेश के आधार पर लिखे जाने वाले उपन्यासों को महानगरीय, शहरी, कस्बाई और ग्रामीण आदि विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है।

1.3.4 शैली के आधार पर

शैली का अर्थ है रूप–ढंग अर्थात् उपन्यास किस रूप में प्रस्तुत किया गया है। पहले उपन्यास लिखने का एक ही तरीका था अर्थात् कथावस्तु का आरंभ करके उसका विकास करना तथा अंत तक पहुँचा देना, लेकिन आज ऐसा नहीं है। आज उपन्यास लिखने की कई शैलियाँ विकसित हो चुकी हैं। अगर उपन्यास की कथा किसी पात्र के मुख से कहलाई गई है तो उसे आत्मकथात्मक शैली का उपन्यास कह सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप हजारी प्रसाद द्विवेदी के 'बाणभट्ट की आत्मकथा' तथा जैनेंद्र के 'त्याग–पत्र' को देख सकते हैं। अगर उपन्यास की कथा पत्रों के माध्यम से प्रस्तुत की गई है तो उसे पत्र शैली का उपन्यास कहेंगे। उदाहरण के लिए पाण्डेय बेचन शर्मा उग्र लिखित 'चंद हसीनों के खतूत' उपन्यास पत्र शैली में है। अगर उपन्यास डायरी के रूप में लिखा जाए तो वह डायरी शैली का उपन्यास कहलाएगा। उदाहरण के लिए, डॉ. देवराज का उपन्यास 'अजय की डायरी' डायरी शैली में है। जिस उपन्यास में प्रतीकों के द्वारा कथा कही गई है तो उसे प्रतीकात्मक शैली का उपन्यास कहेंगे। उदाहरण के लिए लक्ष्मीकांत वर्मा का 'खाली कुर्सी की आत्मा' प्रतीकात्मक उपन्यास है। अगर उपन्यास स्वप्न चित्रों की तरह लिखा गया हो तो उसे फंतासी शैली का उपन्यास कहेंगे। जिस उपन्यास की कथा लोककथा पर आधारित हो उसे लोक कथात्मक शैली का उपन्यास कहेंगे। कई उपन्यासों में एक से अधिक शैली का मिश्रण भी हो सकता है।

1.3.5 प्रतिपाद्य के आधार पर

इस वर्ग के उपन्यास को हम दो आधारों पर बाँट सकते हैं। एक रचनाकार के दृष्टिकोण के आधार पर और दूसरा रचना में निहित उद्देश्य के आधार पर। रचनाकार की दृष्टि या तो आदर्शवादी होती है या यथार्थवादी। जब रचनाकार किसी आदर्श को रखकर उपन्यास की रचना करता है तो उसे हम आदर्शवादी उपन्यास कहते हैं। प्रेमचंद के आरंभिक उपन्यास इसी वर्ग में रखे जा सकते हैं। जब उपन्यासकार अपने आदर्श को न रखकर जीवन के यथार्थ को उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत करता है तब उसे यथार्थवादी उपन्यास की संज्ञा दी जाती है। इसमें जीवन की वास्तविकता को प्रस्तुत

BHDC-109_4th proof.indd 20 8/6/2021 2:08:59 PM

करना ही रचनाकार का उद्देश्य हो जाता है। जीवन का यथार्थ चाहे जैसा हो, वह उसे उसी रूप में प्रस्तुत करता है।

मार्क्सवादी विचारधारा के समर्थक उपन्यासकार समाज को मार्क्सवादी दृष्टि से देखते हैं और उसी के अनुरूप उपन्यास की रचना करते हैं। इस दृष्टि से लिखे गए उपन्यास भी यथार्थवादी होते हैं। यथार्थवादी उपन्यासकार समाज के प्रति आलोचनात्मक दृष्टि रखते हैं और जब उसी दृष्टि से उपन्यास की रचना करते हैं, तो ऐसे उपन्यास को आलोचनात्मक यथार्थवादी उपन्यास कहते हैं। लेकिन जब लेखक उपन्यास में यथार्थवाद को समाजवादी नज़रिए से पेश करता है, तो कुछ आलोचक ऐसे उपन्यास को समाजवादी यथार्थवादी उपन्यास भी कह सकते हैं। यशपाल, नागार्जुन, भैरवप्रसाद गुप्त, भीष्म साहनी आदि के उपन्यासों को कुछ आलोचक समाजवादी यथार्थवाद की कोटि में रखते हैं। कुछ विचारकों का मानना है कि भारत में समाजवादी यथार्थवादी उपन्यासों की रचना मुमकिन नहीं है क्योंकि समाजवादी यथार्थवादी उपन्यास ऐसे समाजों में ही लिखे जा सकते हैं जहाँ समाजवाद की स्थापना हो चुकी हो।

मनोवैज्ञानिक सिद्धांतों के आधार पर यथार्थ का चित्रण करने वाले उपन्यासों को मनोवैज्ञानिक उपन्यास या मनोविश्लेषणवादी उपन्यास कह सकते हैं। हिंदी में जैनेंद्र कुमार, अज्ञेय और इलाचंद्र जोशी के उपन्यासों को प्रायः इस श्रेणी में रखा जाता है। यहाँ यह बात ध्यान में रखने की है कि इन उपन्यासकारों के उपन्यासों को मनोवैज्ञानिक या मनोविश्लेषणवादी उपन्यास कहने का चलन अवश्य है लेकिन सच्चाई यह है कि इनके उपन्यासों में मनोविश्लेषणवाद के सिद्धांतों के अनुसार यथार्थ का चित्रण नहीं किया गया है। दूसरे यथार्थवादी उपन्यासों से इनका मुख्य अंतर यह है कि इनमें अंतर्मन के द्वंद्वों का चित्रण अपेक्षाकृत ज्यादा और गहनता से किया गया है।

बोध प्रश्न

8. नीचे उपन्यास के भिन्न-भिन्न प्रकारों की परिभाषाएँ दी जा रही हैं। उसके आधार पर आप उनके नाम लिखिए।

   i) जिस उपन्यास में अतीत के किसी काल खंड पर आधारित कथावस्तु प्रस्तुत की गई हो ( )

   ii) जिस उपन्यास की कथावस्तु का आधार सामाजिक समस्या हो ( )

   iii) जिस उपन्यास में किसी पात्र विशेष के इर्द-गिर्द पूरी कथा चले ( )

   iv) जिस उपन्यास में किसी स्थान–विशेष का वर्णन हो ( )

   v) जिस उपन्यास की कथावस्तु स्वप्न चित्रों की तरह लगे ( )

9. निम्नलिखित आधारों पर उपन्यास के तीन-तीन भेद लिखिए।

   i) कथावस्तु के आधार पर
      क) .....
      ख) .....
      ग) .....

   ii) परिवेश के आधार पर
      क) .....
      ख) .....
      ग) .....

   iii) शैली के आधार पर
      क) .....
      ख) .....
      ग) .....

   iv) प्रतिपाद्य के आधार पर
      क) .....
      ख) .....
      ग) .....

BHDC-109_4th proof.indd 21 8/6/2021 2:08:59 PM

अभ्यास

3. ऐतिहासिक उपन्यास की विशेषताएँ बताइए।

.....

.....

.....

.....

1.4 हिंदी उपन्यास का विकास

अब तक आपने उपन्यास के स्वरूप के बारे में जानकारी प्राप्त की है। अब आपके मन में यह प्रश्न जरूर उठ रहा होगा कि क्या हिंदी उपन्यास में समयानुकूल परिवर्तन आया है। यह प्रश्न स्वाभाविक है। इस प्रश्न के समाधान के लिए यह आवश्यक है कि हम हिंदी उपन्यास के विकासक्रम को जानें। इसके द्वारा हम यह जान पाएँगे कि हिंदी उपन्यास का प्रारंभिक रूप कैसा था, उसकी क्या-क्या विशेषताएँ थीं और उपन्यास के विकास में कौन से महत्त्वपूर्ण परिवर्तन आए तथा उनकी विशिष्टता क्या है। साथ ही साथ, हम यह भी जान पाएँगे कि हिदी के प्रारंभिक उपन्यासकार कौन थे तथा उनकी विशेषताएँ क्या थीं। हिंदी उपन्यास के विकासक्रम को जानकर हमें उनके मूल्यांकन में सुविधा होगी।

उपन्यास विधा का विकास पश्चिम के प्रभाव का परिणाम है। हिंदी उपन्यास का इतिहास बहुत पुराना नहीं है। श्रद्धाराम फुल्लौरी की रचना 'भाग्यवती' जिसका प्रकाशन 1877 ई. में हुआ था, को हिंदी का पहला उपन्यास माना जाता है। उपन्यास विधा पर उल्लेखनीय काम करने वाले प्रो. गोपाल राय के अनुसार पंडित गौरीदत्त कृत 'देवरानी जेठानी की कहानी' हिंदी का पहला उपन्यास है जिसकी रचना 1870 ई. में हुई है। इस विधा का विकासक्रम भारतेंदु युग से प्रारंभ हुआ। सबसे पहले बांग्ला उपन्यासों के अनुवाद हिंदी में किए गए। भारतेंदु युग में जिस प्रकार गद्य की अन्य विधाओं का विकास हुआ उसी प्रकार उपन्यास विधा को भी गति मिली। भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रेरणा से लेखक इस विधा में लेखन के लिए प्रोत्साहित हुए। लाला श्रीनिवासदास द्वारा लिखे गए उपन्यास 'परीक्षा गुरु' (1882) को हिंदी का पहला मौलिक उपन्यास माना जाता है जिसे आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी का पहला 'अंग्रेजी ढंग का नोवेल' कहा था।

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान केंद्रीय महत्त्व रखता है। इसलिए उन्हीं को आधार मानकर हिंदी उपन्यास के विकासक्रम को मोटे तौर पर तीन चरणों में रखा जा सकता है।

1. प्रेमचंद-पूर्व युग के उपन्यास
2. प्रेमचंद युग के उपन्यास
3. प्रेमचंदोत्तर युग के उपन्यास

1.4.1 प्रेमचंद-पूर्व हिंदी उपन्यास

प्रेमचंद पूर्व युग के उपन्यासों को उद्देश्यों की दृष्टि से दो भागों में रखा जा सकता है– 1) शुद्ध मनोरंजनपरक उपन्यास, और 2) सामाजिक सुधारवादी भावनापरक उपन्यास।

शुद्ध मनोरंजन प्रधान उपन्यासों में तिलिस्मी, ऐय्यारी तथा जासूसी उपन्यास शामिल

BHDC-109_4th proof.indd 22 8/6/2021 2:08:59 PM

हैं। सुधारवादी भावना से युक्त उपन्यासों में सामाजिक तथा ऐतिहासिक उपन्यासों को रखा जाता है।

तिलिस्मी, ऐय्यारी उपन्यास के लेखकों में प्रमुख हैंः देवकीनंदन खत्री ('चंद्रकांता', 'चंद्रकांता संतति'), किशोरी लाल गोस्वामी (तिलिस्मी शीश महल), हरेकृष्ण जौहर (कुसुमलता), तथा रामलाल वर्मा (पुतनी महल)। जासूसी उपन्यासकारों में गोपालराम गहमरी का नाम अग्रगण्य है। उन्होंने 'अद्‌भुत लाश', 'बेकसूर की फाँसी', 'सरकारी लाश' आदि उपन्यासों की रचना की।

इन उपन्यासों का मुख्य उद्‌देश्य मनोरंजन प्रदान करना था। पाठक ऐसे उपन्यासों को बड़े शौक से पढ़ते थे। उपन्यास में विचित्र घटनाओं की भरमार होती थी तिलिस्मी घटनाओं के बीच प्रेमकथाओं को रखा जाता था, अलबेले अनोखे प्रेमियों के अद्‌भुत कारनामों से पाठक में दिलचस्पी बनी रहती थी। ऐसे उपन्यासों में कौतूहल भरा रहता था। तिलिस्मी उपन्यासों में कथा को दो तीन कहानियों की आपसी गुत्थियों के साथ वर्णन किया जाता था। फिर उन गुत्थियों को सुलझाने के लिए लेखक अनेकानेक घटनाओं की रचना करता था। कथा में नाटकीय मोड़ उपस्थिति करके रोचकता पैदा की जाती थी। ऐसे उपन्यासों से हिंदी गद्य के विकास में सहायता मिली। उपन्यास पढ़ने के लिए उन व्यक्तियों ने भी हिंदी की लिपि सीखी जो केवल उर्दू जानते थे। इन उपन्यासों की भाषा साधारण बोलचाल की थी, इसलिए पाठकों को उपन्यास पढ़ने में कठिनाई नहीं होती थी। यद्यपि इस युग के उपन्यासों का उद्‌देश्य शुद्ध मनोरंजन था लेकिन बाद के उपन्यासों में उपन्यासकार यथार्थ के चित्रण की ओर उन्मुख हुए।

सामाजिक सुधारवादी भावनापरक उपन्यास में उस समय की सामाजिक वास्तविकताओं का वर्णन करते हुए कोई न कोई समाधान दिया गया है। उपन्यास के माध्यम से लेखक समाज की बुराइयों का चित्रण करता है और उन बुराइयों को दूर करने का उपाय बताता है। उद्‌देश्यपरक इन उपन्यासों से यथार्थ चित्रण की प्रवृत्ति का विकास होता है। इस प्रकार के उपन्यासकारों में लाला श्रीनिवासदास (परीक्षा गुरु), राधाकृष्णदास (निस्सहाय हिंदू), बालकृष्ण भट्‌ट (नूतन ब्रह्मचारी, सौ अजान एक सुजान), ठाकुर जगमोहन सिंह (श्यामा स्वप्न), किशोरी लाल गोस्वामी तथा अयोध्यासिंह उपाध्याय (अधखिला फूल, ठेठ हिंदी का ठाठ) आदि मुख्य हैं।

इस युग में ऐतिहासिक उपन्यासों की रचना भी की गई। भारतीय इतिहास के अतीत से कथावस्तु का चयन किया गया तथा उसे कल्पना के सहारे नवीन रूप देकर प्रस्तुत किया गया। ऐसे उपन्यासकारों में किशोरीलाल गोस्वामी (हृदयहारिणी, आदर्श रमणी, तारा, रज़िया बेगम) गंगाप्रसाद गुप्त (पृथ्वीराज चौहान), श्यामसुन्दर वैद्य (पंजाब पतन) आदि मुख्य हैं।

प्रेमचंद पूर्व युग के उपन्यासों में आदर्शवाद के साथ भावुकता तथा भारतीय आदर्श को प्रस्तुत किया गया है। भाषा की दृष्टि से जो प्रौढ़ता प्रेमचंद युग में आई उसका उस युग की रचनाओं में अभाव है।

1.4.2 प्रेमचंद युगीन हिंदी उपन्यास

हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद के आगमन से एक नए युग का सूत्रपात होता है। जीवन के यथार्थ को प्रस्तुत करने का कार्य इस युग में होता है। वैसे स्वयं प्रेमचंद ने सबसे पहले आदर्शवादी उपन्यासों की रचना की किंतु बाद में उन्होंने यथार्थवादी उपन्यासों की रचना की। इस प्रकार के उपन्यासों की शुरूआत प्रेमचंद के 'सेवासदन' (1918) से होती है। इस उपन्यास में समाज की समस्या को स्थान दिया गया।

BHDC-109_4th proof.indd 23 8/6/2021 2:08:59 PM

सामाजिक अत्याचार से पीड़ित नारी समाज और वेश्यावृत्ति की समस्या को कथा का आधार बनाया गया है। पूर्व युग के उपन्यासों की चर्चा करते हुए प्रेमचंद ने कहा :

''हमने जिस युग को अभी पार किया है, उसे जीवन से कोई मतलब न था। हमारे साहित्यकार कल्पना की सृष्टि खड़ी कर उनमें मनमाने तिलिस्मी बांधा करते थे। कहीं फ़िसानये अजायब की दास्तान थी, कहीं बोस्ताने ख्याल की और कहीं चद्रकांता संतति की। इन आख्यानों का उद्देश्य केवल मनोरंजन था और हमारे अद्भुत रस-प्रेम की तृप्ति। साहित्य का जीवन से कोई लगाव है यह कल्पनातीत था। कहानी कहानी है, जीवन जीवन। दोनों परस्पर विरोधी समझी जाती थी।''

प्रेमचंद ने सामाजिक-कुरीतियों, राष्ट्रीय भावनाओं, ग्रामीण जीवन की समस्याओं, मजदूर, किसान, नेता, उपदेशक, राजा-रंक, सभी का यथार्थ चित्रण किया है। एक ओर तो उनके उपन्यासों में गरीबों, बेबसों, उत्पीड़ितों का कारुणिक चित्रण हुआ है वहीं उनके अंदर छिपी हुई मानवता को भी दर्शाया है। प्रेमचंद ने व्यावहारिक बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। पाठक उपन्यास को पढ़ने में कहीं बाधा महसूस नहीं करता। उन्होंने मुहावरों और कहावतों का प्रयोग कर भाषा को और सहज बनाया। प्रेमचंद ने उपन्यास रचना में भिन्न-भिन्न प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया।

प्रेमचंद के प्रसिद्ध उपन्यास हैं : प्रेमा (1907), सेवासदन (1918), वरदान (1920), प्रेमाश्रम (1922), रंगभूमि (1925), कायाकल्प (1926), निर्मला (1927), गबन (1931), कर्मभूमि (1932), गोदान (1936), मंगलसूत्र–(अधूरा) मरणोपरांत 1948 में प्रकाशित।

प्रेमचंद युग के अन्य उपन्यासकारों ने भी समाज के यथार्थ का चित्रण किया। इनमें विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' (भिखारिणी, माँ), पांडेय बेचन शर्मा उग्र (बुधुवा की बेटी, शराबी), चतुरसेन शास्त्री (हृदय की प्यास, अमर अभिलाषा, बहते आँसू), सियारामशरण गुप्त (गोद, अंतिम आकांक्षा, नारी) आदि हैं।

जयशंकर प्रसाद ने भी इस युग में दो उपन्यासों की रचना की। वे हैं : 'कंकाल' और 'तितली', यद्यपि इन रचनाओं में यथार्थ का चित्रण किया गया है लेकिन लेखक की शैली भिन्न है। दोनों उपन्यासों में वर्तमानकालीन समाज के उत्थान-पतन का चित्रण किया गया है।

इस युग में उपन्यास की दो प्रकार की शैलियों का चलन हुआ जिन्हें प्रेमचंद शैली तथा प्रसाद शैली कहा गया। दोनों शैलियों में मुख्य अंतर कथा प्रधानता और भावना प्रधानता को लेकर है। प्रेमचंद की शैली में कथा के यथार्थ चित्रण पर बल दिया जाता है जबकि प्रसाद का ज़ोर भावनाओं के ऊहापोह पर ज्यादा रहता है। इसका अर्थ यह नहीं है कि प्रेमचंद के यहाँ भावनाओं के चित्रण की उपेक्षा होती थी और न इसका अर्थ यह है कि प्रसाद की रचनाएँ यथार्थ विरोधी होती थीं। यहाँ सिर्फ़ प्रमुखता को ध्यान में रखा गया है।

1.4.3 प्रेमचंदोत्तर युग के हिंदी उपन्यास

प्रेमचंद के बाद हिंदी उपन्यास के विकास में गति आयी। आपने देखा कि प्रेमचंद युग में ही इस विधा में दो धाराएँ उभर रही थीं। बाद में ये धाराएँ स्पष्ट रूप से सामने आ गईं। एक धारा प्रेमचंद की यथार्थवादी परंपरा के विकास की ओर अग्रसर हुई, तो दूसरी धारा प्रसाद की भाववादी परंपरा पर आगे बढ़ी। पहली धारा में प्रगतिवादी धारा और दूसरी धारा में मानव मन के अंतर्द्वंद्वों के चित्रण पर बल देने वाली धारा जिसे मनोवैज्ञानिक उपन्यास की धारा कहा गया, उसका विकास हुआ।

BHDC-109_4th proof.indd 24 8/6/2021 2:08:59 PM

आलोचनात्मक यथार्थवादी और समाजवादी यथार्थवादी उपन्यास

आलोचनात्मक यथार्थवादी उपन्यासों में जीवन के यथार्थ का आलोचनात्मक चित्रण होता है। हिंदी के अधिकतर प्रगतिशील और यथार्थवादी लेखकों की रचनाओं को इसी श्रेणी में रखा जा सकता है। जबकि समाजवादी यथार्थवादी उपन्यास में या तो समाजवादी समाज के यथार्थ का चित्रण होता है या समाजवादी दृष्टि से समाज के यथार्थ का चित्रण होता है। आलोचनात्मक यथार्थवादी उपन्यासकार किसी न किसी वैचारिक दृष्टिकोण से यथार्थ की आलोचना प्रस्तुत करता है। यह दृष्टि प्रायः आधुनिक और प्रगतिशील होती है जबकि समाजवादी यथार्थवादी उपन्यासकार मार्क्सवादी दृष्टि से समाज के यथार्थ की आलोचना प्रस्तुत करता है। भारत में मार्क्सवादी दृष्टि से समाज के यथार्थ की आलोचना तो संभव है, लेकिन समाजवादी यथार्थ को प्रस्तुत करना संभव नहीं है क्योंकि भारतीय समाज समाजवादी समाज नहीं है। इसलिए समाजवादी यथार्थ पर केंद्रित उपन्यासों की रचना यहाँ नहीं हुई। यथार्थवादी उपन्यासों में समाज की वास्तविकता को प्रमुख स्थान दिया गया। धार्मिक अंधविश्वासों, सामाजिक रूढ़ियों, आर्थिक शोषण को केंद्र में रखकर उपन्यास की रचना की गई। इन उपन्यासों में बाह्य कार्य-व्यापार के साथ-साथ अंतर्द्वंद्वों के चित्रण पर भी ध्यान दिया गया।

इस प्रकार के उपन्यासकारों में यशपाल (दादा कामरेड, मनुष्य के रूप, झूठा सच) उपेंद्रनाथ अश्क (गिरती दीवारें, गर्म राख, शहर में घूमता आईना), अमृत राय (बीज, धुआँ), रांगेय राघव (घरौंदे), भीष्म साहनी (तमस, कड़ियाँ, झरोखे) अमृतलाल नागर (बूँद और समुद्र, अमृत और विषय), नागार्जुन (बलचनमा, दुखमोचन), भैरवप्रसाद गुप्त (गंगा मैया, सती मैया का चौरा), मोहन राकेश (अँधेरे बंद कमरे), राजेंद्र यादव (शह और मात, उखड़े हुए लोग, सारा आकाश), कृष्णा सोबती (जिंदगीनामा, मित्रो मरजानी) आदि मुख्य हैं।

मनोवैज्ञानिक उपन्यास

प्रेमचंद के बाद हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में कुछ ऐसे उपन्यासकार आए जिन्होंने मानव मन को ही कथा का मुख्य आधार बनाया। इनमें सामाजिक समस्याओं के स्थान पर व्यक्ति की वैयक्तिक पीड़ाओं और मानसिक द्वंद्व को प्रस्तुत किया गया। इस प्रकार के उपन्यासों की रचना के पीछे प्रसिद्ध मनोविश्लेषक फ्रायड, एडलर तथा युंग के सिद्धांतों का प्रभाव है। मानव मन में अवचेतन क्रियाओं तथा मानसिक ग्रंथियों को कथा का आधार बनाया गया। इन उपन्यासों में मानव के अंतर्मन के द्वंद्व तथा चरित्र की वैयक्तिक विशिष्टता का उद्घाटन हुआ है।

इस धारा के उपन्यासकारों में जैनेंद्र (सुनीता, त्याग–पत्र, कल्याणी), इलाचंद्र जोशी (निर्वासित, जहाज का पंछी), अज्ञेय (शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप, अपने-अपने अजनबी) मुख्य हैं।

आंचलिक उपन्यास

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद उपन्यास के क्षेत्र में एक नई धारा का विकास हुआ, वह था आंचलिक उपन्यास की धारा। इस प्रकार के उपन्यासों में रचनाकार क्षेत्र विशेष से कथावस्तु का चयन करता है। क्षेत्र विशेष या अंचल विशेष के आधार पर कथा रचने के कारण ही इसे आंचलिक उपन्यास की संज्ञा दी गई। इस प्रकार के उपन्यासों की शुरूआत फणीश्वरनाथ रेणु के उपन्यास 'मैला आंचल' से हुई। लेखक ने इस उपन्यास में बिहार के पूर्णिया जिले के एक गाँव मेरीगंज को आधार बनाया है। अंचल विशेष की सारी विशेषताओं को उपन्यास के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। ऐसे उपन्यासों में भाषा, रहन-सहन, आचार-विचार, तीज-त्योहार आदि का वर्णन अंचल विशेष के अनुसार होता है।

BHDC-109_4th proof.indd 25 8/6/2021 2:08:59 PM

इस प्रकार के उपन्यास लेखकों में फणीश्वरनाथ रेणु (मैला आंचल, परती परिकथा), उदयशंकर भट्ट (सागर लहरें और मनुष्य), रांगेय राघव (कब तक पुकारूँ), राही मासूम रज़ा (आधा गाँव) आदि मुख्य हैं।

ऐतिहासिक उपन्यास

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ऐतिहासिक उपन्यास यथार्थवादी दृष्टिकोण से लिखे गए। इस युग में यथार्थवादी दृष्टिकोण के आधार पर ऐसे उपन्यासों की रचना हुई। मार्क्सवादी दृष्टि के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में मार्क्सवादी ऐतिहासिक दृष्टि को प्रधानता दी। ऐसे उपन्यासकारों में राहुल सांकृत्यायन (सिंह सेनापति), यशपाल (दिव्या, अमिता), रांगेय राघव (मुर्दों का टीला) प्रमुख हैं।

मानवतावादी दृष्टिकोण के उपन्यासकारों ने अपने उपन्यासों में मानवतावादी दृष्टि को उभारा। इनमें हजारी प्रसाद द्विवेदी (बाणभट्ट की आत्मकथा, चारु चंद्रलेख, अनामदास का पोथा), वृन्दावनलाल वर्मा (विराटा की पद्मिनी, झाँसी की रानी), अमृतलाल नागर (शतरंज के मोहरे, मानस का हंस), भवगती चरण वर्मा (चित्रलेखा), आचार्य चतुरसेन शास्त्री (सोमनाथ) आदि का नाम लिया जा सकता है।

बोध प्रश्न

10. प्रेमचंद-पूर्व युग के उपन्यास पाठकों में क्यों अत्यंत लोकप्रिय हुए? दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

    .....

    .....

11. प्रेमचंद-पूर्व युग के चार उपन्यासकारों के नाम तथा प्रत्येक की एक-एक रचना का नाम बताइए।

	उपन्यासकार	उपन्यास
i)	.....	.....
ii)	.....	.....
iii)	.....	.....
iv)	.....	.....

12. प्रेमचंद और प्रसाद के उपन्यासों की दो-दो विशेषताएँ बताइए।

    प्रेमचंद

    .....

    .....

    प्रसाद

    .....

    .....

13. उचित शब्द रखकर वाक्य पूर्ति कीजिए

    क) जिन उपन्यासों में समाज के यथार्थ का चित्रण होता है उन्हें ..... उपन्यास कहते हैं।

    ख) मानसिक द्वंद्व को आधार बनाकर लिखे जाने वाले उपन्यास ..... कहलाते हैं।

BHDC-109_4th proof.indd 26 8/6/2021 2:09:00 PM

ग) आंचलिक उपन्यास लेखकों में प्रथम नाम ..... का है

घ) स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद ऐतिहासिक उपन्यासों का आधार भी ..... हो गया।

अभ्यास

4. आंचलिक उपन्यास को परिभाशित करते हुए उसकी विशेषताएँ बताइए।

5. उपन्यासकार के रूप में प्रेमचंद का महत्त्व बताइए।

1.5 सारांश

आपने इस इकाई को सावधानीपूर्वक पढ़ा होगा। आपने देखा कि उपन्यास विधा साहित्य की लोकप्रिय विधा है। इस पाठ को पढ़ने के बादः

- उपन्यास के स्वरूप को बता सकते हैं।
- कहानी और उपन्यास साहित्य की लोकप्रिय विधा है। दोनों विधाओं में बहुत से तत्त्व समान होते हैं लेकिन फिर भी दोनों विधाएँ अलग हैं, आप इनके मूलभूत अंतर स्पष्ट कर सकते हैं।
- उपन्यास में केवल कल्पित कथा को ही प्रस्तुत नहीं किया जाता। जीवन के तथ्य को इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है जो रोचक हो। आप उपन्यास के रचनागत वैशिष्ट्य को बता सकते हैं।
- हिंदी उपन्यास का प्रारंभ भी 19वीं शती के उत्तरार्द्ध में हुआ। आरंभिक हिंदी उपन्यास किस प्रकार के होते थे, किस प्रकार इसमें परिवर्तन आया तथा किन उपन्यासकारों ने हिंदी उपन्यास को उत्कृष्टता प्रदान की, उसका परिचय दे सकते हैं।
- आप प्रेमचंद और उनके बाद के दौर के प्रमुख उपन्यासकारों और उपन्यासों की प्रवृत्तिगत विशेषताओं के बारे में भी बता सकते हैं।

1.6 शब्दावली

रचनागत वैशिष्ट्य : रचना की विशेषता, साहित्यिक कृति की विशेषता

आयाम : विस्तार

तिलिस्मी : अद्भुत या अलौकिक व्यापार, करामात

चमत्कारी : आश्चर्यजनक कार्य या व्यापार, आश्चर्य का विषय या विचित्र घटना

अजीबोग़रीब : विचित्र, अनोखा

हैरतअंगेज़ : आश्चर्य चकित कर देने वाला

करतब : कार्य, काम, करामात, जादू

मूलभूत : किसी वस्तु के मूल या तत्व से संबंध रखने वाला

अप्रासंगिक : प्रसंग के विरूद्ध

अविश्वसनीय : जिस पर विश्वास न किया जा सके

नाटकीयता : नाटक-संबंधी, बहुत ही आकस्मिक रूप से, परंतु कुशलता और चतुरता पूर्वक किया जाने वाला कार्य

निहित : छिपा हुआ

BHDC-109_4th proof.indd 27 8/6/2021 2:09:00 PM

समकालीन : जो एक ही समय में हुए हों

मूल्यांकन : किसी रचना का मूल्य या महत्त्व आँकना या समझना

प्रोत्साहित : किसी काम के लिए उत्साह बढ़ाना

फ़िसानये अजायब : विचित्र कथा, वृतान्त, हाल, कहानी, किस्सा, वर्णन

मानसिक ग्रंथि : मन संबंधी गुत्थी।

1.7 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1. i) आरंभिक उपन्यासों में मानसिक द्वंद्व का चित्रण होता था।
   ii) जीवन का यथार्थवादी चित्रण होता था।
2. i) उपन्यास में व्यापक जीवन का चित्रण होता है जबकि कहानी में जीवन के किसी एक अंश का।
   ii) उपन्यास में पात्रों की संख्या अधिक होती है जबकि कहानी में कम और एक दो पात्र ही महत्त्वपूर्ण होते हैं।
   iii) उपन्यास में परिवेश का विस्तार से चित्रण किय जाता है जबकि कहानी में इसके लिए अवकाश नहीं रहता।
3. i) कथावस्तु ii) संवाद iii) परिवेश
   iv) शैली v) उद्देश्य
4. घ
5. i) पात्रों के संवादों से
   ii) पात्रों द्वारा स्वयं के बारे में सोच से
   iii) लेखक स्वयं भी पात्रों के बारे में कुछ कहता है।
6. ग
7. i) लेखक की अपनी रुचि
   ii) उपन्यास की कथावस्तु के अनुसार
8. i) ऐतिहासिक उपन्यास
   ii) सामाजिक उपन्यास
   iii) चरित्र प्रधान उपन्यास
   iv) आंचलिक उपन्यास
   v) फंतासी उपन्यास
9. i) क) घटना प्रधान ख) पारिवारिक ग) ऐतिहासिक
   ii) क) आंचलिक ख) महानगरीय ग) कस्बाई
   iii) क) फंतासी ख) डायरी ग) प्रतीकात्मक
   iv) क) आदर्शवादी ख) यथार्थवादी ग) समाजवादी
10. प्रेमचंद-पूर्व के उपन्यासों का मुख्य उद्देश्य मनोरंजन था। उपन्यासों में विचित्र घटनाओं से पाठक के मन में यह कौतूहल बना रहता था कि आगे क्या होगा? इस कारण ऐसे उपन्यास लोकप्रिय हुए।

BHDC-109_4th proof.indd 28 8/6/2021 2:09:00 PM

11. उपन्यासकार	उपन्यास
i) देवकीनंदन खत्री	चंद्रकांता संतति
ii) किशोरीलाल गोस्वामी	तिलिस्मी शीश महल
iii) हरेकृष्ण जौहर	कुसुमलता
iv) गोपालराम गहमरी	बेकसूर को फाँसी

12. प्रेमचंद

i) सामाजिक समस्याओं पर केंद्रित

ii) ग्रामीण जीवन का यथार्थ चित्रण

प्रसाद

i) मानव मन के अंतर्द्वंद्व का चित्रण

ii) संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग

13. क) यथार्थवादी

ख) मनोवैज्ञानिक

ग) फणीश्वरनाथ रेणु

घ) यथार्थ चित्रण

अभ्यास

1. आरंभिक उपन्यास में घटनाओं की भरमार रहती थी। रहस्य, रोमांच और अवास्तविकता का चित्रण अधिक होता था। नायक अद्‌भुत कारनामें करता था। आज के उपन्यास में अवास्तविकता के स्थान पर यथार्थ का चित्रण अधिक होता है। जीवन में जो घटनाएँ घटती हैं उनका स्वाभाविक ढंग से चित्रण होता है।

शेष अभ्यासों के उत्तर इकाई का अध्ययन करके लिखिए।

BHDC-109_4th proof.indd 29 8/6/2021 2:09:00 PM

इकाई 2 प्रेमचंद का परिचय और उनके उपन्यास

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 प्रेमचंद का जीवन परिचय

2.3 उपन्यासकार प्रेमचंद

2.4 प्रेमचंद का रचना वैशिष्ट्य

- 2.4.1 प्रेमचंद के औपन्यासिक पात्र
- 2.4.2 प्रेमचंद के उपन्यासों में देशकाल
- 2.4.3 प्रेमचंद के उपन्यासों की भाषा
- 2.4.4 प्रेमचंद का औपन्यासिक शिल्प
- 2.4.5 प्रेमचंद के उपन्यासों की सोद्देश्यता

2.5 सारांश

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के पढ़ने के उपरांत आप :

- प्रेमचंद का संक्षिप्त जीवन परिचय प्राप्त कर सकेंगे;
- प्रेमचंद के उपन्यासों के बारे में जानकारी प्राप्त कर पाएँगे;
- प्रेमचंद के उपन्यासों की भाषागत विशेषताओं से परिचित हो सकेंगे और
- प्रेमचंद के रचना वैशिष्ट्य से अवगत हो सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

प्रेमचंद हिंदी साहित्य के महत्वपूर्ण रचनाकार हैं। उन्होंने उर्दू और हिंदी दोनों भाषाओं में साहित्य सर्जन किया है। वे मुख्यतः कथाकार हैं। उन्होंने सेवासदन, रंगभूमि, गोदान आदि महत्वपूर्ण उपन्यासों की रचना की। पंचपरमेश्वर, दो बैलों की कथा, सवासेर गेहूँ, शतरंज के खिलाड़ी, पूस की रात, कफन आदि उनकी चर्चित कहानियाँ हैं। उन्होंने हिंदी में तीन नाटकों की भी रचना की। 'हंस' और 'जागरण' पत्रिकाओं का संपादन किया। हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचंद का आगमन युगांतकारी महत्त्व रखता है। उनके लेखन से हिंदी उपन्यास को एक नई दिशा मिली। उन्होंने हिंदी उपन्यास को सामाजिक यथार्थ से जोड़कर सोद्देश्यता प्रदान की। उनके उपन्यासों में जहाँ शोषित, उत्पीड़ित जनता के दुःख दर्द को स्थान दिया गया, वहीं राष्ट्रीय भावना को भी प्रस्तुत किया गया है। तत्कालीन समाज की यथार्थ स्थिति को उन्होंने हू-ब-हू प्रस्तुत किया है। प्रथमतः उनके उपन्यास आदर्शवादी रहे, उनमें कथा के द्वारा पात्रों के चरित्र को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया। धीरे-धीरे आदर्श की जगह यथार्थता का स्थान बढ़ता गया। बाद के उपन्यासों में उन्होंने यथार्थ और आदर्श का समुचित मेल रखा है। जीवन के प्रत्येक पक्ष का उद्घाटन उनके उपन्यासों से मिलता है लेकिन दलितों, महिलाओं और किसानों के प्रति उन्होंने विशेष सहानुभूति जताई है। साहित्यकार के कर्त्तव्य के बारे

BHDC-109_4th proof.indd 30 8/6/2021 2:09:00 PM

में वे स्वयं कहते हैं ''जो दलित हैं, पीड़ित हैं, वंचित हैं, चाहे वह व्यक्ति हो या समूह उसकी हिमायत और वकालत करना उसका फर्ज है।'' (प्रेमचंद, कुछ विचार)।

2.2 प्रेमचंद का जीवन परिचय

प्रेमचंद का जन्म 31 जुलाई, 1880 को बनारस के पास लमही नामक गाँव में हुआ था। इनके पिता का नाम मुंशी अजायबलाल और माता का नाम आनंदी देवी था। इनके पिता डाकखाने में मुंशी थे। शायद इसी कारण प्रेमचंद को भी मुंशी प्रेमचंद लिखने की परंपरा रही है। इनका बचपन का नाम धनपतराय श्रीवास्तव था। स्कूल में उनका यही नाम लिखवाया गया था। साहित्य लेखन के लिए उन्होंने नवाबराय नाम तय किया। इसी नाम से उन्होंने उर्दू में कहानियाँ लिखना का प्रारम्भ किया। आठ वर्ष की अवस्था में इनकी माता का देहान्त हो गया। बाद में इनके पिता ने दूसरा विवाह किया। इस विमाता से प्रेमचंद की अनबन रहती थी, जिसका उल्लेख उन्होंने किया है। इसके बाद प्रेमचंद का भी विवाह हो गया। पत्नी से भी प्रेमचंद की पटरी नहीं बैठी। कहते हैं कि विमाता और उनकी पत्नी के भी संबंध अच्छे नहीं थे। इस गृह–कलह तथा अन्य कारणों से प्रेमचंद ने पत्नी को त्याग दिया। पुनर्विवाह का प्रचलन नहीं था, अतः उनकी पत्नी का फिर से विवाह नहीं हुआ। उनकी पत्नी बहुत दिनों तक अपने भाइयों के पास ही रही। प्रेमचंद ने पुनः विवाह कर लिया। इस बार उन्होंने बाल विधवा शिवरानी देवी से विवाह किया, जो जीवन भर उनके साथ रहीं। इस विवाह का कारण आर्य समाज के प्रभाव को माना जाता है। फिर जल्दी ही प्रेमचंद के पिता का देहांत हो गया, तब परिवार की सारी आर्थिक–सामाजिक जिम्मेदारी प्रेमचंद पर आ गई। प्रेमचंद के दो पुत्र और एक पुत्री हुई। उन्होंने अपने दोनों पुत्रों को पर्याप्त शिक्षा दी, लेकिन पुत्री को ज्यादा नहीं पढ़ाया तथा उसका जल्दी ही विवाह भी कर दिया।

प्रेमचंद की आरंभिक शिक्षा मदरसे में हुई तथा उन्होंने प्रारंभिक लेखन भी उर्दू में ही किया। उनकी प्रारम्भिक उपलब्ध रचना, 'आलिवर क्रामवेल की जीवनी' (सन् 1903) माना जाता है। यह निबंध दयानारायण निगम के प्रसिद्ध पत्र 'ज़माना' में प्रकाशित हुआ। उनका पहला उपन्यास 'हम खुर्मा और हम सबाब' (1906) माना जाता है। उनकी पहली कहानी 'दुनिया का सबसे अनमोल रतन' (1907) मानी जाती है। उनका पहला कहानी संग्रह 'सोज़े–वतन' सन् 1909 में छपा। इस संग्रह में देशप्रेम की भावुक ललकार मिलती है। कहा जाता है कि सरकार ने यह जानकारी प्राप्त कर ली थी कि धनपतराय श्रीवास्तव और नवाब राय एक ही व्यक्ति है। तब तत्कालीन जिलाधीश ने प्रेमचंद को बुलाकर डाँटा–फटकारा तथा भविष्य में ऐसी कहानियाँ न लिखने की हिदायत देकर इस संग्रह को जब्त कर लिया।

सरकारी नौकरी करते हुए अपने नाम से देशभक्ति का साहित्य लिखना प्रेमचंद के लिए अब संभव नहीं था, इसलिए पहले भी उन्होंने धनपतराय श्रीवास्तव के नाम से लेखन नहीं किया। लेखन के रूप में नवाबराय नाम चुना, परन्तु सरकार को पता चल गया। तब फिर नए नाम की खोज हुई। उन्होंने अपने मित्र दयानारायण निगम से चर्चा की और प्रेमचंद नाम से लेखन करने का निर्णय किया। प्रेमचंद के नाम से 'बड़े घर की बेटी' (1910) कहानी पहली बार छपी। इसके बाद सभी लोग प्रेमचंद को प्रेमचंद के नाम से ही जानने लगे।

क्वींस कॉलेज, बनारस से प्रेमचंद ने दसवीं की परीक्षा पास की। 1899 में प्रेमचंद ने सहायक अध्यापक की नौकरी करनी प्रारम्भ की। उनका वेतन 18 रुपया मासिक तय हुआ। मिशन स्कूल चुनार से उनके शिक्षक जीवन का प्रारम्भ हुआ। कई शहरों में उनका तबादला हुआ। बहराइच, प्रतापगढ़ आदि स्थानों पर वे रहे। बाद में महोबा, गोरखपुर, कानपुर में भी रहे। जुलाई, 1902 में वे शिक्षकों की ट्रेनिंग के लिए इलाहाबाद

BHDC-109_4th proof.indd 31 8/6/2021 2:09:00 PM

गये। यहाँ उन्हें 'जूनियर सर्टिफिकेट टीचर' की उपाधि मिली। इस उपाधि में लिखा है, 'गणित पढ़ाने की योग्यता नहीं रखते। चाल–चलन संतोषजनक है और समय के पाबन्द है। धनपत राय ने अपना काम खूब मेहनत से और अच्छी तरह किया।' 1904 में प्रेमचंद ने उर्दू और हिंदी में स्पेशल वर्नाकुलर की परीक्षा पास की।

प्रेमचंद को पढ़ने का शौक बचपन से ही था। उन्होंने स्वयं लिखा है, 'इस वक्त मेरी उम्र कोई तेरह साल की रही होगी। हिन्दी बिल्कुल न जानता था। उर्दू के उपन्यास पढ़ने का उन्माद था। मौलाना शरर, पं. रतननाथ सरशार, मिर्जा रुसवा, मौलवी मोहम्मद अली हरदोई निवासी उस वक्त के सर्वप्रिय उपन्यासकार थे। इनकी रचनाएँ जहाँ मिल जाती थीं, स्कूल की याद भूल जाती थी और पुस्तक समाप्त करके ही दम लेता था। उस जमाने में रेनाल्ड के उपन्यासों की धूम थी। उर्दू में अनेक अनुवाद धड़ाधड निकल रहे थे और हाथों हाथ बिकते थे। मैं भी उनका आशिक था। स्व. हजरत रियाज ने, जो उर्दू के प्रसिद्ध कवि हैं और जिनका हाल में देहान्त हुआ है, रेनाल्ड की एक रचना का अनुवाद 'हरमसरा' के नाम से किया था। उसी जमाने में लखनऊ के साप्ताहिक 'अवध पंच' के सम्पादक स्व. मौलाना सज्जाद हुसैन ने, जो हास्य रस के अमर कलाकार थे, रेनाल्ड के दूसरे उपन्यास का अनुवाद 'धोखा या तिलस्मी कानून' के नाम से किया था। ये सभी पुस्तकें मैंने उस जमाने में पढ़ीं। और पं. रतननाथ सरशार से तो मुझे तृप्ति ही न होती थी। उनकी सारी रचनाएँ मैंने पढ़ डालीं। उन दिनों मेरे पिता गोरखपुर में रहते थे और मैं भी वहीं के मिशन स्कूल में आठवीं में पढ़ता था, जो तीसरा दरजा कहलाता था। रेती पर एक बुकसेलर बुद्धिलाल नाम का रहता था। मैं उसकी दूकान पर सारे दिन तो बैठ न सकता था, इसलिए मैं उसकी दूकान से अंग्रेजी पुस्तकों की कुंजियाँ और नोट्स लेकर अपने स्कूल के लड़कों के हाथ बेचा करता था और इसकी एवज में उपन्यास दूकान से घर लाकर पढ़ता था। दो–तीन वर्षों में सैकड़ों ही उपन्यास पढ़ डाले होंगे। जब उपन्यास का स्टॉक समाप्त हो गया, तो मैंने नवल किशोर प्रेस से निकले हुए पुराणों के उर्दू अनुवाद भी पढ़े और 'तिलस्म–ए–होशरुबा' के कई भाग भी पढ़े। इस वृहद तिलस्मी ग्रंथ के सत्रह भाग उस वक्त निकल चुके थे और एक–एक भाग बड़े सुपर रायल आकार के दो–दो हजार पृष्ठों से कम न होगा। और इन सत्रह भागों के उपरांत उसी पुस्तक के अलग–अलग प्रसंगों पर पचासों भाग छाप चुके थे। इनमें से भी मैंने कई पढ़े। जिसने इस बड़े ग्रंथ की रचना की, उसकी कल्पना शक्ति कितनी प्रबल होगी, इसका केवल अनुमान किया जा सकता है। कहते हैं, ये कथाएँ मौलाना फैजी ने अकबर के विनोदार्थ फारसी में लिखी थी। इसमें कितना सत्य है, कह नहीं सकता, लेकिन इतनी वृहद् कथा शायद ही संसार की किसी भाषा में हो। पूरी इंसाइक्लोपीडिया समझ लीजिए। एक आदमी तो अपने साठ वर्ष के जीवन में उनकी पूरी नकल भी करना चाहे, तो नहीं कर सकता। रचना तो दूसरी बात है।' कहने का तात्पर्य यह है कि प्रेमचंद ने स्कूली शिक्षा के बाद स्वाध्याय के द्वारा अपने ज्ञान का विस्तार किया। उन्हें हिंदी, अंग्रेजी, फारसी और उर्दू का ज्ञान था। लेखन का प्रारम्भ उन्होंने उर्दू में किया। बाद में उन्होंने हिंदी में लिखना प्रारम्भ किया। हिंदी में लिखने के बावजूद वे उर्दू में भी लिखते रहे। इस तरह वे भारतीय भाषाओं के उन गिने–चुने लेखकों में से एक थे, जो हिंदी और उर्दू दोनों पर समान भाव से अधिकार रखते थे और जिन्हें दोनों भाषाओं के लेखक अपनी परंपरा में शामिल करते हैं।

प्रेमचंद ने बी.ए. तक की शिक्षा ग्रहण की। महोबा रहते हुए उनकी पदोन्नति हो गई और वे स्कूल इंस्पेक्टर बना दिए गए। यह समय भारतीय इतिहास में महात्मा गाँधी के स्थापित होने के पहले का था। धीरे–धीरे गाँधी जी देश के सर्वमान्य नेता बने। गाँधी जी ने असहयोग आंदोलन का प्रचार करना प्रारम्भ कर दिया था। उस समय प्रेमचंद गोरखपुर में नौकरी कर रहे थे। 8 फरवरी, 1921 को गाँधी जी इलाहाबाद पहुँचे और

BHDC-109_4th proof.indd 32 8/6/2021 2:09:00 PM

एक जन सभा को संबोधित किया। स्वयं प्रेमचंद इस सभा में उपस्थित थे। कहते हैं कि गाँधी जी को सुनने के लिए दो लाख से अधिक लोग पहुँचे थे। महात्मा गाँधी ने जनता से सरकार के असहयोग की अपील की। इसका प्रेमचंद के मन पर अनुकूल प्रभाव पड़ा। घर–परिवार में पत्नी से सलाह करके उन्होंने 15 फरवरी, 1921 को सरकारी नौकरी से त्यागपत्र दे दिया।

नौकरी छोड़ने के बाद प्रेमचंद महावीर प्रसाद पोद्दार के साथ चले गए और चर्खे का प्रचार करने लगे। फिर उन्होंने मारवाड़ी स्कूल, कानपुर, काशी विद्यापीठ आदि कई निजी संस्थानों में अध्यापकी की, परन्तु वे कहीं भी एक जगह स्थिर होकर नहीं रहे। इस बीच उन्होंने पत्रकारिता का कार्य भी किया। कुछ दिनों तक उन्होंने 'मर्यादा' का संपादन भी किया। स्थायी आमदनी के लिए प्रेमचंद प्रयासरत थे। इसी क्रम में उन्होंने जुलाई 1923 में बनारस में सरस्वती प्रेस की स्थापना की। इस प्रेस में प्रेमचंद ने 4500/–, महताब राय ने 2000/ बलदेव लाल ने 2000/– और रघुपति सहाय ने 2000/रुपये, लगाए। कुछ दिनों बाद प्रेमचंद ने 9500/रु. में अकेले ही इस प्रेस को खरीद लिया और शेष हिस्सेदारों को उनके रुपए दे दिए। इसी प्रेस से बाद में प्रेमचंद ने 'हंस' और 'जागरण' को प्रकाशित किया।

प्रेमचंद ने उस समय की प्रतिनिधि पत्रिका 'सरस्वती' में एक कहानी प्रकाशनार्थ भेजी– 'पंचों में ईश्वर'। सरस्वती के यशस्वी सम्पादक महावीर प्रसाद द्विवेदी ने शीर्षक को सुधार दिया और जून 1916 की 'सरस्वती' में 'पंच परमेश्वर' शीर्षक से यह कहानी प्रकाशित हुई। अब प्रेमचंद धीरे–धीरे हिंदी साहित्य में आने लगे। वे अपनी रचना पहले उर्दू में लिखते थे तथा बाद में स्वयं ही उसे हिंदी में लिखते थे। हिंदी में जब 'सेवासदन' प्रकाशित हुआ तो हिंदी संसार में धूम मच गई। 'बाजार–ए–हुस्न' को इतनी तारीफ उर्दू में नहीं मिली थी। इसी क्रम में प्रेमचंद ने 'रंगभूमि' उपन्यास की रचना पहले हिंदी में की और तब उसे उर्दू में प्रकाशित करवाया। बाद की सभी रचनाएँ इसी तरह हिंदी और उर्दू में आगे–पीछे छपती रहीं और वे हिंदी–उर्दू दोनों भाषाओं के मान्य लेखक के रूप में प्रतिष्ठित हुए।

सरस्वती प्रेस की स्थापना के बाद भी प्रेमचंद की आर्थिक परेशानियाँ दूर नहीं हुईं। इस लिए वे दुलारेलाल भार्गव की गंगा पुस्तक माला, लखनऊ में साहित्यिक सलाहकार बनकर गए। यहाँ उनका वेतन 100/रु. मासिक तय हुआ। सितम्बर 1924 से सितम्बर 1925 तक प्रेमचंद लखनऊ में रहे और उसके बाद वापिस लमही आ गए। इसके डेढ़ साल बाद प्रेमचंद पुनः लखनऊ गए। इस बार उन्हें प्रसिद्ध हिंदी पत्रिका 'माधुरी' का संपादक बनाया गया। प्रेमचंद के साथ कृष्ण बिहारी मिश्र भी थे। यहाँ पर वे लगभग छः वर्ष तक रहे। 'सरस्वती प्रेस' बनारस से चल ही रहा था। इस दौरान उनके जीवन में दो महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं। 1924 में ही अलवर नरेश ने प्रेमचंद को अपनी रियासत में बुलाया। उनका वेतन 400 रुपया प्रस्तावित किया तथा इसके साथ बंगला, मोटर और नौकर–चाकर सबकी व्यवस्था की हामी भरी थी। प्रेमचंद ने नम्रतापूर्वक इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। इसी तरह उन्हें अंग्रेज सरकार 'रायसाहब' का खिताब देना चाहती थी। इसे भी उन्होंने अस्वीकार कर दिया। शिवरानी देवी ने 'प्रेमचंद घर में' पुस्तक में इसका उल्लेख किया है। प्रेमचंद हिंदी और उर्दू दोनों भाषाओं के लेखक थे, अतः उनके मन में इन दोनों भाषाओं की एकेडमी बनाने की इच्छा रहती थी। मार्च 1927 में हिन्दुस्तानी एकेडमी का उद्घाटन हुआ। प्रेमचंद इसकी काउंसिल के सदस्य थे। इस एकेडमी ने प्रेमचंद को 'रंगभूमि' उपन्यास पर 500/रु का पुरस्कार प्रदान किया था। धीरे–धीरे प्रेमचंद हिंदी संसार के प्रतिष्ठित लेखक हो गए और उन्हें 'उपन्यास सम्राट' कहा जाने लगा।

BHDC-109_4th proof.indd 33 8/6/2021 2:09:01 PM

इसी दौरान प्रेमचंद पर दो गम्भीर आरोप लगे। अवध उपाध्याय ने क्रमिक लेखन द्वारा यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि उनका उपन्यास 'रंगभूमि' वेनिटी फेयर की नकल है तथा 'प्रेमाश्रम' रिजरेक्शन की नकल है। इसी के साथ ही साथ रामकृष्ण शुक्ल शिलीमुख, ठाकुर श्रीनाथ सिंह और ज्योतिप्रसाद निर्मल ने प्रेमचंद पर आरोप लगाए कि वे ब्राह्मण विरोधी और घृणा के प्रचारक हैं। उस काल की हिंदी पत्र–पत्रिकाओं में इन बातों की खूब चर्चा हुई। जनवरी 1928 की 'माधुरी' में 'पंडित मोटेराम शास्त्री' शीर्षक कहानी प्रकाशित हुई। इस कहानी पर किन्हीं शास्त्री जी ने प्रेमचंद पर मानहानि का मुकदमा कर दिया। यह मुकदमा खारिज हो गया। 1931 में प्रेमचंद ने माधुरी का सम्पादन छोड़ दिया तथा मई 1932 में लखनऊ की नौकरी छोड़ दी। उसके बाद वे लेखन में प्रवृत्त रहे। 8 अक्टूबर 1936 को उनकी मृत्यु हो गई। उनका अंतिम उपन्यास 'मंगलसूत्र' था।

2.3. उपन्यासकार प्रेमचंद

हिंदी–उर्दू में प्रेमचंद की ख्याति एक उपन्यासकार के रूप में हैं। उन्हें हिंदी समाज ने 'उपन्यास सम्राट' की उपाधि दी है। किसी अन्य लेखक को यह उपाधि नहीं मिली है। उन्होंने प्रारम्भ में उर्दू में उपन्यास रचना की, बाद में उन्होंने हिंदी–उर्दू दोनों भाषाओं में लेखन कार्य किया। उनका पहला उर्दू उपन्यास 'हम खुर्मा और हम सवाब' है, जो 1906 में प्रकाशित हुआ। यह सामाजिक उपन्यास है। इसका नायक समाज सुधार के कार्य करता है। हिंदी में यह उपन्यास 'प्रेमा' के नाम से प्रकाशित हुआ। बाद में उन्होंने इस उपन्यास को 'प्रतिज्ञा' शीर्षक से पुनः प्रकाशित किया। इसकी कथा और उद्देश्य को उन्होंने बदल दिया। इसके साथ उन्होंने 'रूठी रानी' शीर्षक एक ऐतिहासिक उपन्यास और 'वरदान' उपन्यास की भी रचना की।

सेवासदन

हिंदी में प्रेमचंद की ख्याति 'सेवासदन' के प्रकाशन से हुई। यह उनके उर्दू उपन्यास 'बाजार–ए–हुस्न' का हिंदी रूपान्तरण है, जो स्वयं प्रेमचंद ने किया। इसका प्रकाशन 1919 में हुआ। इस उपन्यास में समाज की स्थिति और नारी के वेश्या बनने की परिस्थितियों का वर्णन किया गया है तथा इस वेश्या समस्या के निराकरण के लिए 'सेवासदन' की स्थापना की जाती है। 'सुमन' इस उपन्यास की केन्द्रीय पात्र है। प्रेमचंद उपन्यासों में सिर्फ कथा नहीं कहते, कथा के बीच में किसी न किसी सामाजिक–राजनीतिक समस्या का चित्रण करते हैं। इसलिए कुछ आलोचक उन्हें समस्या प्रधान उपन्यासकार कहते हैं। उनके उपन्यासों के केन्द्र में चरित्र नहीं होते, वरन् कुछ ठोस समस्याएँ होती हैं। उनके पात्र उन समस्याओं को जीते हैं और उन पर अपने विचार व्यक्त करते हैं। लेखक के रूप में प्रेमचंद भी उन समस्याओं पर अपना मत रखते हैं और उन समस्याओं को दूर करने के उपाय बताते हैं। यह उनके उपन्यासों का एक पक्ष है और बहुत महत्वपूर्ण पक्ष है। इसके अलावा भी उनके उपन्यासों में सामाजिक जीवन, पात्र, घटनाएँ, उद्देश्य सब होते हैं, जो उस रचना को महत्वपूर्ण कलाकृति बनाते हैं।

'सेवासदन' की मुख्य समस्या भले ही वेश्या समस्या हो, परन्तु इसमें प्रेमचंद ने भारतीय परिवारों में स्त्री की स्थिति, स्त्री–पुरुष संबंधों की असमानता, दहेज जैसी परंपराएँ, मध्यवर्गीय जीवन के सामाजिक–राजनीतिक क्रियाकलाप आदि सभी का चित्रण किया है। इस उपन्यास की समीक्षा उस समय के महत्वपूर्ण आलोचक पद्म सिंह शर्मा और रामदास गौड़ ने की। हिंदी समाज ने उत्साहपूर्वक इस उपन्यास का स्वागत किया तथा उनके अगली उपन्यास की प्रतीक्षा करने लगा। अवध उपाध्याय प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ उपन्यास 'सेवासदन' को ही मानते हैं।

BHDC-109_4th proof.indd 34 8/6/2021 2:09:01 PM

प्रेमाश्रम

'सेवासदन' के बाद किसान जीवन से संबंधित उपन्यास 'प्रेमाश्रम' (1922) में प्रकाशित हुआ। इसकी रचना असहयोग आंदोलन से पहले हो गई थी। असहयोग आंदोलन के पश्चात् प्रेमचंद के दृष्टिकोण में परिवर्तन हो गया था। इसके बाद प्रेमचंद यह लिखते रहे कि अंग्रेजी राज किसानों का सबसे बड़ा शत्रु है। 'प्रेमाश्रम' में वे यह मानते हैं कि जमींदार वर्ग की हस्ती मिट जाने वाली है। इस उपन्यास के मूल में जमींदारी समस्या है। इसमें ज्ञानशंकर और प्रेमशंकर दो पात्र हैं। ज्ञानशंकर जमींदार हैं तथा प्रेमशंकर जमींदारी से दूर हटकर किसानों के लिए प्रेमाश्रम की स्थापना करता है। इस उपन्यास का नायक कोई एक पात्र नहीं है, वरन् लखनपुर गाँव के सारे किसान इस उपन्यास के नायक हैं। उपन्यास के अंत में माया शंकर जमींदारी से इस्तीफा दे देता है और अब सभी किसान खुशहाल हैं। इसी में प्रेमचंद ने नए और पुराने जमींदारों की तुलना भी की है। नया जमींदार, जमींदारी को लाभ की दृष्टि से देखता है, जबकि पुराने जमींदार इसे प्रतिष्ठा और परंपरा की दृष्टि से देखते थे।

रंगभूमि

इसके बाद उनके उपन्यास 'रंगभूमि' का प्रकाशन हुआ। यह असहयोग आंदोलन के स्थगित होने के बाद लिखा गया तथा 1925 में प्रकाशित हुआ। इसे आलोचकों ने महाकाव्यात्मक उपन्यास की संज्ञा दी। प्रेमचंद के जीवनी लेखक अमृतराय ने लिखा है कि यह पहला उपन्यास है जो पहले हिंदी में लिखा गया और बाद में इसका उर्दू रूपान्तरण प्रकाशित हुआ। इस उपन्यास का केन्द्रीय पात्र नेत्रहीन (दिव्यांग) भिखारी सूरदास है। सूरदास की जमीन को उद्योगपति जॉन सेवक लेना चाहता है। सूरदास उससे सहमत नहीं होता। जमीन के बाद वह पाण्डेपुर की आवासीय जमीन और उसका झोंपड़ा भी लेना चाहता है। फिर संघर्ष होता है। आंदोलन होता है। इस आंदोलन में दो दल बन जाते हैं। राजा महेन्द्र प्रताप, अखबार वाले, सरकार सब जॉन सेवक का पक्ष लेते हैं। विनय और सोफिया, सूरदास का समर्थन करते हैं। अंत में सूरदास मारा जाता है। जॉन सेवक का कारखाना खुल जाता है। नगरीकरण की यह प्रक्रिया पूरी होती है। इन सबका प्रेमचंद ने विस्तार से चित्रण किया है। इसमें पहली बार एक अंग्रेज़ कलेक्टर मि–क्लार्क पात्र के रूप में आते हैं और वे साम्राज्यवादी नीति को स्पष्ट करते हैं कि सभी अंग्रेज़ भारत को अनन्त काल तक अपने अधीन रखना चाहते हैं जमींदार और राजा तभी तक अंग्रेज़ों के मित्र हैं, जब तक वे उनके साम्राज्य को बनाए रखने में मदद करते हैं। उस समय के चर्चित आलोचक अवध उपाध्याय ने 'सरस्वती' पत्रिका में धारावाहिक रूप से यह प्रमाणित करने का प्रयास किया कि 'रंगभूमि' 'वेनिटी फेयर' का अनुवाद है।

निर्मला

'रंगभूमि' के पश्चात् प्रेमचंद ने 'निर्मला' उपन्यास की रचना की। यह उपन्यास 'चाँद' पत्रिका में नवम्बर, 1925 से नवम्बर 1926 तक प्रकाशित हुआ। इसमें दहेज प्रथा के कारण उत्पन्न बेमेल विवाह की समस्या का चित्रण किया गया है। यह नायिका प्रधान उपन्यास है और निर्मला इस उपन्यास की नायिका है। प्रेमचंद अपने उपन्यासों में स्त्री–पुरुष भेद की चर्चा अवश्य करते हैं तथा इस आधार पर स्त्री की पीड़ा का वर्णन करते हैं। यह ऐसा पहला उपन्यास है, जिसमें स्वाधीनता आंदोलन का वर्णन नहीं किया गया है। आमतौर से प्रेमचंद किसान जीवन और स्वाधीनता आंदोलन का चित्रण अवश्य करते हैं। इसमें बेमेल विवाह के कारण युवा नारी की ''धीमी–धीमी हत्या'' होती है। इस कारण इस उपन्यास का अंत कारुणिक होता है। किसी तरह का आश्रम या आदर्शवादी आकांक्षा इस उपन्यास में नहीं है, जो उनके अब तक के उपन्यासों में रही है। 'सेवासदन' की सुमन अपने ढंग से प्रतिकार करती है और अंत में वेश्याओं के

BHDC-109_4th proof.indd 35 8/6/2021 2:09:01 PM

'सेवासदन' में पहुँच जाती है। निर्मला कोई प्रतिकार नहीं करती। वह अपने यथार्थ को अपनी नियति मानकर अपना जीवन बिता लेती है।

कायाकल्प

इसके बाद उनका अपेक्षाकृत कमजोर उपन्यास 'कायाकल्प' प्रकाशित होता है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने सामाजिक–राजनीतिक जीवन के साथ अलौकिक–धार्मिक कल्पनाओं को भी चित्रित कर रखा है। इस तरह उपन्यास के दो केन्द्र हैं। एक केन्द्र में जगदीशपुर की रानी देवप्रिया का भोग विलास है। दूसरी के केन्द्र में चक्रधर है, जो इन दोनों कथाओं को जोड़ता है। पहले भाग में धर्म और विज्ञान तथा योग और भोग को मिलाकर चिर यौवन प्राप्त करने की आकांक्षा है। राजनीतिक कथा में साम्प्रदायिक दंगे तथा जन–जागरण की कथा है। 'रंगभूमि' में सूरदास की पराजय के बावजूद लेखक के मन में आशावाद बचा रहता है। 'कायाकल्प' में ऐसी कोई आशा नहीं है।

गबन

'गबन' उपन्यास के लेखन का प्रारम्भ सविनय अवज्ञा आंदोलन से पहले हो जाता है। तब प्रेमचंद स्त्रियों की आभूषण प्रियता की कहानी कहना प्रारम्भ करते हैं। कुछ दिनों तक यह कहानी चलती है। इस बीच में सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारम्भ हो जाता है। इस उपन्यास का नायक रमानाथ अविचारशील मध्यवर्गीय पात्र है। इसमें अंग्रेज सरकार द्वारा स्वाधीनता सेनानियों की प्रताड़ना का वर्णन भी किया गया है। प्रेमचंद के उपन्यासों में पुलिस अब तक अपेक्षाकृत स्वतंत्र रूप में आती है जो किसानों पर अत्याचार करने में जमींदारों का सहयोग करती है। परन्तु इस उपन्यास में पुलिस अंग्रेज सरकार के प्रतिनिधि के रूप में सामने आती है। पुलिस की प्रताड़ना के खिलाफ जन आक्रोश उमड़ता है। प्रेमचंद ने इस आक्रोश का सहानुभूति पूर्वक चित्रण करते हैं। उपन्यास की नायिका जालपा है, जिसका उपन्यास में चारित्रिक परिवर्तन और विकास होता है। आरम्भ में वह आभूषण प्रिय मध्यवर्गीय नारी है। बाद में वह ओजस्वी और क्रांतिकारी रूप सामने आती है और वह अपने प्रेरक व्यक्तित्व से अपने पति रमानाथ में साहस का संचार करती है। इसमें कुछ अन्य प्रभावशाली पात्र और कथाएँ भी हैं। इन पात्रों में देवीदीन खटिक, रतन, आदि मुख्य हैं। इसमें प्रेमचंद ने उस कानून को बदलने की वकालत भी की है जिसमें पति की मृत्यु के बाद सम्पत्ति पत्नी को नहीं मिल पाती थी। इस विषय पर प्रेमचंद ने लेख और कहानियाँ भी लिखी हैं।

कर्मभूमि

'गबन' के पश्चात् प्रेमचंद का महत्वाकांक्षी उपन्यास 'कर्मभूमि' प्रकाशित हुआ। आलोचकों का विचार है कि इस उपन्यास में प्रेमचंद ने 'प्रेमाश्रम' और 'रंगभूमि' की कथा भूमि को मिलाने का प्रयास किया है। अर्थात् इस उपन्यास में किसान जीवन और नगर में चलने वाले आंदोलन शामिल किए गए हैं। इस उपन्यास में पहली बार अंग्रेजी सिपाही आते हैं। वे मुन्नी का बलात्कार कर देते हैं। कुछ दिनों बाद मुन्नी उन अंग्रेज सिपाहियों का वध कर देती है। इस पर पुलिस मुन्नी को गिरफ्तार कर लेती है। मुन्नी के समर्थन में आंदोलन हो जाता है। इस उपन्यास में प्रेमचंद ने लगान बंदी आंदोलन का चित्रण किया है। इसी के साथ अछूतों (कर्मभूमि के संदर्भ में) के मन्दिर प्रवेश की समस्या आती है। यहाँ सवर्णों से टकराव होता है। इस आंदोलन का प्रमुख पात्र अमरकांत है इसके अलावा सुखदा, मुन्नी, डॉ. शान्ति कुमार, सकीना आदि हैं। उपन्यास में गाँव और शहर के आंदोलन मिल जाते हैं। यह उनमें भाग लेने वाले पात्रों के कारण सम्भव हो पाता है। सरकारी आंदोलन और आंदोलनकारियों के कारण आंदोलन असफल हो जाता है। सरकार और आंदोलनकारियों में एकता स्थापित हो जाती है जो प्रेमचंद के अनुसार क्षणिक है। ऐसा आंदोलन पुनः होगा। इस आंदोलन से और कोई फायदा हुआ हो या

BHDC-109_4th proof.indd 36 8/6/2021 2:09:01 PM

न हुआ, जनजागृति जरूर हुई है जो इस आंदोलन के बिना संभव नहीं थी। कलात्मक दृष्टि से यह प्रेमचंद का कमज़ोर उपन्यास है।

गोदान

प्रेमचंद का अंतिम पूर्ण उपन्यास 'गोदान' है। इस उपन्यास के प्रमुख पात्र होरी और धनिया हैं, जो भारतीय किसान के प्रतिनिधि चरित्र हैं। होरी ढीला–ढाला और दब्बू पात्र है, लेकिन धनिया तेज–तर्रार है। होरी का बेटा गोबर शहर चला जाता है जहाँ वह मेहता और मालती के सम्पर्क में आता है। इस उपन्यास में राय साहब अमरपाल सिंह, झिंगुरी सिंह, पंडित दाता दीन, पटेश्वरी, बैंकर खन्ना आदि खल पात्र हैं। इसमें प्रेमचंद ने किसी आश्रम की स्थापना नहीं की, वरन् पूरी निर्भीकता से किसानों के शोषण की कथा कही है। होरी एक सीमान्त किसान है। वह धनी किसान नहीं है। गोदान में गाँव और शहर दोनों की कथाएँ साथ–साथ चलती हैं। कभी मिल जाती हैं और कभी अलग हो जाती हैं। उपन्यास की मूल कथा के साथ अनेक उपकथाएँ भी चलती रहती हैं, जो उपन्यास के अर्थ भूमि का विस्तार करती है।

प्रेमचंद अन्ततः किसानों के लेखक माने जाते हैं, हालाँकि उन्होंने अपने उपन्यासों और कहानियों में सम्पूर्ण समाज का चित्रण करने का प्रयास किया है। प्रेमचंद साहित्य का समग्र विश्लेषण करते हुए कहा जा सकता है कि प्रेमचंद साहित्य की विषयवस्तु तो भारतीय किसान का जीवन है, लेकिन उनके साहित्य का पाठक शिक्षित मध्यवर्ग है। प्रेमचंद मध्यवर्ग को किसानों का पक्षधर बनाना चाहते हैं। उन्हें अपने गाँव की कहानी देहात से अनभिज्ञ पढ़े–लिखे पाठक को सुनानी है। इसलिए उनको एक तरफ तो यह ध्यान रखना पड़ता है कि पाठक के मानस पटल पर किसान जीवन का नक्शा उतर आए– जो न इतना अपरिचित हो कि शिक्षित वर्ग उससे तादात्म्य ही न कर पाए और न इतना परिचित हो कि शहरी जीवन से अलग उसकी पहचान ही न बन पाए। इस कहानी को प्रेमचंद इस तरह से सुनाते हैं, जिससे पढ़ने वाला किसानों का पक्षधर हो जाये। इसके साथ ही प्रेमचंद को अशिक्षित किसानों के भावों को भाषा में बाँधना है। अपढ़ जनता की बोली को पठनीय बनाना और उसके मूल भाव को बचाना बहुत ही कठिन काम है। प्रेमचंद इसमें पूरी तरह से सफल हुए हैं। उन्होंने किसानों की समस्याओं का वर्णन इस दृष्टि से किया है जिससे स्वाधीनता आंदोलन में मदद मिल सके। प्रेमचंद का अन्तिम अपूर्ण उपन्यास **'मंगलसूत्र'** है, जो उनकी मृत्यु के बाद प्रकाशित हुआ।

प्रेमचंद का लेखन और उनके विचार निरंतर विकासमान थे। उनमें उन्होंने लगातार परिवर्तन किए। यदि वे और जवित रहते तो हम उनके विचारों को पूर्ण रूप से समझ पाते। इसलिए कई मुद्दों पर प्रेमचंद के विचार हमें अपर्याप्त लगते हैं। कहीं–कहीं अन्तर्विरोध भी दिखाई देता है। कहीं–कहीं हम आधुनिक दृष्टि से उनमें असंगति भी पाते हैं। तब भी निस्संदेह प्रेमचंद हिंदी उपन्यास के इतिहास में एक महत्वपूर्ण हस्ती हैं।

बोध प्रश्न

1. निम्नलिखित कथनों में से सही पर (✓) का तथा गलत पर (✗) का निशान लगाइएः
   (क) प्रेमचंद का विवाह आर्यसमाज के प्रभाव से हुआ। (सही / गलत)
   (ख) प्रेमचंद अन्ततः किसानों के लेखक माने जाते हैं। (सही / गलत)
   (ग) गबन की नायिक जालपा के विचारों में कोई परिवर्तन नहीं होता। (सही / गलत)
2. रिक्त स्थानों की पूर्ति उपयुक्त विकल्पों द्वारा कीजिए :
   (क) 'सेवासदन' की नायिका ..... थी। (मनोरमा / सुमन)

BHDC-109_4th proof.indd 37 8/6/2021 2:09:01 PM

(ख) प्रेमचंद जमींदार विहीन गाँव की कल्पना ..... उपन्यास में की।
(प्रेमाश्रम / कर्मभूमि)

(ग) 'गबन' के पश्चात् प्रेमचंद का उपन्यास ..... प्रकाशित हुआ।
(कर्मभूमि / प्रेम की वेदी)

3. 'रंगभूमि' के तीन प्रमुख पात्रों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

2.4 प्रेमचंद का रचना वैशिष्ट्य

प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास के क्षेत्र में युगान्तकारी परिवर्तन किया। उन्होंने अपने युग के सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा सांस्कृतिक जीवन के सूक्ष्म अध्ययन और अनुभव से प्रेरित होकर मानव चेतना, युगीन संघर्ष तथा मानवीय मन के भावों और विचारों को सरल, प्रवाहमय, सशक्त भाषा में प्रस्तुत किया।

2.4.1 प्रेमचंद के औपन्यासिक पात्र

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में मानव चरित्र का चित्रांकन करना ही श्रेष्ठ साधन माना है। अर्थात् वे उपन्यास के पात्रों द्वारा मानव मन की वास्तविकताओं को उद्घाटित करना चाहते हैं और इस कार्य में उन्हें पूर्ण सफलता मिली है। मानव चरित्र के यथार्थ चित्रण के लिए उन्होंने समाज के सभी वर्गों को बहुत निकट से देखा और उनका सूक्ष्म निरीक्षण किया। ज़मींदार, साहूकार, दरोगा, हाकिम, पटवारी, किसान आदि वर्गों की प्रवृत्ति को वे भली-भाँति जानते थे। चूँकि उनका जीवन ग्रामीण वातावरण से ही आरंभ हुआ इसीलिए स्वाभाविक रूप से वे ग्रामीण जीवन की विशेषताओं से परिचित थे। ग्रामीण जीवन के पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक विविध रूपों को वे भली-भाँति जानते थे। परिस्थिति के अनुकूल मानव मन में क्या परिवर्तन होता है, व्यक्ति विशेष के आकार प्रकार, वेशभूषा, आचार-व्यवहार, बोली आदि का उन्होंने निरीक्षण किया था। यही कारण है कि वे पात्रों का यथार्थ चित्रण कर पाए। प्रेमचंद के औपन्यासिक पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं को हम निम्नलिखित रूप में रख सकते हैं।

i) अपने औपन्यासिक पात्रों की रचना उन्होंने तत्कालीन परिवेश अर्थात् उस युग के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक स्थिति के अनुकूल की।

ii) मज़दूरों और किसान वर्ग के पात्रों के प्रति उनकी गहरी सहानुभूति थी। अतः इन वर्गों के पात्रों के प्रति सहानुभूति तथा शोषक वर्ग यानी ज़मींदार, और उनके मातहत काम करने वाले अधिकारी और कर्मचारी, ब्राह्मण वर्ग, सरकारी अफसर और कारिंदे आदि के प्रति आक्रोश व्यक्त किया।

iii) उनके संपूर्ण औपन्यासिक पात्रों को हम मोटे रूप से दो वर्गों में रख सकते हैं–(1) शोषक (2) शोषित। उन्होंने शोषितों की दयनीय स्थिति का चित्रण किया है और शोषकों की कमज़ोरियों को उजागर किया है।

iv) उनके सभी पात्र सामाजिक वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं। सुमन, निर्मला, सूरदास, राय साहब, खन्ना, होरी, धनिया, गोबर, सोफिया सभी सामाजिक वर्गों के प्रतिनिधि हैं।

v) युगों से उपेक्षित नारी को पुरुष की सहयोगी और प्रेरक शक्ति के रूप में उपस्थित किया है। नारी पर हो रहे अत्याचार को दर्शाने के लिए उन्होंने सुमन,

BHDC-109_4th proof.indd 38 8/6/2021 2:09:01 PM

निर्मला, सुखदा, मालती, सुधा, जालपा, धनिया आदि की रचना की है। उनके नारी पात्र एक ओर सामान्य रूप से पुरुष की सहधर्मिणी हैं, तो दूसरी ओर परिस्थिति के अनुसार उसमें बदलाव भी आता है। वह घर की चारदीवारी से बाहर आकर पुरुष के साथ कंधे से कंधा मिलाकर आंदोलन में भी सहयोग देती है। प्रेमचंद ने नारी पात्रों में स्वाभाविक गुण-अवगुण का यथार्थ चित्रण किया है।

vi) प्रेमचंद के उपन्यासों में स्त्री-पुरुष दोनों को नायक-नायिका के रूप में रखा गया है। 'गोदान' में होरी नायक है, तो 'सेवासदन' में सुमन नायिका है।

इस प्रकार प्रेमचंद के सभी औपन्यासिक पात्र प्रायः समाज के सभी वर्गों के प्रतिनिधि के रूप में उपस्थित किए गए हैं। अधिकतर पात्र सजीव और सशक्त बन पड़े हैं। मानवीय चरित्र के सूक्ष्म चित्रण के कारण ही पात्र स्वाभाविक बने हैं।

2.4.2 प्रेमचंद के उपन्यासों में देशकाल

आप यह जान चुके हैं कि उपन्यास में वास्तविकता, स्वाभाविकता और सजीवता लाने के लिए देशकाल और वातावरण का सही चित्रण होना चाहिए। उपन्यासकार जिस देशकाल और वातावरण को अपने उपन्यास में स्थान देता है, उसका सही-सही ज्ञान भी उसे होना चाहिए। प्रेमचंद अपने युग के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक सभी परिवेश को भली-भाँति जानते थे। यही कारण है कि उनके उपन्यासों में परिवेश का यथार्थ चित्रण हो पाया है। परिवेश का निर्माण पात्रों की वेशभूषा, शृंगार, कलाएँ, रहन-सहन, रीति-रिवाज, आचार-विचार, आहार-विहार, पर्व-उत्सव, भाषा आदि के समावेश से होता है। इन सभी बातों का समय और स्थान के अनुकूल चित्रण कर वे परिवेश में वास्तविकता लाते हैं। प्रेमचंद का साहित्य उनके युग के उतार-चढ़ाव तथा विविध राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक गतिविधियों का ऐतिहासिक दस्तावेज़ है। इनमें वर्ग-संघर्ष है, शोषणयुक्त समाज का चित्रण है, तत्कलीन समाज में व्याप्त पाखंड, धूर्तता, अन्याय, बलात्कार तथा अत्याचार से पीड़ित लोगों का चित्रण है। तत्कालीन भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को उन्होंने रंगभूमि, प्रेमाश्रम, कर्मभूमि, ग़बन आदि उपन्यासों में प्रमुख स्थान दिया। भारतीय समाज में व्याप्त एक बड़ी बुराई दलितों के साथ अमानुषिक व्यवहार को भी उन्होंने कथा का आधार बनाया। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का तत्कालीन स्वतंत्रता आंदोलन में प्रभाव और उनकी विचारधारा को भी प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों के द्वारा दर्शाया।

तत्कालीन समाज में व्याप्त कुरीतियाँ अंधविश्वास, वैमनस्य, बाह्य आडंबर, झूठी मान-मर्यादा आदि सभी का यथार्थ चित्रण किया गया है। गाँवों और शहरों दोनों को प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में स्थान दिया। नगर के वैभव, यातायात, मकान, कल-कारखाने आदि का चित्रण किया। गाँव के पशु-पक्षी, वन, उपवन, नदी-नाले, बाढ़, खेत खलिहान सभी का यथार्थ चित्रण किया।

पात्रों के क्रियाकलापों द्वारा परिवेश को तत्कालीन देशकाल के अनुकूल बनाया गया है। लेखक जिन बातों से भली-भाँति परिचित था उसे ही अपना वर्ण्य विषय बनाया है। पात्रों के झगड़े, चौपाल, टीका-टिप्पणी, सभी परिवेश के अनुकूल हैं। आप 'निर्मला' उपन्यास का अध्ययन करने की प्रक्रिया में इन्हीं विशेषताओं को देख सकेंगे।

2.4.3 प्रेमचंद के उपन्यासों की भाषा

भाषा उपन्यास का महत्त्वपूर्ण उपकरण है। यह भावों और विचारों के वहन का माध्यम है। लेखक कथा में स्वाभाविकता लाने के लिए भाषा को भी पात्र, घटनाएँ, देशकाल के अनुरूप रखता है। मुहावरों, लोकोक्तियों का प्रयोग कर भाषा में स्वाभाविकता लाता है। सरल, बोधगम्य और व्यवहारोपयोगी भाषा द्वारा ही लेखक अपनी बात पाठक तक पहुँचा सकता है।

BHDC-109_4th proof.indd 39 8/6/2021 2:09:01 PM

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में उपुर्यक्त बातों का ध्यान रखा है। उन्होंने व्यवहारोपयोगी, पात्रानुकूल तथा मुहावरेदार भाषा का प्रयोग किया है। प्रेमचंद आरंभ में उर्दू लिखते थे इसीलिए हिंदी में लेखन कार्य करते हुए उर्दू के शब्दों का प्रयोग स्वभावतः आ गया है। प्रेमचंद की भाषा की प्रशंसा करते हुए पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लिखा है–

''भाषा में बंगला का अनुकरण केवल शब्दों और मुहावरों में ही नहीं, नामों और विचारों तक में किया जा रहा था। प्रेमचंद ने पहले-पहल इन काल्पनिक चौराहों को ठोकर मारकर तोड़ दिया, उन्होंने हिंदी को हर प्रकार से हिंदी किया। उन्होंने हिंदी उर्दू भेद को कम कर दिया और भाषा में नई प्राण शक्ति फूँक दी।''

2.4.4 प्रेमचंद का औपन्यासिक शिल्प

आप जानते हैं कि प्रेमचंद से पहले के उपन्यासों में घटना प्रधान उपन्यासों की प्रधानता थी। विचित्र घटनाओं और नायक के अद्‌भुत कारनामों द्वारा पाठक का मनोरंजन किया जाता था। जीवन के यथार्थ से पहले के उपन्यास दूर थे। उपदेशात्मकता और कृत्रिम संवादों की भरमार होती थी। पात्रों में अस्वाभाविकता भरी होती थी। प्रेमचंद ने उपन्यास शिल्प को इनसे मुक्ति दिलायी। उन्होंने जीवन के यथार्थ को कथा का आधार बनाया, मानव जीवन के दैनिक क्रियाकलापों और घटनाओं की वास्तविकताओं को कथा में स्थान दिया। घटनाओं को कार्य कारण की शृंखला से जोड़ा। पात्रों का मनोवैज्ञानिक चित्रण कर उन्हें सजीव बनाया। पात्रों के कार्य और परिस्थिति में संबंध स्थापित किया। समग्र रूप से उन्होंने औपन्यासिक शिल्प को अवास्तविकता की जगह यथार्थवादी और व्यावहारिक रूप प्रदान किया। संवाद को दैनिक जीवन के वार्तालाप जैसा बनाया और जीवन को एक निश्चित दृष्टि दी। प्रेमचंद की साहित्यिक रचनाओं में शैली की भिन्नता पाई जाती है। उन्होंने वर्णनात्मक, आलंकारिक, चित्रात्मक और व्यंग्य शैली का प्रयोग किया है।

2.4.5 प्रेमचंद के उपन्यासों की सोद्‌देश्यता

रचनाकार अपनी रचना किसी न किसी उद्‌देश्य से रचता है। उपन्यास विधा मानव जीवन के चित्र को विस्तृत रूप में उपस्थित करने का सशक्त माध्यम है। स्वयं प्रेमचंद उपन्यास को मानव जीवन को व्याख्यायित करने का सशक्त माध्यम मानते हैं।

हिंदी के प्रेमचंद–पूर्व उपन्यासों का मुख्य उद्‌देश्य मनोरंजन करना था। प्रेमचंद ने सर्वप्रथम उपन्यासों के माध्यम से जीवन दर्शन प्रस्तुत किया। उनके उपन्यासों के पीछे कोई न कोई उद्‌देश्य छिपा हुआ है। उपन्यास के माध्यम से यथार्थ परिवेश में जीवन को रखकर सामाजिक पात्रों की सबलता-दुर्बलता का चित्रण किया गया है। उनके उपन्यासों में युग चेतना प्रतिबिंबित हुई है। तत्कालीन सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियों का यथार्थ चित्रण किया गया है।

प्रेमचंद के उपन्यासों को पढ़ने के बाद ऊपरी तौर पर यह बात स्पष्ट होती है कि उन्होंने युग की समस्याओं को ही प्रमुखता दी। लेकिन गहराई से अध्ययन करने पर यह बात भी स्पष्ट होती है कि उन्होंने तत्कालीन प्रासंगिकता के साथ-साथ मानव जीवन की शाश्वत समस्याओं को भी प्रस्तुत किया है। वे शोषण के खिलाफ मानवीय संघर्ष को ही प्रस्तुत करना चाहते हैं। उपन्यास ही नहीं उनके समग्र साहित्यिक रचनाओं के विश्लेषण से यह बात स्पष्ट होती है कि उन्होंने सामाजिक स्तर पर जीवन की विविधताओं का चित्रण किया। घिसी-पिटी परंपराओं की जगह नवीन मूल्यों की स्थापना का प्रयास किया। मानव के अंदर स्वाभाविक रूप से आदर्श की ओर बढ़ने की भावना को उन्होंने प्रमुख स्थान दिया। उनके उपन्यासों का अध्ययन करने के बाद यह भी पता चलता है कि मध्यवर्ग तथा निम्न वर्ग की सामाजिक विशेषताओं का विश्लेशण करना भी उनका उद्‌देश्य था। मानव की सबलताओं और दुर्बलताओं को यथार्थ रूप में प्रस्तुत करना भी

BHDC-109_4th proof.indd 40 8/6/2021 2:09:01 PM

उसका उद्देश्य था। प्रेमचंद ने अपने उन उपन्यासों में भी जिनमें उन्होंने तत्कालीन भारत में चल रहे स्वतंत्रता आंदोलन को प्रमुख स्थान दिया है, मानव में सद्वृत्ति के द्वारा संघर्ष पर विजय प्राप्त करने की प्रवृत्ति को ही प्रमुख स्थान दिया है।

इस प्रकार समग्र रूप से प्रेमचंद हिंदी साहित्य की उन विभूतियों में से थे, जिन्होंने हिंदी साहित्य को विश्व स्तर की ऊँचाई तक पहुँचाया।

प्रेमचंद के समकालीन जयशंकर प्रसाद के उपन्यास में भावात्मकता और अंतःसंघर्ष पर विशेष जोर दिया गया। प्रेमचंद ने शिल्प आदि की दृष्टि से हिंदी उपन्यास में जो आदर्श उपस्थित किया, उसका पालन बाद के उपन्यासकारों ने भी किया। भगवतीचरण वर्मा, यशपाल, उपेन्द्रनाथ अश्क, नागार्जुन के उपन्यासों में प्रेमचंद के शिल्प का ही विकास दृष्टिगत होता है।

बोध प्रश्न

4. प्रेमचंद के उपन्यासों में देशकाल का यथार्थ चित्रण मिलता है, समझाइए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

5. प्रेमचंद के उपन्यासों की भाषागत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

6. प्रेमचंद के उपन्यास लेखन के कारणों का संक्षिप्त उल्लेख कीजिए।

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

2.5 सारांश

उपन्यास विधा साहित्य की सबसे लोकप्रिय विधा है। लेखक जब कोई उपन्यास लिखता है तो उसके द्वारा कोई संदेश देना चाहता है। प्रेमचंद का नाम हिंदी में जयशंकर प्रसाद

BHDC-109_4th proof.indd 41 8/6/2021 2:09:01 PM

और आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के साथ लिया जाता है। इन तीनों महत्वपूर्ण लेखकों का संबंध बनारस से है। हिंदी उपन्यास के इतिहास में प्रेमचंद के काल को प्रेमचंद युग के नाम से जाना जाता है। उन्हें हिंदी समाज उपन्यास सम्राट के रूप में भी जानता है। इसी तरह कहानी के विकास में यह प्रेमचंद और प्रसाद का काल माना जाता है। दोनों लेखकों की कहानियाँ दो भिन्न रचना दृष्टियों का प्रतिनिधित्व करती है। प्रेमचंद साहित्य का विकास उस युग की राजनीतिक स्थितियों के अनुरूप हुआ। वे स्वाधीनता आंदोलन के युग में, स्वाधीनता के पक्ष में साहित्य सृजन कर रहे थे। इसके साथ उनकी रुचि समाज सुधार और साम्प्रदायिक सद्भाव की ओर भी थी। वे एक जागरूक रचनाकार थे और अपने लेखन द्वारा समाज में जागरूकता फैलाना चाहते थे।

प्रेमचंद ने हिंदी उपन्यास को अवास्तविक और रोमांचकारी घटनाओं के वर्णन के घेरे से बाहर निकाला। उन्होंने अपने उपन्यासों में समाज के शोषित, उत्पीड़ित वर्ग का यथार्थ चित्रण किया। आप उपन्यास से संबंधित उन विशेषताओं का विश्लेषण कर सकते हैं जिनके कारण प्रेमचंद हिंदी उपन्यास के सम्राट कहलाए।

2.6 बोध प्रश्नों के उत्तर

1. (क) ✓ (ख) ✓ (ग) ✓
2. (क) सुमन (ख) प्रेमाश्रम (ग) कर्मभूमि
3. सूरदास, सोफिया, मि–क्लार्क
4. प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में देश और काल का सुंदर चित्रण किया है। चाहे शहर का वर्णन हो या गाँव का सभी वास्तविक लगते हैं। उन्होंने समाज का सूक्ष्म निरीक्षण किया था। स्थान विशेष की विशेषताओं से परिचित होने के कारण युगीन परिस्थिति का यथार्थ चित्रण किया गया है। गाँव के खेत, खलिहान, चौपाल, पशुधन, नदी, नाले आदि प्राकृति दृश्यों का चित्रण भी अत्यंतजीवंत और वास्तविक बन पड़े हैं।
5. प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में सरल, सहज, मुहावरेदार तथा पात्रानुकूल भाषा का प्रयोग किया है। बोलचाल की भाषा के प्रयोग से इसमें संप्रेषणीयता का गुण बढ़ गया है। शहर और ग्राम के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया गया है। उनकी भाषा में जहां प्रचलित संस्कृत और अरबी-फ़ारसी के शब्दों का प्रयोग मिलता है वहीं देशज तथा अंग्रेजी के प्रचलित शब्द भी मिलते हैं। ग्रामीण, शहरी, शिक्षित, अशिक्षित सभी प्रकार के पात्रों के अनुसार भाषा का प्रयोग किया गया है। मुहावरे और लोकोक्तियों के प्रयोग से भाषा में सहजता और सुंदरता आ गयी है।
6. प्रेमचंद के सभी उपन्यास किसी न किसी उद्देश्य को ध्यान में रखकर लिखे गए हैं। वे उपन्यासों के माध्यम से कभी सामाजिक समस्या को उठाते हैं, कभी राजनीतिक समस्या को। तत्कालीन समाज की बुराइयों को सामने लाकर उसमें सुधार की प्रवृति को जगाना ही उनका लक्ष्य है। मनुष्य की प्रकृत्ति किसी भी प्रकार की क्यों न हो उसके अंदर यह भावना अवश्य निहित है कि वह जैसा है उससे अच्छा बनना चाहता है। मानव मन के भावों को उभारते हुए उन्होंने समाज की समस्याओं को रखा है। तत्कालीन भारत की राजनीतिक परिस्थिति तथा जन आंदोलन के चित्रण द्वारा जनता में जागृति लाना भी उनके उपन्यासों का एक प्रमुख उद्देश्य था। मनुष्य की आशावादी प्रवृत्ति को भी उन्होंने ध्यान में रखा है।

BHDC-109_4th proof.indd 42 8/6/2021 2:09:01 PM

इकाई 3 'निर्मला' : कथावस्तु

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 कथावस्तु

- 3.2.1 कथावस्तु के प्रकार
- 3.2.2 कथावस्तु के गुण
- 3.2.3 कथावस्तु के विकास की पद्धति

3.3 'निर्मला' की कथा

- 3.3.1 कथा का आरंभ
- 3.3.2 कथा का विकास
- 3.3.3 कथा की परिणति

3.4 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु की विशेषताएँ

3.5 शीर्षक की सार्थकता

3.6 संदर्भ सहित व्याख्या

3.7 सारांश

3.8 शब्दावली

3.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

3.0 उद्देश्य

आप 'निर्मला' उपन्यास का अध्ययन कर रहे हैं। इस इकाई में उक्त उपन्यास की कथावस्तु पर विचार किया जाएगा। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- कथावस्तु के बारे में बता सकेंगे;
- उपन्यास की मुख्य कथा और प्रासंगिक कथाओं के बारे में बता सकेंगे;
- 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु का विश्लेषण कर सकेंगे;
- इस उपन्यास की कथावस्तु के आरंभ, विकास तथा परिणति को बता सकेंगे; और
- 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु की विशेषताओं को पहचान सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

आप उपन्यास विधा का अध्ययन कर रहे हैं। आपने अब तक दो इकाइयों का अध्ययन किया है। इस खंड की पहली इकाई में आपने उपन्यास विधा के स्वरूप तथा हिंदी उपन्यास के विकास का अध्ययन किया था। आपने इकाई–2 में प्रेमचंद और उनके उपन्यास साहित्य के साथ–साथ उनके उपन्यासों की विशेषताओं के संदर्भ में भी जान लिया है। अब हम आगे की तीन इकाइयों में 'निर्मला' उपन्यास के विभिन्न पक्षों की विशेषताओं का अध्ययन करेंगे। उपन्यास की कथावस्तु, उसके प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ, भाषा और शैली संबंधी विशेषताएँ, निर्मला का परिवेश और प्रतिपाद्य इन सभी पक्षों के बारे में अलग–अलग इकाइयों में चर्चा की जाएगी। इस इकाई में उपन्यास

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

की कथावस्तु पर विस्तार से चर्चा करेंगे। 'निर्मला' उपन्यास के संदर्भ में कथावस्तु क्या है, कथावस्तु का आरंभ कैसे होता है, किस प्रकार कथावस्तु विस्तार पाती है तथा किस प्रकार कथा की परिणति होती है इन सब बातों की जानकारी हम आपको इस इकाई के माध्यम से कराएँगे।

3.2 कथावस्तु

आपने इकाई 1 में 'हिंदी उपन्यास : स्वरूप और विकास' के अंतर्गत उपन्यास के विभिन्न तत्वों की जानकारी प्राप्त कर ली है। आपने देखा कि कथावस्तु ही उपन्यास का मुख्य आधार है। उपन्यास में घटित घटनाएँ ही कथावस्तु का रूप लेती हैं। आप यह भी जान चुके हैं कि उपन्यास का आकार बड़ा होता है, बड़ी से बड़ी कहानी भी छोटे से उपन्यास की तुलना में छोटी होती है। यही कारण है कि उपन्यास में एक मुख्य कथा के साथ कई प्रासंगिक कथाओं की रचना की जाती है। आइए, सबसे पहले हम उपन्यास की कथावस्तु के विभिन्न प्रकारों की चर्चा करें।

3.2.1 कथावस्तु के प्रकार

उपन्यास का आकार बड़ा होता है, लेखक को पूर्ण स्वतंत्रता रहती है कि वह कथावस्तु को विस्तार दे, उपन्यासकार किसी उद्देश्य को लेकर उपन्यास की रचना करता है। उद्देश्य की पूर्ति के लिए वह मुख्य कथा की रचना करता है। मुख्य कथा के विस्तार के लिए उपकथा या प्रासंगिक कथा की रचना करता है। इस प्रकार मुख्य रूप से उपन्यास की कथावस्तु दो प्रकार की होती है :

1) मुख्य कथा 2) प्रासंगिक कथा

मुख्य कथा उसे कहते हैं जो उपन्यास में आरंभ से अंत तक चले। उदाहरण के लिए आप 'निर्मला' के उपन्यास की मूल कथा को देखें। इसमें निर्मला के संपूर्ण जीवन को लेखक ने मुख्य कथा के रूप में चुना है। नायिका के परिचय से कथा का आरंभ होता है। उसके विवाह की बात टूटने दूसरी जगह अनमेल विवाह होने पारिवारिक जीवन की एक के बाद एक घटित होने वाली त्रासद घटनाएँ और कष्ट पाते हुए अंत में उसकी मृत्यु तक कथा चलती है। इस प्रकार निर्मला के जीवन की व्याख्या करना ही उपन्यास का मूल कथानक है।

प्रासंगिक कथाएँ उन्हें कहते हैं, जो मुख्य कथा के साथ बीच–बीच में आए। प्रासंगिक कथाओं में वह विशेषता होनी चाहिए जिसमें मुख्य कथा आगे बढ़े तथा उसे मजबूती प्राप्त हो। उदाहरण के लिए आप 'निर्मला' उपन्यास में ही देखें। मुख्य कथा आरंभ होती है निर्मला के परिचय और विवाह की बात से। लेकिन इसी बीच उदयभानु लाल और कल्याणी की प्रासंगिक कथा से जहाँ कथा को गति मिली वहीं कथा में एक नया मोड़ उपस्थित हुआ। पिता की मृत्यु के साथ निर्मला के विवाह की समस्या जटिल हो जाती है। दहेज न दे सकने की स्थिति में विवाह टूट जाता है और विवश होकर कल्याणी एक अधेड़ उम्र के वकील तोताराम से निर्मला की शादी तय कर देती है। इस प्रकार निर्मला के जीवन में एक नया मोड़ आता है। इसी प्रकार की प्रासंगिक कथाओं से लेखक उपन्यास को रोचक बनाता है और कथानक का विकास तथा विस्तार करता है। 'निर्मला' में कुछ कथाएँ ऐसी भी हैं जिनका मूल कथा से सीधे तौर पर कोई संबंध नहीं है जैसे सुधा के बेटे की मृत्यु।

3.2.2 कथावस्तु के गुण

जिन तत्वों से उपन्यासकार कथा को स्वाभाविक, विश्वसनीय, रोचक और उदात्त बनाता है वे तत्व ही कथावस्तु के गुण कहलाते हैं। पाठक उपन्यास को पढ़ने में रम जाए

BHDC-109_4th proof.indd 44 8/6/2021 2:09:01 PM

इसके लिए उपर्युक्त गुणों का होना आवश्यक है। आइए, इसे विस्तार से समझें कि किन–किन गुणों से उपन्यास रोचक बनता है।

1) **मौलिकता** : कथावस्तु का पहला गुण है मौलिकता। मौलिकता से हमारा तात्पर्य दो बातों से है, एक तो अज्ञात बात को प्रस्तुत करना और दूसरा पूर्व ज्ञात बात को नए रूप या नई शैली में प्रस्तुत करना। आसपास न जाने कितनी अच्छी–बुरी घटनाएँ घटती रहती हैं। लेकिन हमारा ध्यान उस ओर नहीं जाता। 'निर्मला' उपन्यास की कथा को ही लें। समाज में दहेज और अनमेल विवाह से संबंधित न जाने कितनी घटनाएँ घटित होती रहती हैं। सभी इस कुप्रथा से परिचित थे। उपन्यासकार प्रेमचंद ने इन सामाजिक समस्याओं को 'निर्मला' में बड़े ही रोचक और मर्मस्पर्शी रूप में प्रस्तुत किया है। दहेज न दे पाने के कारण ही निर्मला का विवाह अधेड़ उम्र के तोताराम के साथ कर दिया जाता है। यह अनमेल विवाह एक युवा स्त्री के जीवन को किस तरह नष्ट कर देता है, यही इस उपन्यास की कथावस्तु का आधार है। इस बताने के लिए जिन कथाओं की रचना लेखक ने की है उससे कथा रचने की मौलिकता का पता चलता है। अनमेल विवाह से हम सब परिचित हैं लेकिन इससे एक युवा स्त्री के जीवन पर क्या असर पड़ता है, उसे बताने के लिए वे यथार्थपरक और विश्वसनीय घटनाओं की रचना करते हैं। हम उपन्यास की कथा पढ़ने में रम जाते हैं। इसी में उनकी मौलिकता है। उपन्यासकार पूर्वज्ञात तथ्य को नए ढंग से व्याख्यायित करता है।

2) **संवेगात्मकता** : संवेगात्मकता का तात्पर्य है, पात्र के भावों और उसकी मानसिक स्थिति का ऐसा सजीव चित्रण जिसे पढ़कर पाठक भी वर्णित–भाव या स्थिति का समान रूप से अनुभव करने लगे। लेखक किसी चरित्र या घटना को कल्पना के बल पर संवेगात्मक बना देता है। पाठक पढ़ते–पढ़ते किसी पात्र के साथ ऐसा घुल–मिल जाता है कि उसके सुख–दुख का अनुभव स्वयं भी करने लगता है। आप 'निर्मला' उपन्यास के इस अंश को देखें :

''चंद्रभानु और कृष्णा चले गए पर निर्मला अकेली बैठी रह गई। कृष्णा के चले जाने से इस समय उसे बड़ा क्षोभ हुआ। कृष्णा, जिसे वह प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी, आज इतनी निष्ठुर हो गई। अकेली छोड़कर चली गई। बात कोई न थी, लेकिन दुःखी हृदय दुःखती हुई आँख है, जिसमें हवा से भी पीड़ा होती है। निर्मला बड़ी देर तक बैठी रोती रही। भाई–बहन, माता–पिता, सभी इसी भाँति मुझे भूल जायेंगे, सब की आंखें फिर जायेंगी, फिर शायद इन्हें देखने को भी तरस जाऊँ।''

इस अंश को पढ़ने के बाद क्या आप भी थोड़ी देर के लिए 'निर्मला' के साथ उसके दुःख में शामिल नहीं हो जाते हैं ? उपन्यास का अध्ययन करने की प्रक्रिया में आपने उपन्यास में स्थान–स्थान पर ऐसे वर्णन पढ़े होंगे।

3) **मानवीय अंतर्दृष्टि** : उपन्यास की कथावस्तु में मानवीय जीवन के किसी आंतरिक सत्य का उद्‌घाटन 'मानवीय अंतर्दृष्टि' कहलाता है। लेखक किसी पात्र की मनोदशा को हमारे सामने प्रस्तुत करता है जिससे पाठक किसी घटना या स्थिति के विषय में पात्र के मनोभावों, उसके विचारों और उसके द्वारा किए गए कार्य–विशेष के पीछे उसके आदर्श या जीवन–संबंधी मान्यता का अनुमान लगा लेता है। 'निर्मला' उपन्यास में इस अंश से आप इस बात को और स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं।

''निर्मला' सारी रात रोती रही। इतना कलंक। उसने जियाराम को गहने ले जाते देखने पर भी मुँह खोलने का साहस नहीं किया। क्यों ? इसीलिए कि लोग

BHDC-109_4th proof.indd 45 8/6/2021 2:09:01 PM

समझेंगे कि यह मिथ्या दोषारोपण करके लड़के से बैर साध रही है। आज उसके मौन रहने पर उसे अपराधिनी ठहराया जा रहा है। यदि वह जियाराम को उसी क्षण रोक देती और जियाराम लज्जावश कहीं भाग जाता तो क्या उसके सिर अपराध न मढ़ा जाता ? सियाराम ही के साथ उसने कौन–सा दुर्व्यवहार किया था। वह कुछ बचत करने ही के विचार से तो सियाराम से सौदा मँगवाया करती थी।''

आप देखें कि यहाँ लेखक ने निर्मला के चिंतन में मानवीय भावनाओं को ही उभारा है। निर्मला मानवीय जीवन के आंतरिक सत्य को पहचानती है, इसीलिए उसने जियाराम को गहने चुराते समय नहीं रोका क्योंकि यदि वह रोकती तो संभव था कि भेद खुलने के डर से वह कहीं भाग जाता। तब भी लोग उसे ही अपराधिनी मानते। यदि वह उसकी चोरी की बात कहती तो हो सकता था कि लोग उसका विश्वास न करते और यही कहते कि वह उस लड़के पर झूठा आरोप लगा रही है, क्योंकि वह सौतेली माँ है। यह लोक–स्वभाव है। इस प्रकार की लोक–सामान्य और स्वभाव सिद्ध बातें ही मनुष्य का आंतरिक सत्य कहलाती हैं।

4) **रोचकता** : कथावस्तु रोचक हो इसके लिए लेखक कहीं हास्य, कहीं रहस्य, कहीं व्यंग्य आदि की सृष्टि करता है। पाठक कथा को पढ़ने में रस ले और उसकी उत्सुकता बनी रहे कि आगे क्या होगा। आइए कुछ उदाहरणों से इसे समझें।

'नयनसुख–तुम क्या बातें करते हो। लौंडियो को पंजों में लाना क्या मुश्किल बात है, जरा सैर–तमाशे दिखा दो, उनके रूप–रंग की तारीफ कर दो बस, रंग जम गया।

तोता०– यह सब कर–धर के हार गया।

नयन०– अच्छा ! कुछ इत्र–तेल, फूल–पत्ते, चाट–वाट का भी मज़ा चखाया। ?

तोता०– अजी, यह सब कर चुका। दम्पत्ति–शास्त्र के सारे मंत्रों का इम्तहान ले चुका, सब कोरी गप्पे हैं।'

यह संवाद लंबा है। इसमें रोचकता तो है ही साथ ही पात्रों का चरित्र भी सामने आता है। नयनसुख तोताराम को कई नुस्खे बताता है जिससे उसकी पत्नी उसके वश में हो जाए। इत्र–तेल–फूल, चाट–वाट आदि का सुझाव यहाँ संवाद को रोचक बना देता है। 'मज़ा चखाया' जैसे मुहावरे के प्रयोग से भाषा रोचक बन गई है।

'निर्मला' उपन्यास से ही एक उदाहरण द्वारा देखें कि कथा में रहस्य द्वारा उत्सुकता किस प्रकार पैदा की गई है :

'यही सोचते हुए बाबू साहब गलियों में चले जा रहे थे। सहसा उन्हें अपने पीछे किसी दूसरे आदमी के आने की आहट मिली, समझे कोई होगा। आगे बढ़े, लेकिन जिस गली में वह मुड़ते उसी तरफ आदमी भी मुड़ता था।' पाठक में उत्सुकता बनी रहती है कि आगे क्या होगा इस प्रकार लेखक कथावस्तु को रोचक बनाता है।

5) **स्वाभाविकता** : कथावस्तु का एक महत्वपूर्ण गुण है–स्वाभाविकता। लेखक कथावस्तु की रचना करते समय कल्पना का सहारा लेता है। वह कल्पना से कथा में रोचकता ला सकता है लेकिन कथावस्तु में यदि स्वाभाविकता नहीं होगी तो वह पाठक के मन पर प्रभाव नहीं डाल सकती। कथा को रोचक बनाने के लिए कल्पना का सहारा लिया जाता है, लेकिन अस्वाभाविक या अविश्वसनीय

BHDC-109_4th proof.indd 46 8/6/2021 2:09:01 PM

लगने वाली कल्पना के चित्रण से पाठक ऊबने लगता है। अस्वाभाविक चित्रण का तात्पर्य है किसी पात्र या घटना का ऐसा चित्रण जो ऐसा न लगे कि यह कार्य जबर्दस्ती कराया जा रहा है या घटना अकारण ही घटित हो रही है। एक उदाहरण से इसे समझें :

'मंसाराम ने अब तक निर्मला की ओर ध्यान नहीं दिया था। निर्मला का ध्यान आते ही उसके रोयें खड़े हो गये। हाय! उनका सरल स्नेहशील हृदय यह आघात कैसे यह सकेगा ? आह! मैं कितने भ्रम में था। मैं उनके स्नेह को कौशल समझता था। मुझे क्या मालूम था कि उन्हें पिताजी का भ्रम–शांत करने के लिए मेरे प्रति इतना कटु–व्यवहार करना पड़ता था।'

इस स्थान पर मंसाराम का निर्मला के बारे में इस प्रकार सोचना स्वाभाविक लगता है। वह जब परिस्थितियों का आकलन करता है तो पाता है कि निर्मला का उसके प्रति किया गया कटु–व्यवहार परिस्थितिवश था। निर्मला का उस पर सच्चा स्नेह था। इस प्रकार के विश्वसनीय वर्णन से कथा में स्वाभाविकता आती है।

6) **संबद्धता और संगठनात्मकता** : उपन्यासकार उपन्यास की मुख्य कथावस्तु के साथ प्रासंगिक कथाओं की रचना भी करता है। आवश्यक बात यह है कि प्रासंगिक कथाएँ ऐसी होनी चाहिए जो सुसंबद्ध हों अर्थात् एक दूसरे से जुड़ी हों और मुख्य कथा को सशक्त बनाती हों। पारस्परिक सुसंबद्धता से कथा के बिखराव की संभावना नहीं रहती। यदि प्रासंगिक कथाएँ ऐसी हों जो मुख्य कथा के विकास में बाधा पहुँचाती हों तो इससे कथावस्तु की एकसूत्रता अथवा एकता कायम नहीं रह सकती। पाठक को पढ़ते–पढ़ते ऐसा लगे कि अचानक कथा बीच में ही रुक गई है और एक नई कथा की शुरूआत हो गई है तो इससे उसे अरुचि होगी। और यही कथावस्तु में अस्वाभाविकता ला देगी। उदाहरण के लिए आप 'निर्मला' उपन्यास में मतई के प्रासंगिक कथा को लें। इस कथा से निर्मला की जीवन–गाथा में बाधा उपस्थित नहीं होती बल्कि कथा में एक नया मोड़ उपस्थित होता है और कथा आगे बढ़ती है। इस प्रकार उपर्युक्त छह गुणों से युक्त होने पर कथावस्तु परिपूर्ण हो सकती है।

बोध प्रश्न

1. मुख्य कथा और प्रासंगिक कथा का अंतर बताइए।

   .....

   .....

   .....

2. कथावस्तु के दो गुण हैं : मौलिकता और संवेगात्मकता। आप अन्य चार गुण बताइए।

   .....

   .....

अभ्यास

1. 'निर्मला' उपन्यास से दो अंशों की चार–चार पंक्तियाँ लिखिए जिसमें लेखक ने मानवीय भावनाओं को व्यक्त किया हो।

   क) .....

   .....

   .....

BHDC-109_4th proof.indd 47 8/6/2021 2:09:01 PM

ख) .....

.....

.....

2. चार–चार पंक्तियों में 'निर्मला' उपन्यास की ऐसी आरंभिक प्रासंगिक कथा के बारे में लिखिए जिनसे कथा का विस्तार होता है।

क) .....

.....

.....

ख) .....

.....

.....

3.2.3 कथावस्तु के विकास की पद्धति

कथावस्तु के विकास के लिए लेखक विभिन्न कथात्मक पद्धतियों का प्रयोग करता है। आइए, इन पद्धतियों की जानकारी प्राप्त करें।

सामान्यतः उपन्यासकार निम्नलिखित छह प्रकार की पद्धतियों द्वारा कथावस्तु का विकास करता है।

1) कथात्मक या वर्णनात्मक पद्धति
2) संवादात्मक या नाटकीय पद्धति
3) मनोविश्लेषणात्मक पद्धति
4) समीक्षात्मक पद्धति
5) फ्लैशबैक या पूर्वदीप्ति पद्धति
6) भावात्मक अथवा काव्यात्मक पद्धति

1) वर्णनात्मक पद्धति : कथावस्तु के विस्तार की पारंपरिक पद्धति है–वर्णनात्मक पद्धति। यह उपन्यास की सर्वाधिक प्रचलित और सामान्य पद्धति है। इस स्थान पर आप वर्णनात्मक और विवरणात्मक शब्द को समझ लें। जब किन्हीं घटनाओं का विस्तार से क्रमवार वर्णन किया जाए तो वह विवरणात्मक पद्धति होगी। अर्थात् अमुक घटना के बाद यह हुआ फिर यह घटना घटी इत्यादि। वर्णनात्मक पद्धति वह है, जहाँ किसी कार्य का स्पष्ट और विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया जाए। इसमें क्रमिकता आवश्यक नहीं।

2) संवादात्मक पद्धति : इस पद्धति में संवादों के द्वारा जहाँ कथावस्तु का विकास किया जाता है, वहीं कथा में नाटकीयता द्वारा नया मोड़ उपस्थित होता है। नीचे के उदाहरण में आप देखेंगे कि निर्मला को जैसे ही यह पता चलता है कि मंसाराम की तबीयत बहुत अधिक खराब है तो वह अस्पताल जाने को तैयार हो जाती है। संवादों द्वारा पात्रों के मनोभाव और हाव–भाव को भी प्रदर्शित किया जाता है। 'निर्मला' उपन्यास के इस उदाहरण द्वारा आप स्पष्ट समझ पाएँगे कि इस पद्धति से कथा का विकास किस प्रकार किया गया है।

'निर्मला ने पूछा –क्यों भैया, अस्पताल भी गए थे ? आज क्या हाल है। तुम्हारे भैया उठे या नहीं ?

BHDC-109_4th proof.indd 48 8/6/2021 2:09:01 PM

जियाराम रुआँसा होकर बोला–'अम्माँजी, आज तो वह कुछ बोलते–चालते ही न थे। चुपचाप चारपाई पर पड़े जोर–जोर से हाथ–पाँव पटक रहे थे।

निर्मला के चेहरे का रंग उड़ गया। घबराकर पूछा–'तुम्हारे बाबू जी वहाँ न थे?'

जियाराम–'थे क्यों नहीं ? आज वह बहुत रोते थे'।

* * *

उसने जियाराम से कहा–'तुम लपककर एक एक्का बुला लो, मैं अस्पताल जाऊँगी।'

इन संवादों से रोगी की दशा गंभीर होने तथा निर्मला का उसके लिए बैचेन होने की सूचना मिलती है और यह भी पता लगता है कि निर्मला अस्पताल जाने के लिए उत्सुक है। यह कथा के विकास में सहायक है।

3) **मनोविश्लेषणात्मक पद्धति** : मनोविश्लेषणात्मक पद्धति का तात्पर्य है, पात्रों की सूक्ष्म मनोभावनाओं के उद्घाटन द्वारा कथा का विकास करना। लेखक पात्रों के चरित्र की गहराई को सामने लाता है। पात्रों के मन में परिस्थितिवश क्या–क्या भावनाएँ उत्पन्न हो सकती हैं, उसका स्वाभाविक चित्रण किया जाता है। पात्रों के मनोद्गार भी इसी पद्धति द्वारा व्यक्त किए जाते हैं। पात्रों के मन में क्या–क्या भावनाएँ उठती हैं और परिणामस्वरूप वह आगे क्या करता है इन्हीं सब बातों से कथा को आगे बढ़ाया जाता हैं एक उदाहरण देखिए–

'उस दिन से निर्मला का रंग–ढंग बदलने लगा। उसने अपने को कर्त्तव्य पर मिटा देने का निश्चय कर लिया। अब तक नैराश्य के संताप से उसने कर्त्तव्य पर ध्यान ही न दिया था। उसके हृदय में विप्लव की ज्वाला सी दहकती रहती थी, जिसकी असह्य वेदना ने उसे संज्ञाहीन कर रखा था। अब उस वेदना का वेग शांत होने लगा। उसे ज्ञात हुआ कि मेरे लिए जीवन का कोई आनन्द नहीं। उसका स्वप्न देखकर क्यों इस जीवन को नष्ट करें। संसार में सब के सब प्राणी सुख–सेज ही पर तो नहीं सोते ? मैं भी उन्हीं अभागों में हूँ।'

यहाँ निर्मला के अंदर उठने वाले नैराश्य भाव का चित्रण किया गया है। साथ ही कथा को आगे बढ़ाने के लिए निर्मला के चिंतन का सहारा लिया गया है। निर्मला की उपर्युक्त मनःस्थिति से उत्पन्न निश्चय के बाद ही वह अपने सौतेले बच्चों के प्रति कर्त्तव्य का पालन करने लगती है।

4) **समीक्षात्मक पद्धति** : उपन्यासकार कथावस्तु में इस प्रकार की पद्धति अपनाकर अपने पात्रों तथा उनसे संबद्ध घटनाओं की समीक्षा या आलोचना प्रस्तुत करता है। उदाहरण के लिए–

'जीवन तुमसे ज्यादा असार भी दुनिया में कोई वस्तु है ? क्या वह उस दीपक की भाँति ही क्षणभंगुर नहीं है, जो हवा के एक झोंके से बुझ जाता है। पानी के एक बुलबुले को देखते हो, लेकिन उसे टूटते भी कुछ देर लगती है, जीवन में उतना सार भी नहीं। साँस का भरोसा ही क्या। और इसी नश्वरता पर हम अभिलाषाओं के कितने विशाल भवन बनाते हैं। नहीं जानते, नीचे जाने वाली साँस ऊपर आएगी या नहीं, पर सोचते इतनी दूर की हैं मानो हम अमर हैं।'

इस अंश में लेखक ने उदयभानुलाल की हत्या होने पर जीवन की निस्सारता की समीक्षा प्रस्तुत की है।

5) **फ्लैशबैक या पूर्वदीप्ति पद्धति** : उपन्यास की कथावस्तु के विकास के लिए लेखक फ्लैशबैक या पूर्वदीप्ति पद्धति का भी प्रयोग करता है। कथा में कोई घटना

BHDC-109_4th proof.indd 49 8/6/2021 2:09:01 PM

पहले घट गई हो लेकिन उसका वर्णन नहीं किया गया हो और बाद में उपर्युक्त समय पर उस घटना को चल रहे प्रसंग के साथ जोड़कर जब कथावस्तु का विकास किया जाए तो उसे फ्लैशबैक या पूर्वदीप्ति पद्धति कहते हैं। इस पद्धति का प्रयोग लेखक इसलिए करता है कि पाठक को वर्तमान प्रसंग को समझने में सहायता मिले। आप कई उपन्यासों में इस पद्धति का दर्शन कर सकते हैं। 'निर्मला' उपन्यास में इस पद्धति का प्रयोग नहीं है। लेकिन प्रेमचंद की अन्य कई रचनाओं में इस पद्धति का उपयोग देखा जा सकता है।

6) **काव्यात्मक पद्धति** : जब उपन्यासकार गद्य की भाषा की अपेक्षा पद्यात्मक भाषा का प्रयोग करता है तब हम उसे काव्यात्मक पद्धति कहते हैं। लेखक वर्णन करते–करते सामान्य गद्य की भाषा से हटकर पद्य की भाषा का प्रयोग करने लगता है। इसे हम **भावात्मक शैली** का नाम भी दे सकते हैं। काव्यात्मक शैली या भावात्मक शैली में लेखक की भाषा **अलंकृत** होती है। कुछ उदाहरणों द्वारा आप इसे स्पष्ट समझ सकते हैं।

1) 'बाग में फूल खिले हुए थे। मीठी–मीठी सुगंध आ रही थी। चैत की शीतल मंद समीर चल रही थी। आकाश में तारे छिटके हुए थे।'

2) 'निशा ने इंदु को परास्त करके अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। उसकी पैशाचिक सेना ने प्रकृति पर आतंक जमा रखा था। सद्वृत्तियाँ मुँह छिपाये पड़ी थी और कुप्रवृत्तियाँ विजय से इठलाती फिरती थीं। वन में वन्य जन्तु शिकार की खोज में विचर रहे थे और नगरों में नरपिशाच गलियों में मंडराते फिरते थे।'

आपने देखा कि लेखक ने वातावरण को प्रभावशाली बनाने के लिए काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है। उसने इस वर्णन में पाठक की भावुकता जगाने के लिए विशेषणों का प्रयोग किया है, जैसे 'मीठी–मीठी सुगंध' या 'इठलाती फिरती थी' जैसे मुहावरेदार प्रयोग भी चित्रात्मकता लाकर इस गद्य को काव्य का सा आनंद देने वाला बना देता है। इसी को अलंकृत शैली भी कह सकते हैं।

बोध प्रश्न

3. कथावस्तु के विकास के लिए उपन्यासकार कुछ पद्धतियों को अपनाता है। उनमें से दो पद्धतियाँ हैं: वर्णनात्मक तथा संवादात्मक पद्धति। आप अन्य पद्धतियों के नाम लिखिए।

.....

.....

.....

.....

4. दो पंक्तियों में पूर्वदीप्ति पद्धति को समझाइये।

.....

.....

5. 'पंडित जी, हलफ से कहता हूँ, मुझे उस लड़की से जितना प्रेम है, उतना अपनी लड़की से भी नहीं है, लेकिन जो ईश्वर को मंजूर नहीं है, तो मेरा क्या बस है? वह मृत्यु एक प्रकार की अमंगल की सूचना है, जो विधाता की ओर से हमें मिली है। यह किसी आने वाली मुसीबत की आकाशवाणी है।'

BHDC-109_4th proof.indd 50 8/6/2021 2:09:02 PM

आप उपन्यास के उपर्युक्त अंश को सावधानीपूर्वक पढ़िए तथा नीचे दिए गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

i) ''लेकिन जो ईश्वर को मंजूर नहीं है, तो मेरा क्या बस है?'' यहाँ वक्ता क्या कहना चाहता है?

.....

.....

ii) उपर्युक्त अंश से आगे होने वाले किस परिवर्तन का पता चलता है?

.....

.....

.....

6. 'जीवन–तुमसे ज्यादा असार भी दुनिया में कोई वस्तु है? क्या वह उस दीपक की भाँति ही क्षणभंगुर नहीं है, जो हवा के एक झोंके से बुझ जाता है। पानी के एक बुलबुले को देखते हो, लेकिन उसे टूटते भी कुछ देर लगती है, जीवन में उतना सार भी नहीं।'

उपर्युक्त अंश को ध्यान से पढ़िए और यह बताइए कि लेखक ने किस प्रकार की पद्धति का प्रयोग किया है।

.....

अभ्यास

3. उपन्यास के उन अंशों की चार–चार पंक्तियाँ लिखिए जिनमें कथावस्तु की संवादात्मक तथा काव्यात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

3.3 'निर्मला' की कथा

आपने 'निर्मला' उपन्यास का वाचन किया होगा। पूरे उपन्यास को पढ़ने के बाद आपको यह तो अवश्य पता चल गया होगा कि इस उपन्यास में नायिका निर्मला के संपूर्ण जीवन को चित्रित किया गया है। निर्मला के माध्यम से लेखक ने नारी समस्या का यथार्थ चित्रण किया है। निर्मला के परिवार के परिचय से कथा का आरंभ होता है। पिता की मृत्यु के बाद दहेज के कारण निर्मला का विवाह टूट जाता है। फिर एक अधेड़ व्यक्ति तोताराम से निर्मला का विवाह हो जाता है। जिस उम्र के व्यक्ति को वह अब तक पिता के रूप में देखती रही है, उसे पति स्वीकार करना निर्मला के लिए आसान नहीं है। यही वजह है कि निर्मला अपने पति से दूर–दूर रहती है। निर्मला का प्यार पाने के लिए तोताराम तरह–तरह के प्रयत्न करते हैं। इसी बीच उनके मन में अपने बड़े पुत्र मंसाराम तथा निर्मला को लेकर शंका का भाव उत्पन्न होता है। मंसाराम और निर्मला हम उम्र हैं। वे पुत्र को घर से दूर रखने का प्रयत्न करते हैं। इन सब बातों से निर्मला और मंसाराम को तोताराम की कमजोरी का पता चल जाता है। मंसाराम पिता की शंका के कारण मानसिक व्यथा से पीड़ित हो जाता है। उसमें जीने की इच्छा खत्म हो जाती है और अंततः वह मर जाता है। मृत्यु से कुछ क्षण पूर्व वह माता–पिता के सामने अपने को निष्कलंकित साबित करता है। मुंशी तोताराम को पुत्र की मृत्यु के बाद अपनी भूल का एहसास होता है। वे पश्चाताप की आग में जलते रहते हैं। वे अपना कार्य भी ठीक ढंग से नहीं कर पाते। घर की आर्थिक स्थिति खराब होती जाती है। इधर उनका दूसरा पुत्र जियाराम दिन पर दिन उद्दंड होता जाता है। अवसर पाकर वह निर्मला के गहनों की चोरी कर लेता है। पकड़े जाने के भय से वह आत्महत्या

BHDC-109_4th proof.indd 51 8/6/2021 2:09:02 PM

कर लेता है। दूसरे पुत्र को खोने के बाद तोताराम और भी विक्षिप्त से रहने लगते हैं। आर्थिक तंगी तथा गहनों की चोरी के बाद निर्मला के स्वाभाव में भी परिवर्तन आ जाता है। वह बात–बात पर क्रोध करने लगती है। तोताराम का सबसे छोटा लड़का सियाराम भी साधु के जाल में फँसकर घर से भाग जाता है। तीनों बेटों को खोने के बाद मुंशी जी भी बदली हुई परिस्थिति के लिए निर्मला को जिम्मेदार ठहराते हैं। तोताराम का सबसे छोटा लड़का सियाराम भी साधु के जाल में फंसकर घर से भाग जाता है। तीनों बेटों को खोने के बाद मुंशी तोताराम घर त्याग देते हैं। इधर निर्मला असहाय हो जाती है। आर्थिक तंगी के कारण उसे घर बदलना पड़ता है। उसका स्वास्थ्य गिरता जाता है। आखिरकार पुत्री को ननद रुक्मिणी देवी के हाथ सौंपकर वह हमेशा के लिए संसार त्याग देती है। इस प्रकार हम पाते हैं कि निर्मला की जीवन कथा ही इस उपन्यास की कथावस्तु का मुख्य आधार है। लेखक ने कथा की प्रस्तुति किस प्रकार की है तथा मुख्य कथा को सशक्त बनाने के लिए किस प्रकार की प्रासंगिक कथाओं की योजना की है, इसे हम आगे देखेंगे।

उपन्यास हो या कहानी या नाटक, आपका ध्यान इस बात की ओर अवश्य गया होगा कि सभी में कथा होती है और कथा का आरंभ किसी घटना या दृश्य से होता है फिर उसका विस्तार किया जाता है तथा एक निश्चित घटना पर कथा की समाप्ति होती है। 'निर्मला' उपन्यास में भी इसी प्रकार की कथा योजना की गई है। इसी कारण संपूर्ण उपन्यास की कथा को हम तीन भागों में रखकर परख सकते हैं।

1) कथा का आरंभ
2) कथा का विकास और
3) कथा की परिणति

3.3.1 कथा का आरंभ

इस उपन्यास की कथा का आरंभ वर्णनात्मक ढंग से हुआ है। लेखक ने निर्मला के परिवार के परिचय से कथा का आरंभ किया है, यथा–

'यों तो बाबू उदयभानुलाल के परिवार में बीसों प्राणी थे; कोई ममेरा भाई या कोई फुफेरा .....'

लेखक कथा को आगे बढ़ाता हुआ कहता है– 'हमारा संबंध तो केवल उनकी दोनों कन्याओं से है जिनमें बड़ी का नाम निर्मला और छोटी का कृष्णा था।' इस प्रकार कथा के आरंभ में ही लेखक ने स्पष्ट बता दिया है कि वह किस पात्र के माध्यम से कथा कहने जा रहा है। आप उपन्यास पढ़ते समय देखेंगे कि निर्मला के विवाह से कथा आगे बढ़ाती है, फिर मंसाराम की मृत्यु के बाद एक नया मोड़ आता है और यहाँ फिर निर्मला की बहन कृष्णा के विवाह से कथा आगे बढ़ती है।

कथा के आरंभ में ही इस उपन्यास की एक समस्या को लेखक ने सामने रख दिया है– वह है दहेज की समस्या। उदाहरण के लिए, उपन्यास के प्रथम अनुच्छेद (पैरा) का यह अंश देखिए :

'बाबू उदयभानुलाल थे तो वकील। पर संचय करना न जानते थे। दहेज उनके सामने कठिन समस्या थी।'

निर्मला के विवाह में खर्चे की बात को लेकर उसके माता–पिता में तर्क–वितर्क होता है, बात आगे बढ़ जाती है। पिता कुछ दिन के लिए घर त्यागने का निश्चय करके रात्रि में निकल पड़ते हैं। इसी स्थान पर मतई के प्रसंग को लाकर कथा में एक नया मोड़ लाया जाता है। कुछ सालों पहले उदयभानु लाल के कारण मतई को जेल जाना पड़ा था। मतई बदला लेने के उद्देश्य से उदयभानु की हत्या कर देता है। अब निर्मला की विधवा माता को उसके विवाह की चिंता सताती है। वह प्रयत्न करती है कि पहले से

BHDC-109_4th proof.indd 52 8/6/2021 2:09:02 PM

निश्चित समय पर ही निर्मला का विवाह हो जाए। लेकिन दहेज मिलने की संभावना समाप्त होते ही भालचंद्र निर्मला से अपने बेटे की सगाई तोड़ देता है।

3.3.2 कथा का विकास

आपने देखा कि कथा के आरंभ में निर्मला के परिचय के बाद उसके विवाह की बात तथा पिता की मृत्यु के बाद सगाई के टूट जाने की बात कही गई है। सगाई टूटने का कारण था–दहेज न दे पाना। कथा के विकास के लिए लेखक ने दहेज का प्रसंग लिया है। निर्मला की माता, पंडित मोटेराम द्वारा लाए रिश्तों में से योग्य वर नहीं चुन पाती। कारण, इसके लिए उसे दहेज देना पड़ेगा जो उसके पास नहीं था। अंततः एक अधेड़ व्यक्ति तोताराम से निर्मला का विवाह हो जाता है। कथा के विकास में इस स्थान से अनमेल विवाह की समस्या को लेखक ने जोड़ा है। जैसे–जैसे कथा आगे बढ़ती है, पात्रों की संख्या भी बढ़ती जाती है। मुंशी तोताराम की बहन रुक्मिणी तथा तीन बेटे मंसाराम, जियाराम तथा सियाराम के साथ नौकरानी भूँगी का आगमन होता है।

लेखक कहीं वर्णन द्वारा तो कहीं पात्रों के मनोभावों द्वारा कथा को आगे बढ़ाता है। कार्य कारण की संगति लिए हुए कथा का विस्तार किया गया है। उम्र में अधिक होने के कारण निर्मला पति को प्यार नहीं दे पाती है। इधर निर्मला की उदासीनता से तोताराम दुखी रहते हैं। ऐसे समय में लेखक ने एक और पात्र की योजना की है, वह है, मुंशीजी का मित्र नयनसुख। वह मुंशी जी को पत्नी के आकर्षण के लिए कई नुस्खे बताता है। मुंशीजी मित्र के बताए नुस्खे पर अमल करते हैं फिर भी कोई असर नहीं होता। फिर निर्मला की अपनी ओर से उदासीनता के कारण मुंशीजी में बदलाव आता है। उनका बड़ा पुत्र मंसाराम है जिसकी उम्र निर्मला के बराबर है। मंसा होनहार और मेहनती छात्र है, साथ ही वह लज्जालु प्रकृति का है। निर्मला तीनों पुत्रों को प्यार करती है। वह मंसाराम से अंग्रेजी भी पढ़ती है। यह सब देख मुंशी जी में बड़े पुत्र तथा निर्मला के प्रति संदेह उत्पन्न होता है।

'निर्मला' : कथावस्तु का विस्तार

कथा के विकास के इस भाग में लेखक ने अनमेल विवाह के कारण उत्पन्न समस्याओं का मनोवैज्ञानिक और यथार्थ चित्रण किया है। पात्रों की बदलती मनःस्थिति के द्वारा कथा आगे बढ़ती है। छोटी–छोटी घटनाएँ कथा के विकास में सहायक होती हैं। परिस्थितियों से घिरी निर्मला का स्वाभाविक चित्रण किया गया है। मंसाराम को पिता की शंका का पता चलने पर कथा की घटनाओं में तेजी आती है। मंसाराम मानसिक रोग से पीड़ित हो जाता है। उसकी अवस्था दिन पर दिन बिगड़ती जाती है, पुत्र की नाजुक स्थिति को देखते हुए भी मुंशीजी का संदेह दूर नहीं होता। अंततः मंसाराम की मृत्यु हो जाती है। पुत्र की मृत्यु के बाद मुंशीजी को अपनी भूल का एहसास होता है। वे अत्यधिक दुखी रहने लगते हैं। कथा के विस्तार के लिए लेखक ने यहाँ मंसाराम को देखने वाले डॉक्टर के परिवार से संपर्क जोड़ दिया है। साथ ही कथा में रहस्य तथा उत्सुकता बनाए रखने के लिए डॉक्टर के नाम का उल्लेख नहीं किया है। डॉक्टर की पत्नी सुधा और निर्मला की मित्रता से कथा का विकास होता है। सुधा के उदार और दृढ़ चरित्र के कारण निर्मला की छोटी बहन कृष्णा का विवाह डॉक्टर के छोटे भाई से हो जाता है। विवाह में दहेज न लेकर डॉक्टर अपने किए पाप का प्रयाश्चित करना चाहता है। लेकिन लेखक ने निर्मला के संपूर्ण जीवन को कथा का आधार बनाया है अतः कथा के विस्तार के लिए उसने और कई प्रसंग जोड़े हैं। जियाराम के स्वभाव में परिवर्तन तथा गहने चोरी होने के प्रसंग में जहाँ कथा आगे बढ़ी है वहीं, पात्रों के व्यवहार में भी परिवर्तन आया है। मुंशीजी अपनी असफलता तथा घर की बिगड़ती स्थिति के लिए निर्मला को दोषी ठहराते हैं। रुक्मिणी देवी तो सदा से ही निर्मला को

BHDC-109_4th proof.indd 53 8/6/2021 2:09:02 PM

दोषी ठहराती ही रही है। एक दिन अवसर पाकर जियाराम निर्मला के गहनों की चोरी कर लेता है। पुलिस में रिपोर्ट लिखवाई जाती है। यद्यपि निर्मला ने जिया को गहना चुराते देख लिया था लेकिन बदनामी के भय से वह चुप रहती है। वह यह भी प्रयत्न करती है कि बात पुलिस तक न पहुँचे। अपराधी का पता चल जाने पर मुंशीजी पैसे देकर बात को दबा देते हैं। लेकिन आत्मग्लानि के कारण जियाराम आत्महत्या कर लेता है। दूसरे पुत्र के न रहने पर मुंशीजी की स्थिति और बिगड़ती जाती है। मुकदमे का कार्य ठीक से नहीं होने के कारण आर्थिक तंगी बढ़ती जाती है। इसके बाद साधु के प्रसंग को लेकर लेखक ने कथा को और विस्तार दिया है। पहले के समान सुख वैभव और माता–पिता का प्यार न पाकर छोटे लड़के सियाराम के मन में घर छोड़ने की भावना उत्पन्न होने लगती है। साधुओं के प्रलोभन में पड़कर एक दिन वह भी घर छोड़ देता है। तीसरे बेटे को खो देने के बाद मुंशी जी का रहा–सहा चैन भी छिन जाता है। वे सियाराम को खोजने निकल पड़ते हैं। निर्मला असहाय हो जाती है, उसे अपनी पुत्री की चिंता सताती रहती है। इस दुख की घड़ी में उसे डॉक्टर की पत्नी सुधा से ही सहारा मिलता है। वह कभी–कभी उसके यहाँ जाकर मन बहला आती है।

यहाँ लेखक ने कथा के विकास के लिए एक और प्रसंग जोड़ दिया है। निर्मला एक दिन सुधा से मिलने उसके घर आती है। सुधा उस समय गंगा स्नान के लिए गई होती है। डॉक्टर साहब अवसर पाकर निर्मला से प्रणय निवेदन कर बैठते हैं। इस अनुचित व्यवहार से निर्मला वापस घर लौट आती है। सुधा को इस घटना का पता चल जाता हे। वह इस व्यवहार के लिए डॉक्टर को फटकारती है तथा निर्मला से माफी मांगने जाती है। इस बीच ग्लानि में डॉक्टर आत्महत्या कर लेता है। खुद को इसका कारण मानकर निर्मला अत्यंत दुखी होती है।

3.3.3 कथा की परिणति

आपने देखा कि कथा के विस्तार के लिए लेखक ने कई प्रसंग जोड़े हैं। साथ ही पात्रों के मनोभावों का चित्रण तथा वर्णन पद्धति के द्वारा कथा आगे बढ़ी है। निर्मला पर एक के बाद एक विपत्ति आती है। वह परिस्थितियों से जूझती चलती है। पति के न रहने पर उसकी एकमात्र सहेली सुधा भी चली जाती है। निर्मला का पति तोताराम तो पहले ही घर छोड़ जाते हैं। इस प्रकार अब निर्मला अकेली पड़ जाती है। पुत्री के अलावा ननद रुक्मिणी ही उसके साथ है। निर्मला के प्रति रुक्मिणी देवी का स्वभाव बदल गया है। अब निर्मला के प्रति उनके मन में वेदना और सहानुभूति का भाव है। आर्थिक तंगी के कारण निर्मला को घर बदलना पड़ता है। दुखों की मार से वह अस्वस्थ हो जाती है। दिन पर दिन उसकी अवस्था खराब होती जाती है। पुत्री को अनमेल विवाह से बचाने का निवेदन कर निर्मला प्राण त्याग देती है। इस प्रकार लेखक ने निर्मला के संपूर्ण जीवन की त्रासदी का चित्रण करते हुए उसकी मृत्यु से कथा का अंत किया है।

3.4 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु की विशेषताएँ

निर्मला उपन्यास का प्रधान लक्ष्य है, यथार्थ चित्रण द्वारा समाज में व्याप्त सामाजिक कुरीतियों की आलोचना प्रस्तुत करना। प्रेमचंद ने मध्यवर्ग के पारिवारिक और सामाजिक जीवन के माध्यम से अपनी आलोचना प्रस्तुत की है। उपन्यास की भूमि मौलिक होने के साथ काफी जटिल है तथा विविधता लिए हुए है। मुख्य कथा मुंशी तोताराम तथा निर्मला की है। लेकिन अनेक उपकथाओं के द्वारा मुख्य कथा को सशक्त बनाया गया है। लेखक ने अपने उद्देश्य और आदर्श के अनुसार कथा को संगुम्फित किया है। 'निर्मला' की मुख्य कथा तथा उपकथाओं को निम्नलिखित रूप में बाँट कर विवेचन किया जा सकता है।

- मुख्य कथा सूत्रों की पारस्परिकता और एकसूत्रता

BHDC-109_4th proof.indd 54 8/6/2021 2:09:02 PM

- प्रासंगिक कथा सूत्रों की मुख्य कथा सूत्रों से संबद्धता
- संपूर्ण कथा की एकान्विति
- अंतर्कथाओं का वस्तु–विन्यास में स्थान
- कथाओं का विस्तार

आइए, इन बिंदुओं पर विचार करते हुए 'निर्मला' की कथावस्तु की विशेषताओं को पहचानें।

1) **मुख्य कथा सूत्रों की पारस्परिकता और एकसूत्रता** : 'निर्मला' उपन्यास में मुख्य पाँच कथा प्रसंग हैं। वे हैं :

   क) बाबू उदयभानुलाल और कल्याणी का प्रसंग

   ख) सुधा और डॉक्टर का प्रसंग

   ग) रुक्मिणी का प्रसंग

   घ) मंसाराम का प्रसंग

   ङ) जियाराम और सियाराम का प्रसंग

   इन पाँचों प्रसंगों का संबंध निर्मला और मुंशी तोताराम की मुख्य कथा के साथ है। कल्याणी तथा उदयभानुलाल तो निर्मला के माता–पिता ही हैं। निर्मला के दुखदायी जीवन के लिए उसके माता–पिता भी उत्तरदायी हैं। उदयभानुलाल की असामयिक मृत्यु के कारण निर्मला की माँ कल्याणी ने विवश होकर अधेड़ व्यक्ति के साथ निर्मला का विवाह कर दिया। इस प्रकार निर्मला के दुखद जीवन का आरंभ उसके विवाह के साथ ही हो गया। सुधा और डॉक्टर सिन्हा का प्रसंग स्वतंत्र है किंतु डॉक्टर सिन्हा के साथ ही निर्मला का विवाह ठीक हुआ था और वहाँ से सगाई टूटने पर ही निर्मला का दुर्भाग्य शुरू हुआ, इसलिए यह प्रसंग मुख्य कथा को अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। साथ ही प्रत्यक्ष रूप से भी इसके द्वारा मुख्य कथा को बल मिलता है। कथा को नाटकीय मोड़ देने के लिए लेखक ने इस प्रसंग को जोड़ा है। डॉक्टर सिन्हा पत्नी की प्रेरणा से प्रभावित होकर अपने किए के प्रायश्चित के लिए निर्मला की छोटी बहन कृष्णा का विवाह अपने छोटे भाई से करवा देता है।

   रुक्मिणी, सियाराम, मंसाराम तथा जियाराम का प्रसंग एक दूसरे से जुड़ा हुआ है। जब निर्मला विवाह कर अपने पति मुंशी तोताराम के घर आती है तो वहाँ पहले से मुंशी जी की विधवा बहन रुक्मिणी और तीन पुत्र मंसाराम, जियाराम और सियाराम होते हैं। मुंशी तोताराम की विधवा बहन का मालकिन का अधिकार छिन जाने पर निर्मला को सदा कोसती रहती है। वह तीनों लड़कों को निर्मला के विरुद्ध सदा उकसाती रहती है। वह बच्चों में यह धारणा बना देने का प्रयत्न करती है कि सौतेली माँ होने के कारण निर्मला सभी बच्चों का जीवन नष्ट करना चाहती है। मंसाराम के प्रसंग से जहाँ कथा को एक नया मोड़ मिलता है वहीं जियाराम तथा सियाराम के प्रसंग से निर्मला तथा तोताराम की मुख्य कथा में जटिलता आती है।

   इस प्रकार सभी प्रसंगों के द्वारा मुख्य कथा को मजबूती मिली है। कथा की एकसूत्रता तथा संबद्धता कायम हुई है।

2) **प्रासंगिक कथा–सूत्रों की मुख्य कथा–सूत्रों से संबद्धता** : उपन्यास के प्रासंगिक कथा–सूत्र सहायक पात्रों और मुख्य पात्रों दोनों की कथाओं से संबद्ध है। बाबू भालचंद्र का प्रसंग तथा मतई का प्रसंग ऐसे ही प्रसंग हैं। मतई के

BHDC-109_4th proof.indd 55 8/6/2021 2:09:02 PM

प्रसंग से ही एक संपन्न परिवार का सर्वनाश हो जाता है। साथ ही इसके कारण ही निर्मला का विवाह दुहाजू व्यक्ति से होता है। भालचंद्र के प्रसंग के कारण ही निर्मला का जीवन दुःखद बन जाता है। धन के लोभी भालचंद्र द्वारा विवाह से इन्कार के कारण निर्मला के जीवन में दुर्भाग्य का आगमन होता है।

3) **संपूर्ण कथाओं की एकसूत्रता** : 'निर्मला' उपन्यास का वाचन करने पर आपने अनुभव किया होगा कि प्रत्येक प्रसंग एक–दूसरे से जुड़ा हुआ है, कोई कथा–प्रसंग उपन्यास को पूर्णता देता है। कोई सहायक कथा सूत्र को गति देता है, कोई मुख्य कथा–सूत्र को और मूल कथानक को प्रभावित करता है। इस प्रकार सभी कथा प्रसंग एक–दूसरे से संबद्ध है और इनमें एकसूत्रता है।

4) **अन्तर्कथाओं का वस्तु–विन्यास में स्थान** : उपन्यास का वाचन करते समय आप देखेंगे कि कहीं–कहीं लेखक ने पात्रों के विगत जीवन के बारे में वर्णन किया है। इन्हें ही अन्तर्कथाएँ कहते हैं। इस प्रकार की अंतर्कथाओं के द्वारा जहाँ कथा में रोचकता आ गई है वहीं पात्रों के चरित्र को समझने में भी सहायता मिली है। इस उपन्यास में मुंशी तोताराम तथा रुक्मिणी देवी के जीवन की पूर्वकथा का वर्णन किया गया है। मतई नामक पात्र का पूर्व वर्णन किया गया है। ये अन्तर्कथाएँ उपन्यास को संपूर्ण बनाने में सहायक सिद्ध हुई है।

5) **कथांशों का विस्तार** : 'निर्मला' में कथांशों का विस्तार आवश्यकता के अनुरूप किया गया है। लेखक ने जिस स्थान पर पात्रों की आवश्यकता जरूरी नहीं समझी उसे समाप्त कर दिया है। जिन पात्रों की कथा में पुनः आवश्यकता समझी उसे वहाँ फिर उपस्थित किया है। इस प्रकार समयानुकूल कथा के विस्तार से कथा में स्वाभाविकता आ गयी है। उपन्यास में कथा–प्रसंग संयत और सुनियोजित हैं। उदाहरण के लिए, मतई का प्रसंग समयानुकूल आता है फिर अनावश्यक विस्तार नहीं किया गया है। कल्याणी का प्रसंग आरंभ में आया है फिर जितने समय तक लेखक ने उचित नहीं समझा उतने समय तक उसका वर्णन नहीं आया। आवश्यकता पड़ने पर फिर लेखक ने कृष्णा के विवाह के समय उसे उपस्थित किया है। भुवन मोहन सिन्हा का संक्षिप्त परिचय कथा के आरंभ में है। बाद में उसे पुनः उपस्थित किया गया है और अंत तक चलता रहता है। कथांशों की इस प्रकार योजना से संपूर्ण कथानक में एकसूत्रता तथा संगठनात्मकता लाने में सहायता मिलती है।

3.5 शीर्षक की सार्थकता

'निर्मला' नाम इस उपन्यास की नायिका के नाम पर रखा गया है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास की कथावस्तु का ताना-बाना निर्मला के संपूर्ण जीवन को लेकर ही बुना है। लेखक ने निर्मला के माध्यम से मध्यवर्ग की नारी वर्ग को पाठक के सामने रखा है। निर्मला एक अच्छे खाते-पीते घर-परिवार में जन्म लेती है और विवाह पूर्व का उसका जीवन खुशियों में बीतता है, लेकिन विवाह के बाद उसके जीवन की स्थितियाँ बिगड़ने लगती है। पिता की आकस्मिक मृत्यु और दहेज न दे पाने के कारण उसका तोताराम से विवाह उसके जीवन की समस्त खुशियों को छीन लेता है। जीवन में जिन छोटी-छोटी खुशियों की तलाश वह करती है, उसे भी संदेह की नज़र से देखा जाता है। 'निर्मला' नाम इस उपन्यास के लिए उचित ही है। आदि से अंत तक निर्मला की कथा चलती है। निर्मला के परिचय से कथा का आरंभ होता है। पिता की मृत्यु के कारण निर्मला का विवाह टूट जाता है। उसकी शादी दुहाजू तोताराम के साथ हो जाती है। परिस्थितियाँ यहाँ भी उसका पीछा नहीं छोड़तीं। उसके जीवन में समस्याएँ आती ही रहती हैं और उसके जीवन का अंत भी समस्याओं के बीच ही होता है। वह अपनी पुत्री

BHDC-109_4th proof.indd 56 8/6/2021 2:09:02 PM

को विषम स्थिति में छोड़कर प्राण त्याग देती है। इस प्रकार पूरा उपन्यास उसके जीवन से संबंधित है। इसलिए उसके नाम पर उपन्यास का शीर्षक सार्थक और सोद्देश्य है। सामान्यतः उपन्यास का नामकरण या तो किसी पात्र के नाम पर होता है या उस उपन्यास की कथावस्तु की किसी घटना पर। कभी उपन्यास के केन्द्रीय भाव को लेकर, तो कभी, उपन्यास के उद्देश्य को लेकर नामकरण किया जाता है। हिंदी में ऐतिहासिक उपन्यासों का नामकरण उपन्यास के किसी मुख्य पात्र या स्थान पर आधारित होता है लेकिन सामाजिक उपन्यासों में नामकरण मुख्यतः उपन्यास के मूल उद्देश्य या कथ्य पर होता है। जैसे–गबन, कब तक पुकारूँ, मैला आँचल, नदी के द्वीप आदि।

प्रेमचंद ने भी अपने उपन्यासों का नामकरण अधिकतर मूल उद्देश्य या कथ्य को ध्यान में रखकर ही किया है। जैसे–प्रतिज्ञा, रंगभूमि, सेवासदन, कर्मभूमि, ग़बन, गोदान आदि। लेकिन 'निर्मला' उपन्यास का नामकरण उन्होंने उपन्यास के प्रमुख पात्र के आधार पर किया है। जैसा कि आपने देखा है, निर्मला के संपूर्ण जीवन को ही लेखक ने इस उपन्यास में प्रस्तुत किया है। दहेज प्रथा और अनमेल विवाह की शिकार वही है। लेखक उसके माध्यम से अपना उद्देश्य रखता है। निर्मला का चरित्र ही प्रमुख और प्रभावकारी है। पाठक को आदि से अंत तक उसके साथ सहानुभूति बनी रहती है। अतः उपन्यास के विशिष्ट चरित्र की गरिमा के अनुरूप ही इसका नामकरण किया गया है। उपन्यास के सारे पात्र निर्मला के इर्द-गिर्द घूमते हैं। इसलिए विषयवस्तु के अनुकूल निर्मला नामकरण सर्वथा उपयुक्त और सार्थक है।

बोध प्रश्न

7. 'निर्मला' उपन्यास की मुख्य कथा कौन-सी है तथा कौन-कौन से कथा प्रसंगों का समावेश हुआ है?

.....

.....

.....

8. निर्मला के अलावा किस पात्र का वर्णन कथा में सर्वाधिक है?

.....

9 कथा के आरंभ में कौन-सी घटना के द्वारा कथावस्तु में नया मोड़ उपस्थित होता है?

.....

.....

10. कथा के विकास की दृष्टि से कुछ प्रश्न दिए जा रहे हैं। उपन्यास का अध्ययन करने के उपरांत इन प्रश्नों का उत्तर स्वयं लिखने का प्रयास करें और अपने उत्तरों को इकाई के अंत में दिए गए उत्तरों से मिलाइए। आप एक या दो वाक्यों में इनके उत्तर दीजिए।

i) मुंशी तोताराम तरह–तरह के स्वांग क्यों रचते हैं?

.....

ii) किस कारण से तोताराम ने मंसाराम को होस्टल में रखना चाहा?

.....

iii) डॉक्टरी इलाज द्वारा मंसाराम की तबीयत में कोई सुधार क्यों नहीं हुआ?

.....

BHDC-109_4th proof.indd 57 8/6/2021 2:09:02 PM

iv) मंसाराम की मृत्यु के बाद तोताराम की आर्थिक स्थिति क्यों खराब होती गई?

.....

v) माता-पिता के प्रति जियाराम की उद्दंडता क्यों बढ़ती गई?

.....

11. कथा के अंत से संबंधित निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए।

i) डॉक्टर भुवन मोहन ने आत्महत्या क्यों की?

.....

.....

.....

ii) मुंशी तोताराम ने घर क्यों छोड़ा?

.....

.....

.....

iii) निर्मला के प्रति रुक्मिणी देवी के व्यवहार में क्यों परिवर्तन आया?

.....

.....

.....

.....

iv) सियाराम साधुओं की किन बातों से अधिक प्रभावित हुआ?

.....

.....

.....

v) मृत्यु से पूर्व निर्मला ने रुक्मिणी देवी से क्या निवेदन किया?

.....

.....

.....

3.6 संदर्भ सहित व्याख्या

उपन्यास का वाचन करते समय आपने अनुभव किया होगा कि कहीं-कहीं कुछ अंश सामान्य पंक्तियों से भिन्न हैं। इन्हें कुछ विस्तार से समझाने की आवश्यकता है। व्याख्या द्वारा हम इन पंक्तियों के अर्थ को ठीक-ठीक समझा सकते हैं। लेखक कभी पात्रों के माध्यम से और कभी स्वयं कुछ विशेष बात कहना चाहता है। सामान्य पंक्तियों से भिन्न अंशों में ही व्याख्या की आवश्यकता होती है। व्याख्या के लिए प्रथमतः रचना का नाम, फिर रचनाकार का नाम तथा रचनाकार का वैशिष्टय बताया जाता है। तत्पश्चात् प्रसंग में यह बताया जाता है कि पंक्तियाँ किस समय किसके बारे में क्यों लिखी गयीं। फिर विस्तार से महत्त्वपूर्ण बात को समझाया जाता है। आइए, उपन्यास के कुछ महत्त्वपूर्ण अंशों की व्याख्या देखें।

BHDC-109_4th proof.indd 58 8/6/2021 2:09:02 PM

उद्धरण 1.

जीवन, तुमने ज्यादा असार भी दुनिया में कोई वस्तु है? क्या वह उस दीपक की भाँति क्षणभंगुर नहीं, जो हवा के एक झोंके से बुझ जाता है। पानी के एक बुलबुले को देखते हो, लेकिन उसे टूटते भी कुछ देर लगती है, जीवन में उतना सार भी नहीं। साँस का भरोसा ही क्या और इसी नश्वरता पर हम अभिलाषाओं के कितने विशाल भवन बनाते हैं। नहीं जानते नीचे जानेवाली साँस ऊपर आयेगी या नहीं। पर सोचते इतनी दूर की हैं, मानो हम अमर हैं।

संदर्भ : प्रस्तुत उद्धरण प्रेमचंद के 'निर्मला' उपन्यास से लिया गया है, इन पंक्तियों में मनुष्य जीवन की क्षणभंगुरता पर लेखक ने अपने विचार व्यक्त किए हैं। भिन्न रूपकों द्वारा जीवन की क्षणभंगुरता को समझाने का प्रयत्न किया है। निर्मला के माता-पिता में उसके विवाह के खर्च को लेकर वाद-विवाद बढ़ जाता है। पिता उदयभानुलाल घर से कुछ दिन के लिए बाहर रहने का निश्चय कर निकल पड़ते हैं। गुंडा मतई बदला लेने का अवसर पाता है और उनकी हत्या कर देता है। वह उनके सोने के बटन और घड़ी भी रख लेता है। इसी समय लेखक ने जीवन की क्षणभंगुरता पर अपना विचार व्यक्त किया है।

व्याख्याः लेखक उदयभानुलाल की इस असामयिक मृत्यु पर कहता है कि मनुष्य के जीवन से तुच्छ वस्तु इस संसार में और कुछ नहीं है। क्या मनुष्य का जीवन उस दीपक की भाँति नहीं जो हवा के झोंके से तुरंत बुझ जाता है। मनुष्य जीवन की तुलना पानी के बुलबुले से करते हुए लेखक कहता है कि पानी के बुलबुले को भी नष्ट होने में कुछ समय लगता है लेकिन मानव जीवन उससे भी कम समय में नष्ट हो जाता है। हम मनुष्य जीवन की इस क्षणंभगुरता को जानते हुए भी जाने कितनी अभिलाषा, आकांक्षा मन में पालते रहते हैं। यह पा जाएँ, वह हो जाए इसी में लगे रहते हैं। हम यह नहीं जानते कि क्षण में क्या हो जाएगा। साँस लेने की क्रिया के बीच ही हमारा जीवन नष्ट हो सकता है (साँस लेने की क्रिया-नाक द्वारा साँस लेना और छोड़ना) लेकिन मनुष्य की यह आदत है कि जीवन की इस वास्तविकता को जानते हुए भी कुछ पाने और बन जाने की सोच में ही लगा रहता है। हम इतनी अभिलाषाएँ, आकांक्षाएँ लेकर जीते हैं मानों अमर हैं। मानों हमारी मृत्यु हो ही नहीं सकती।

विशेष :

1. संस्कृतनिष्ठ भाषा का प्रयोग।
2. मनुष्य जीवन की तुलना दीपक तथा पानी के बुलबुले के साथ करते हुए प्रतीकात्मक भाषा का प्रयोग किया गया है।

उद्धरण 2.

महाराज दहेज की बातचीत ऐसे सत्यवादी पुरुषों से नहीं की जाती। उनसे संबंध हो जाना ही लाख रुपये के बराबर है। मैं इसी को अपना अहोभाग्य समझता हूँ। हा! कितनी उदार आत्मा थी। रुपये को तो उन्होंने कुछ समझा ही नहीं। तिनके के बराबर की परवाह नहीं की। बुरा रिवाज है, बेहद बुरा! मेरा बस चले तो दहेज लेने वालों और देने वालों को गोली मार दूँ; फिर चाहे फाँसी ही क्यों न हो जाए!

संदर्भ : प्रस्तुत उद्धरण 'निर्मला' उपन्यास से लिया गया है। इसके लेखक प्रेमचंद हैं। उपन्यास की नायिका निर्मला का विवाह भालचंद्र के पुत्र से तय हो चुका था, लेकिन उदयभानुलाल की अचानक मृत्यु हो जाने से विवाह में बाधा उपस्थित हो गई थी। निर्मला की माँ चाहती थी कि निश्चित समय में ही विवाह हो जाए, अतः पं. मोटेराम

BHDC-109_4th proof.indd 59 8/6/2021 2:09:02 PM

को एक पत्र के साथ भालचंद्र के यहाँ भेजा। पं. मोटेराम, भालचंद्र के यहाँ जाते हैं उस समय भालचंद्र ने मोटेराम से उक्त बातें कहीं।

व्याख्याः लेखक ने भालचंद्र के चरित्र को बड़ी सहजता से प्रस्तुत किया है। भालचंद्र की कथनी और करनी में अंतर है। वह दहेज प्रथा को बुरा कहता है लेकिन निर्मला के साथ पुत्र का विवाह इसलिए तोड़ देता है कि उसे दहेज मिलने की आशा नहीं रहती। निर्मला के संग पुत्र के विवाह को समाप्त करने के लिए वह पंडित जी के सामने भूमिका बाँधता है। प्रथमतः उदयभानुलाल की बड़ाई करते हुए कहता है कि उनसे संबंध हो जाना बड़ी बात थी, वे पैसे को महत्व नहीं देते थे। फिर दहेज प्रथा की चर्चा करते हुए कहते हैं कि यह प्रथा बुरी है। अगर उनको अधिकार मिल जाए तो दहेज लेने तथा देने वाले को गोली मार दें। चाहे इस कार्य के लिए फाँसी ही क्यों न हो जाए।

विशेष : लेखक ने भालचंद्र के चरित्र को स्पष्ट करने के लिए उसके मुख से ही बातें कहलवाई हैं। भालचंद्र की कथनी और करनी में अंतर है। वह कहता कुछ और है तथा करता कुछ और है।

ऊपरी तौर पर ये पंक्तियाँ किसी विद्रोही व्यक्ति का कथन जान पड़ती है। लेकिन बाद में प्रेमचंद ने भालचंद्र के चरित्र को सामने रखकर इस कथन के खोखलेपन को उजागर किया है। वस्तुतः स्थिति में निहित व्यंग्य और विडंबना को सामने लाने के लिए प्रेमचंद ने यह कथन भालचंद्र के मुख से कहलवाया है। इसके अतिरिक्त इस कथन के माध्यम से प्रेमचंद उन लोगों की भी पोल खोल देते हैं, जो मंचों पर दहेज के खिलाफ बड़े–बड़े भाषण करते हैं और अपने बेटे की शादी में दहेज की मांग करते हैं।

भाषा : लेखक ने संवाद के द्वारा चरित्र को स्पष्ट किया है। बोलचाल की भाषा। संवाद को प्रभावशाली बनाने के लिए यथावश्यक उर्दू के शब्दों का प्रयोग किया गया है।

3.7 सारांश

- इस इकाई में आपने उपन्यास की कथावस्तु के बारे में जानकारी प्राप्त कर ली है। अब आप बता सकते हैं कि 'निर्मला' की कथावस्तु किस तरह की है।
- उपन्यास का आकार बड़ा होता है। लेखक एक मुख्य कथा को उपन्यास का आधार बनाता है। साथ ही मुख्य कथा के साथ अन्य प्रसंगों की रचना करता है।
- इस इकाई को पढ़ने के बाद आप बता सकते हैं कि 'निर्मला' उपन्यास की मुख्य कथा में प्रासंगिक कथाएँ किस प्रकार सहायक होती हैं।
- इस इकाई में आपने 'निर्मला' उपन्यास की कथावस्तु की संपूर्ण विशेषताओं के बारे में अध्ययन किया है।
- आप अब कथावस्तु की दृष्टि से पूरे उपन्यास का विश्लेषण प्रस्तुत कर सकते हैं।

3.8 शब्दावली

प्रासंगिक कथा : मुख्य कथा के साथ चलने वाली ऐसी गौण कथाएँ जो मुख्य कथा के विकास में सहायक होती हैं। 'निर्मला' की कथा में कल्याणी और उदयभानुलाल की कथा प्रासंगिक कथा है।

त्रासदी : दुःखान्त रचना यानी ऐसी रचना जिसका अंत दुःख में हो। दुःखान्त घटना पर आधारित पश्चिम के नाटकों में त्रासदी को महत्वपूर्ण माना गया है। यहाँ 'निर्मला' के संदर्भ में त्रासदी का प्रयोग इसलिए किया गया है कि इस उपन्यास का अंत भी दुःखद होता है।

BHDC-109_4th proof.indd 60 8/6/2021 2:09:02 PM

उदात्त : श्रेष्ठ, दयावान, कृपालु, उदार आदि अर्थ हैं, लेकिन पाठ में श्रेष्ठ या अच्छा के लिए प्रयुक्त।

मौलिकता : मूल से संबंध रखने वाला (ग्रंथ या विचार)। जो किसी दूसरी रचना का अनुवाद या नकल न हो, और न ही किसी अन्य रचना पर आधारित हो।

उद्‌घाटन : प्रकट करना, प्रकाशित करना, खोलना।

आंतरिक : अंदर का, भीतरी।

संबद्धता : बँधा या जुड़ा हुआ, संबंध युक्त। उपन्यासकार उपन्यास की मुख्य कथा और प्रासंगिक कथा में संबद्धता कायम कर रचना को सफल बनाता है।

मनोविश्लेषण : इस बात का विशेषण करना या जाँचना कि मनुष्य का मन किन अवस्थाओं में किस प्रकार कार्य करता हैं सफल उपन्यासकार वह है, जो अपने पात्रों का सूक्ष्म मनोविश्लेषण प्रस्तुत कर पाए।

निस्सारता : सार रहित, जिसमें काम की बात न हो, क्षणभंगुरता।

3.9 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1. किसी भी उपन्यास की मुख्य कथा वह है जो आरंभ से उपन्यास के अंत तक चले। प्रासंगिक कथाएँ वे हैं जो बीच–बीच में जोड़ी गई हैं। प्रासंगिक कथाएँ मुख्य कथा में सहायता पहुँचाने के लिए रची जाती हैं। उदाहरण के लिए, निर्मला और तोताराम की कथा मुख्य कथा है तथा सुधा और डॉक्टर साहब की कथा प्रासंगिक कथा है।

2. 1) मानवीय अंतर्दृष्टि
   2) रोचकता
   3) स्वाभाविकता
   4) कथा की संबद्धता

3. मनोवैज्ञानिक
   समीक्षात्मक
   पूर्वदीप्ति
   काव्यात्मक

4. पूर्वदीप्ति में किसी वर्तमान प्रसंग या घटना की पृष्ठभूमि बताने के लिए पात्रों के विगत जीवन को स्मरण को माध्यम से वर्णन किया जाता है। इस पद्धति से जहाँ कथा में स्पष्टता आती है वहीं चरित्र के चित्रण में सहायता मिलती है।

5. i) वक्ता भाग्य की विडंबना का उदाहरण देकर सगाई को तोड़ना चाहता है।
   ii) उक्त अंश के द्वारा पता चलता है कि सगाई टूट जाने से कल्याणी को निर्मला के विवाह के लिए अन्यत्र प्रयत्न करना पड़ेगा।

6. समीक्षात्मक पद्धति

7. ''निर्मला' उपन्यास में मुख्य कथा निर्मला और तोताराम की है और प्रासंगिक कथाएँ हैं– सुधा और डॉक्टर की कथा, मंसाराम की कथा, रुक्मिणी की कथा, जिया और सियाराम की कथा।

8. निर्मला के अतिरिक्त मुंशी तोताराम की कथा का सर्वाधिक वर्णन हुआ है।

BHDC-109_4th proof.indd 61 8/6/2021 2:09:02 PM

9. मतई को उदयभानुलाल ने सजा दिलाई थी। अवसर पाकर उसने उनकी हत्या कर डाली। इस घटना से उपन्यास की कथा में नया मोड़ आता है।

10. i) निर्मला को अपनी ओर आकर्षित करने के लिए।

ii) तोताराम को निर्मला और मंसाराम के संबंध में संदेह उत्पन्न हो गया था।

iii) मंसाराम को कोई शारीरिक बीमारी नहीं थी। पिता के अंदर उठी शंका की भावना से वह मानसिक व्यथा से पीड़ित था।

iv) पुत्र वियोग की व्यथा से तोताराम अपने मुकदमे का कार्य ठीक से नहीं कर पाते थे।

v) जियाराम मानता है कि उसके बड़े भाई मंसाराम की मृत्यु, पिता और सौतेली माँ के कारण हुई।

11. i) निर्मला के साथ किए गए अनुचित व्यवहार के बाद पत्नी सुधा की फटकार के कारण आत्मग्लानि में डॉक्टर सिन्हा ने आत्महत्या कर ली।

ii) अपने दो पुत्रों को खोने पर तोताराम दुःखी थे ही लेकिन जब उनका सबसे छोटा बेटा सियाराम भी घर से चला जाता है, यही कारण है कि उनके व्यवहार में परिवर्तन आता है।

iii) रुक्मिणी देवी निर्मला की असहाय अवस्था से परिचित है। निर्मला के प्रति अपने किए गए व्यवहार से उनमें ग्लानि उत्पन्न होती है, यही कारण है कि उनके व्यवहार में परिवर्तन आता है।

iv) सियाराम साधुओं की योग–विद्या की बात से अधिक प्रभावित हुआ। उसके मन में यह बात बैठ गई कि इस विद्या के अभ्यास से वह अपनी मृत माता का दर्शन कर सकेगा।

v) मृत्यु से पूर्व निर्मला ने रुक्मिणी देवी से यह निवेदन किया कि वे उसकी पुत्री का विवाह अयोग्य व्यक्ति के साथ न करे।

अभ्यास

1. क) कृष्णा के चले जाने से इस समय उसे बड़ा क्षोभ हुआ। कृष्णा, जिसे वह प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी, आज इतनी निष्ठुर हो गई। अकेली छोड़ कर चली गई। बात कोई न थी, लेकिन दुःखी हृदय दुखती हुई आँख है। जिसे हवा से भी पीड़ा होती हैं निर्मला बड़ी देर तक बैठी रोती रही।

ख) निर्मला जब वस्त्राभूषणों से अलंकृत होकर आइने के सामने खड़ी होती और उसमें अपने सौन्दर्य की सुषमतापूर्ण आभा देखती तो उसका हृदय एक सतृष्ण कामना से तड़प उठता था। उस वक्त उसके हृदय में एक ज्वाला–सी उठती। मन में आता इस घर में आग लगा दूँ। अपनी माता पर क्रोध आता।

2. क) निर्मला के विवाह में खर्च को लेकर उदयभानुलाल और कल्याणी में वाद–विवाद बढ़ जाता है। उदयभानु यह सोचकर घर से निकलते हैं कि दो–चार दिन बाहर रहने से कल्याणी को एहसास हो जाएगा कि उसके बिना घर की क्या स्थिति होगी। इसी समय उसके द्वारा सजा पाया गुंडा मतई बदला लेने की भावना से उसकी हत्या कर देता है कथा का विकास यहीं से होता है।

BHDC-109_4th proof.indd 62 8/6/2021 2:09:02 PM

ख) पति के गुजरने के बाद कल्याणी निर्मला का विवाह निश्चित समय के अंदर ही करवाने का प्रयास करती हैं। पं. मोटेराम इसी कारण लड़के के पिता भालचंद्र के यहाँ जाते हैं, लेकिन दहेज मिलने की संभावना समाप्त हो जाने से वे सगाई तोड़ देते हैं। इस प्रसंग से कथा में नया मोड़ उपस्थित होता है।

3. क) **संवादात्मक पद्धति**

'तोताराम–अगर तुम लोगों ने उस घर में कदम रखे तो टांगे तोड़ दूंगा। बदमाशी पर कमर बंधी है।

जियाराम जरा शोख था। बोला–उनको तो आप कुछ नहीं कहते, हमीं को धमकाते हैं, कभी पैसे नहीं देतीं।

सियाराम ने इस कथन का अनुमोदन किया–कहती है, मुझे तंग करोगे तो कान काट लूँगी। कहती है कि नहीं जिया ?

निर्मला अपने कमरे से बोली–मैंने कब कहा था कि कान काट लूँगी अभी से झूठ बोलने लगे।'

ख) **काव्यात्मक पद्धति**

निशा ने इंद्र को परास्त करके अपना साम्राज्य स्थापित कर लिया था। उसकी पैशाचिक सेना ने प्रकृति पर आतंक जमा रखा था, सद्वृत्तियाँ मुँह छिपाए पड़ी थीं और कुवृत्तियाँ विजय–गर्व से इठलाती फिरती थीं। वन में वन्य जन्तु शिकार की खोज में विचर रहे थे और नगरों में नर पिशाच गलियों में मंडराते फिरते थे।

BHDC-109_4th proof.indd 63 8/6/2021 2:09:02 PM

इकाई 4 'निर्मला' : चरित्र चित्रण

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 चरित्र चित्रण

4.3 चरित्र चित्रण की विधियाँ

- 4.3.1 विश्लेषणात्मक पद्धति
- 4.3.2 संवादात्मक पद्धति
- 4.3.3 मनोवैज्ञानिक पद्धति
- 4.3.4 पूर्ववृत्तात्मक पद्धति

4.4 चरित्र चित्रण के गुण

- 4.4.1 अनुकूलता
- 4.4.2 स्वाभाविकता
- 4.4.3 जीवतंता
- 4.4.4 मौलिकता
- 4.4.5 संवेदना

4.5 उपन्यास के पात्र

- 4.5.1 प्रमुख पात्र
- 4.5.2 गौण पात्र

4.6 सारांश

4.7 शब्दावली

4.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

आप 'हिन्दी उपन्यास' पाठ्यक्रम के अंतर्गत 'निर्मला' उपन्यास का अध्ययन कर रहे हैं। खंड की इकाई–3 में आपने 'निर्मला' के संदर्भ में उपन्यास के महत्त्वपूर्ण तत्त्व कथावस्तु के बारे में विस्तृत जानकारी हासिल कर ली है। इस इकाई में हम आपको उपन्यास के एक अन्य महत्त्वपूर्ण तत्त्व 'चरित्र चित्रण' के बारे में बताएँगे। इस इकाई को पढ़ने के बाद आप :

- उपन्यास के महत्त्वपूर्ण तत्त्व चरित्र चित्रण की परिभाषा बता सकेंगे;
- उपन्यासकार चरित्र चित्रण के लिए जिन विधियों का प्रयोग करता है, उनका विश्लेषण कर सकेंगे;
- चरित्र चित्रण को प्रभावशाली और जीवंत बनाने के लिए आवश्यक गुणों को बता सकेंगे;
- 'निर्मला' उपन्यास में जिन विधियों का प्रयोग किया गया है उन्हें समझा सकेंगे; तथा
- 'निर्मला' के प्रमुख पात्रों का चरित्र चित्रण कर सकेंगे।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

4.1 प्रस्तावना

चरित्र चित्रण उपन्यास का महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। लेखक कथावस्तु का विकास अपने चरित्रों के माध्यम से करता है। अतः कथावस्तु के समान ही चरित्र चित्रण भी उपन्यास के लिए आवश्यक है। घटनाओं को लेखक विभिन्न प्रकार के पात्रों के माध्यम से प्रस्तुत करता है। बिना पात्र के कोई घटना हो ही नहीं सकती। लेखक कथा के अनुसार पात्रों की रचना करता है। पात्रो के कार्य-व्यापार, आकृति, विचार, मन के भाव आदि सब उसकी कथा पर आधारित होते हैं। कथावस्तु विश्वसनीय तभी हो सकती है जब उपन्यास के पात्र भी विश्वसनीय हों अर्थात् पात्रों का चुनाव और उनका चित्रण इस प्रकार किया गया हो कि उनकी आकृति, प्रकृति, उनके द्वारा किए जाने वाले कार्य, उनके संवाद सभी स्वाभाविक लगें। कोई पात्र किन परिस्थितियों में क्या कार्य करता है, परिस्थितियों में उलझ जाने पर उसकी मानसिक स्थिति कैसी होती है अर्थात् उस समय वह क्या सोचता है, इन सभी बातों को उपन्यासकार स्वाभाविक रूप में पेश करता है। इस प्रकार उसके पात्र सजीव और विश्वसनीय बन जाते हैं। इस इकाई में हम देखेंगे कि उपन्यासकार अपनी कथावस्तु को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए किस प्रकार के पात्रों का चुनाव करता है। चरित्र चित्रण के लिए किन-किन विधियों का प्रयोग करता है। पात्रों को अधिक विश्वसनीय और सजीव बनाने के लिए किन गुणों को लेखक ध्यान में रखता है, आप इसकी जानकारी भी प्राप्त करेंगे।

'निर्मला' प्रेमचंद का महत्त्वपूर्ण उपन्यास है। इस उपन्यास में लेखक ने दहेज और अनमेल-विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं को लिया है। उपन्यास की मुख्य विषयवस्तु इन्हीं पर निर्भर है। कथा में नारी-जीवन के यथार्थ को मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। हम चरित्र चित्रण का विश्लेषण करते समय देखेंगे कि लेखक ने विषय वस्तु के अनुकूल पात्रों का चयन करके किस प्रकार रचना को मौलिकता प्रदान की है। पात्रों को लेखक ने किस प्रकार विश्वसनीय और सजीव बनाया है। पाठ के माध्यम से हम यह भी जानेंगे कि मुख्य पात्र और गौण पात्र में क्या अंतर होता है तथा गौण पात्र किस प्रकार कथा को सशक्त बनाते हैं। आइए, चरित्र चित्रण को विस्तार से जानें।

4.2 चरित्र चित्रण

उपन्यास, कहानी आदि गद्य विधाओं में लेखक कथा के विकास के लिए पात्रों की रचना करता है। बिना पात्रों के कोई घटना नहीं हो सकती। रचना के अनुकूल उपन्यासकार पात्रों का चुनाव करता है। वह पात्रों की आकृति, विचार, मन के भावों, उनके द्वारा किए जाने वाले कार्यों, अनुभवों आदि का चित्रण करता है। पात्रों में स्वाभाविकता और सजीवता लाने के लिए ही वह उपर्युक्त बातों का ध्यान रखता है। पात्रों के सफल चरित्रांकन के लिए उपन्यासकार में कल्पना-शक्ति का होना आवश्यक है अर्थात् वह ठीक-ठीक कल्पना कर ले कि अमुक पात्र में अमुक गुण को कैसे लाया जाए। अमुक पात्र की मानसिक स्थिति को किस प्रकार दर्शाया जाए या अमुक पात्र से किस प्रकार का कार्य करवाया जाए। किसी रचनाकार की रचना तभी ख्याति पा सकती है जब उसमें वर्णित पात्रों की रचना महान उद्देश्य को लेकर की गई हो और महान उद्देश्यों को लेकर वही उपन्यासकार अपने पात्रों की रचना कर सकता है जो स्वयं भी महत् और संवेदनशील अन्तर्दृष्टि रखता हो। किसी उपन्यास के पात्रों में जो जीवन्तता है, उनके जो कार्यव्यापार हैं, उनके अंदर उठने वाली जो भावनाएँ हैं उन सब पर पाठकों को सहज रूप से विश्वास होने लगे। पात्रों के सुख-दुःख के साथ वह भी अपने को सुखी-दुःखी महसूस करने लगे, तो मानना चाहिए कि उस रचना के पात्र जीवंत हैं और संवेदना जगाने की क्षमता रखते हैं। कोई पात्र यदि चमत्कारी या असंभव

BHDC-109_4th proof.indd 65 8/6/2021 2:09:03 PM

लगने वाला कार्य करता है, तो इससे उसकी स्वाभाविकता प्रकट नहीं होती। वैसे पात्र ही विश्वसनीय और जीवंत होंगे जिनमें सहजता होगी। 'निर्मला' उपन्यास के विभिन्न पात्रों के चरित्रांकन में क्या हमें ये विशेषताएँ दिखाई देती हैं, इस पर आगे विचार करेंगे। लेखक चरित्रांकन के लिए कई प्रकार की विधियों को अपनाता है। आइए, पहले इन विधियों का संक्षिप्त परिचय प्राप्त करें।

4.3 चरित्र चित्रण की विधियाँ

चरित्रांकन के लिए लेखक कई प्रकार की विधियों का पालन करता है। कभी लेखक स्वयं पात्रों के बारे में कुछ कहता है, कभी पात्र आपस में वार्तालाप करते हैं जिनसे उनका चरित्र सामने आता है। कभी पात्र अपने बारे में या दूसरे पात्रों के बारे में सोचता है। इससे भी उसका तथा दूसरे पात्रों का चरित्र स्पष्ट होता है। कभी-कभी लेखक प्रसंगानुकूल उन घटनाओं का वर्णन करता है जिनका पहले वर्णन नहीं किया गया हो तथा कभी पूर्व घटित घटना को प्रत्यक्ष रूप में शब्दों के द्वारा स्पष्ट वर्णित करवाता है। इन विधियों द्वारा पात्रों का चरित्र सामने आता है। हम इन्हें कई वर्गों में रख सकते हैं :

1) विश्लेषणात्मक पद्धति
2) संवादात्मक पद्धति
3) मनोवैज्ञानिक पद्धति
4) पूर्ववृत्तात्मक पद्धति

4.3.1 विश्लेषणात्मक पद्धति

इस पद्धति में उपन्यासकार स्वयं पात्रों का विश्लेषण प्रस्तुत करता है अर्थात् लेखक पात्रों के चरित्र को स्पष्ट करता चलता है। पात्रों के गुण-अवगुण या जिन परिस्थितियों में किसी पात्र ने कोई कार्य किया है, उन्हें वह स्पष्ट करता है। अगर आप इस दृष्टि से 'निर्मला' उपन्यास को पढ़ें, तो पाएँगे कि लेखक ने अधिकतर पात्रों के चरित्र को स्पष्ट करने में इस पद्धति का प्रयोग किया है। उपन्यास के निम्नलिखित उदाहरण से आप इसे ठीक-ठीक समझ सकते हैं।

''तोताराम दम्पति-विज्ञान में कुशल थे। निर्मला को प्रसन्न रखने के लिए उनमें जो स्वाभाविक कमी थी, उसे वह उपहारों से पूरी करना चाहते थे। यद्यपि वह बहुत ही मितव्ययी पुरुष थे तथापि निर्मला के लिए कोई-न-कोई तोहफा रोज लाया करते। मौके पर धन की परवाह न करते। लड़कों के लिए थोड़ा दूध आता, पर निर्मला के लिए मेवे, मुरब्बे, मिठाइयाँ–किसी चीज की कमी न थी। अपनी ज़िन्दगी में कभी सैर तमाशे देखने न गए थे। अब अपने बहुमूल्य समय का थोड़ा सा हिस्सा उसके साथ बैठकर ग्रामोफोन बजाने में व्यतीत किया करते थे।''

आपने देखा कि लेखक ने तोताराम के चरित्र को स्वयं ही स्पष्ट कर दिया है। तोताराम दम्पति-विज्ञान में कुशल थे, वे मितव्ययी पुरुष थे, इत्यादि-इत्यादि।

4.3.2 संवादात्मक पद्धति

संवादों के माध्यम से जब पात्रों का चरित्र सामने आए तब उसे संवादात्मक पद्धति कहते हैं। उपन्यास के पात्र आपस में वार्तालाप करते हैं तब उनका चरित्र प्रकाश में आता है। कभी-कभी कोई एक पात्र किसी दूसरे पात्र के बारे में उसके गुण-अवगुण का उद्घाटन करता है। इन्हें हम क्रमशः (1) प्रत्यक्ष और (2) अप्रत्यक्ष चरित्र चित्रण के अंतर्गत रख सकते हैं।

BHDC-109_4th proof.indd 66 8/6/2021 2:09:03 PM

प्रत्यक्ष चरित्र चित्रण में संवादों के माध्यम से उन पात्रों के गुण-अवगुण का स्पष्ट परिचय मिलता है जिनके बीच संवाद हो रहा होता है। प्रत्यक्ष संवाद पात्रों के अपने कार्य पर आधारित होते है और उनके पात्रों के विचारों, आदर्शों तथा उनकी कार्य पद्धति आदि का पता चलता है। इन बातों से उनके चरित्र का निर्माण होता है। एक उदाहरण देखिए–

''रंगीली ने कहा–आज बड़ी देर लगाई तुमने। यह देखो, तुम्हारी ससुराल से यह खत आया है। तुम्हारी सास ने लिखा है। साफ-साफ बतला दो–अभी सवेरा है। तुम्हें वहाँ शादी करना मंजूर है या नहीं?

भुवन–'शादी करनी तो चाहिए अम्माँ, पर मैं करूंगा नहीं।'

रंगीली–'क्यों'?

भुवन–'इसमें शर्म की कौन-सी बात है? रुपये किसे काटते हैं? लाख रुपये तो लाख जन्म में भी न जमा कर पाऊँगा। इस साल पास भी हो गया तो कम-से-कम पाँच साल तक रुपये की सूरत नज़र न आयगी। फिर सौ-दो सौ रुपये महीने कमाने लगूँगा। पाँच-छः सौ तक पहुँचते-पहुँचते उम्र के तीन भाग बीत जायेंगे। रुपए जमा करने की नौबत न आएगी। दुनिया का कुछ मज़ा न उठा सकूँगा। किसी धनी लड़की से शादी हो जाती, तो चैन से कटती। मैं ज्यादा नहीं चाहता, बस एक लाख नगद हो, फिर ऐसी जायदादवाली बेवा मिले जिसके एक ही लड़की हो।'

रंगीली–'चाहे औरत कैसी ही मिले।'

भुवन–'धन सारे ऐबों को छिपा देगा। मुझे वह गालियाँ भी सुनाए तो भी चूँ न करूँ। दुधारू गाय की लात किसे बुरी मालूम होती है।'

आप देखें कि उपर्युक्त संवादों से दोनों पात्रों का चरित्र साफ प्रकट होता है। भुवन मोहन का लालची और धनलोलुप चरित्र स्पष्ट है। वह धन को ही सब कुछ मानता है। माँ के कहने पर कि 'औरत कैसी ही हो' वह इतना तक कहता है कि धन सारे ऐबों को छिपा देता है। इससे उसका दृष्टिकोण भी स्पष्ट हो जाता है।

अप्रत्यक्ष चरित्र चित्रण में लेखक किन्हीं पात्रों के संवाद के द्वारा किसी दूसरे पात्र के बारे में सूचनाएँ दिलवाता है, लेकिन इसके द्वारा यह भी संभव है कि पात्रों के संवाद व्यक्तिगत द्वेष के कारण अन्य पात्रों के बारे में गलत तथ्यों को सामने लाते हों। अतः इस विधि में पात्र अपने विचारानुकूल ही दूसरे के चरित्र को सामने रखते हैं। यदि तटस्थ और निष्पक्ष होकर कोई संवाद बोलता है, तो उस समय अवश्य ही वह किसी पात्र का सही चित्र प्रस्तुत करता है। आइए, हम इसे एक उदाहरण द्वारा समझें–

''मंसाराम ने बड़ी मुश्किल से उमड़ते हुए आँसुओं को रोकर कहा–जी, रोता नहीं हूँ।

मुंशीजी– तुम्हारी अम्माँ ने तो कुछ नहीं कहा?

मंसाराम–जी नहीं, वह तो मुझसे बोलती ही नहीं।

मुंशीजी–क्या करूँ बेटा, शादी तो इसलिए की थी कि बच्चों को माँ मिल जायेगी, लेकिन यह आशा पूरी नहीं हुई। तो क्या बिल्कुल नहीं बोलती?

मंसाराम–जी नहीं, इधर महीनों से नहीं बोलीं।

मुंशीजी–विचित्र स्वभाव की औरत है, मालूम नहीं होता कि क्या चाहती है। मैं जानता कि उसका ऐसा मिज़ाज होगा, तो कभी शादी न करता। रोज़ एक न एक बात लेकर उठ खड़ी होती है। उसी ने मुझसे कहा था कि यह दिन भर जाने कहाँ गायब रहता है। मैं उसके दिल की बात क्या जानता था? समझा तुम कुसंगत में पड़कर शायद दिन भर घूमा करते हो। कौन ऐसा पिता है, जिसे अपने प्यारे पुत्र को आवारा फिरते

BHDC-109_4th proof.indd 67 8/6/2021 2:09:03 PM

देखकर रंज न हो? इसीलिए मैंने तुम्हें बोर्डिंग हाउस में रखने का निश्चय किया। बस, और कोई बात न थी, बेटा।''

आप देखें कि मुंशी तोताराम निर्मला के बारे में जो कुछ कहते हैं, वह असत्य है। वे निर्मला के प्रति मंसाराम के मन में द्वेष का भाव पैदा करने के लिए ऐसी बातें गढ़ते हैं, अतः यहाँ तोताराम का चरित्र तो स्पष्ट होता है लेकिन निर्मला का चरित्र चित्रण तथ्यपूर्ण नहीं है। एक अन्य संवाद देखिए–

''मंसाराम–तुमने खूब कहा, बहुत ही अच्छा कहा। इस पर और भी झल्लायी होंगी और जाकर बाबूजी से शिकायत की होगी।

जियाराम–नहीं, यह कुछ नहीं हुआ। बेचारी जमीन पर बैठकर रोने लगी। मुझे भी करुणा आ गई। मैं भी रो पड़ा। उन्होंने अंचल से मेरे आँसू पोछें और बोले–जिया! मैं ईश्वर को साक्षी देकर कहती हूँ कि मैंने तुम्हारे भैया के विषय में तुम्हारे बाबूजी से एक शब्द नहीं कहा। मेरे भाग्य में कलंक लिखा हुआ है, वही भोग रही हूँ फिर और न जाने क्या-क्या कहा, जो मेरी समझ में नहीं आया। कुछ बाबू जी की बात थी।''

मंसा और जिया के इस संवाद में जियाराम ने निर्मला के बारे में जो कुछ कहा वह बिना किसी लाग-लपेट के, तटस्थ होकर कहा, अतः इससे निर्मला का सही चरित्र उद्घाटित होता है। इस प्रकार संवादात्मक पद्धति द्वारा लेखक चरित्र चित्रण करता है।

4.3.3 मनोवैज्ञानिक पद्धति

इस पद्धति के अंतर्गत लेखक पात्रों के मनोभाव को उद्घाटित करता है। आज सफल उपन्यास उसी को माना जाता है जिसमें लेखक ने पात्रों के मनोभावों का स्वाभाविक चित्रण किया हो। मानव मन की गहराई तक पैठकर ही सफल लेखक अपने चरित्रों का यथार्थ मनोभाव उपस्थित कर सकता है। परिस्थितियों के बीच उलझे पात्रों के अंतर्द्वंद्व को लेखक तभी चित्रित कर सकता है जब वह पात्रों के अंतर्मन तक पहुँच जाये अर्थात् वह यह अनुमान लगा ले कि अमुक परिस्थिति में पात्र की मानसिक स्थिति किस प्रकार की हो सकती है। आप 'निर्मला' उपन्यास के इस उदाहरण से इसे समझें–

''मंसाराम ने अब तक निर्मला की ओर ध्यान नहीं दिया था। निर्मला का ध्यान आते ही उसके रोये खड़े हो गए। उनका सरल स्नेहशील हृदय यह आघात कैसे सह सकेगा? आह! मैं कितने भ्रम में था। मैं उनके स्नेह को कौशल समझता था। मुझे क्या मालूम था कि उन्हें पिता जी का भ्रम शांत करने के लिए मेरे प्रति कितना कटु व्यवहार करना पड़ता है। आह! मैंने उन पर कितना अन्याय किया है। उनकी दशा तो मुझसे भी खराब हो रही होगी। मैं तो यहाँ चला आया, मगर वह कहाँ जाएँगी? जिया कहता था; उन्होंने दो दिन से भोजन नही किया। हरदम रोया करती हैं, कैसे जाकर समझाऊँ? वह इस अभागे के पीछे क्यों अपने सिर पर विपत्ति ले रही हैं, वह क्यों बार-बार मेरा हाल पूछती हैं? क्यों बार-बार मुझे रुलाती हैं? कैसे कह दूं कि माता, मुझे तुमसे जरा भी शिकायत नहीं, मेरा दिल तुम्हारी तरफ से साफ है।''

यहाँ मंसाराम के मनोभाव का स्वाभाविक चित्रण किया गया है उसकी मानसिक स्थिति किस प्रकार की है और वह परिस्थिति के विषय में क्या सोचता है, इसका यथावत चित्रण किया गया है। इसलिए इसे हम मनोवैज्ञानिक पद्धति कह सकते हैं। मनोवैज्ञानिक पद्धति के अंतर्गत मानसिक द्वंद्व और स्वप्न द्वारा भी पात्रों के चरित्र को उभारा जाता है। निम्नलिखित उदाहरण में तोताराम के मानसिक द्वंद्व को दर्शाया गया है, उसे देखिए–

''एक क्षण के बाद एकाएक मुंशी के मन में प्रश्न उठा–कहीं मंसाराम उनके भावों को ताड़ तो नहीं गया? इसीलिए तो घर से घृणा नहीं हो गयी है? अगर ऐसा है, तो गज़ब हो जाएगा।

BHDC-109_4th proof.indd 68 8/6/2021 2:09:03 PM

उस अनर्थ की कल्पना ही से मुंशी जी के रोएँ खड़े हो गये और कलेजा धक्-धक् करने लगा। हृदय में एक धक्का सा लगा। अगर इस ज्वर का यही कारण है, तो ईश्वर ही मालिक है। इस समय उनकी दशा अत्यंत दयनीय थी। वह आग जो उन्होंने अपने ठिठुरे हुए हाथों को सेंकने के लिए जलायी थी, अब उनके घर में लगी जा रही थी। इस करुणा, शोक, पश्चाताप और शंका में उनका चित्त घबरा उठा। उनके गुप्त रोदन की ध्वनि बाहर निकल सकती तो सुनने वाले रो पड़ते। उनके आँसू बाहर निकल सकते थे, तो उनका तार बँध जाता। उन्होंने पुत्र के वर्णहीन मुख की ओर, एक बार, वात्सल्यपूर्ण नेत्रों से देखा, वेदना से विकल होकर उसे छाती से लगा लिया, और इतना रोये कि हिचकी बँध गयी।''

4.3.4 पूर्ववृत्तात्मक पद्धति

इस पद्धति के अंतर्गत लेखक किसी पात्र के बारे में उन बातों की जानकारी देता है जो उसके जीवन के पूर्व पक्ष से संबंधित होते हैं लेकिन जिनका वर्णन पहले नहीं किया गया था। परिस्थिति और समयानुकूल तथ्य को सामने रखकर चरित्र को स्पष्ट किया जाता है।

'निर्मला' उपन्यास में मुंशी तोताराम और रुक्मिणी देवी के चरित्र को इसी पद्धति के द्वारा स्पष्ट किया गया है।

"घर में वकील साहब की विधवा बहिन के सिवा और कोई औरत न थी। वही घर की मालकिन थीं। उनका नाम रुक्मिणी और अवस्था पचास के ऊपर थी। ससुराल में कोई न था। स्थायी रीति से यहाँ रहती थीं।"

तोताराम की बहन रुक्मिणी देवी के जीवन से संबंधित पूर्व घटना की जानकारी यहाँ दी गई है। रुक्मिणी देवी तोताराम की बड़ी बहन है, विवाह के बाद वे विधवा हो जाती हैं। फिर वे भाई के घर में रहने लगती हैं और अपने को मालकिन के रूप में देखने लगती हैं। इस प्रकार पूर्व घटना की जानकारी यहाँ देकर रुक्मिणी देवी के चरित्र को स्पष्ट किया गया है।

4.4 चरित्र चित्रण के गुण

अभी तक हमने उन पद्धतियों की जानकारी प्राप्त की जिनके द्वारा उपन्यासकार चरित्र चित्रण करता है। अब हम उन विशेषताओं को जानने का प्रयत्न करेंगे जिनसे लेखक चरित्र को प्रभावशाली बनाता है।

पात्रों को जीवंत और सक्रिय बनाने के लिए उपन्यासकार जिन विशेषताओं का रूपांकन करता है, वही चरित्र चित्रण के गुण कहलाते हैं। इसके लिए आवश्यक है कि पात्रों में अनुकूलता, स्वाभाविकता, सप्राणता (जीवंतता) तथा मौलिकता हो और उसकी संवदेनशीलता पाठक को प्रभावित करके उसमें भी वैसी ही संवेदना जागृत कर सकता हो। आइए इसे एक-एक कर देखें।

4.4.1 अनुकूलता

अनुकूलता का तात्पर्य है जिस प्रकार की कथा है उसी के अनुकूल पात्रों का चुनाव। कथा के अनुकूल पात्रों का चुनाव करने से पात्रों और कथावस्तु में स्वाभाविक संबंध स्थापित हो जाता है। पाठक को ऐसा प्रतीत नही होता कि लेखक ने जानबूझ कर अमुक पात्र की रचना की है। पात्र यथार्थ लगते हैं। पाठक को उसकी यथार्थता में संदेह नहीं रहता। 'निर्मला' उपन्यास के पात्रों को ही लें। इसके सभी पात्र कथावस्तु के अनुकूल रचे गए हैं। निर्मला, तोताराम, मंसाराम, जियाराम तथा रुक्मिणी सभी कथा के अनुकूल हैं।

BHDC-109_4th proof.indd 69 8/6/2021 2:09:03 PM

इस उपन्यास की कथा दहेज प्रथा और अनमेल विवाह जैसी सामाजिक समस्याओं को दर्शाने के लिए है। इसके लिए सभी पात्र समाज के उन वर्गों का प्रतिनिधित्व करते हैं जिनका संबंध इस समस्या से है। 'निर्मला' उस नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती हैं जिन्हें दहेज की बलिवेदी पर चढ़ाया गया है। तोताराम उस पुरुष वर्ग का प्रतिनिधित्व करता है जो अपनी आयु को नजरअंदाज़ करके वासना-पूर्ति के लिए अपने से कम उम्र की कन्याओं से विवाह करता है। मंसाराम उन होनहार युवाओं का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें परिस्थितिवश अनुचित बातें सहनी पड़ती हैं। अपने सरल स्वभाव के कारण ऐसे युवक घुट-घुट कर मर जाते हैं। जियाराम उन उद्दंड बालकों का प्रतिनिधित्व करता है जो माता-पिता की परेशानियों को नहीं समझते और उनकी गलती उनका ही जीवन बर्बाद कर देती है। रुक्मिणी देवी उस नारी वर्ग का प्रतिनिधित्व करती है जो विधवा होने पर अपने मायके में जीवनयापन करने के लिए विवश होती हैं। ऐसी स्त्रियों में भी अधिकार की भावना हो सकती है जो रुक्मिणी देवी में भी दिखायी देती है। तोताराम के घर में तब तक उसका अधिकार बना रहता है जब तक निर्मला नहीं आती। लेकिन निर्मला के आने के बाद उनकी पहले जैसी स्थिति नहीं रहती। इसलिए स्वभावतः उनमें निर्मला के प्रति द्वेष का भाव पैदा हो जाता है। इस द्वेष भाव से कहानी में ऐसी कई स्थितियाँ पैदा की गई हैं जिससे निर्मला का जीवन और कष्टकर हो जाता है।

'निर्मला' में उपर्युक्त पात्रों के अलावा भी कई पात्र हैं जो अपने चारित्रिक गुणों के साथ उपन्यास की कथा को आगे बढ़ाने और उसे एक दिशा की ओर मोड़ने में सहायक होते हैं। जैसे निर्मला की माँ, निर्मला की बहन, मतई, रंगीली, भुवनमोहन, सुधा, भूँगी आदि। आप निर्मला की कथा को ध्यान में रखकर उपर्युक्त पात्रों की भूमिका को जांचेंगे तो पाएँगे कि सभी पात्र कथा के अनुकूल हैं और कथा के उद्देश्य को पूरा करने में सहायक हैं।

4.4.2 स्वाभाविकता

पात्र स्वाभाविक हों, इसके लिए यह ज़रूरी है कि केवल कल्पना और व्यर्थ की बातों से पात्रों को अलग रखा जाए। यथार्थ के धरातल पर पात्रों का चित्रण किया जाए। पाठक उपन्यास पढ़ते समय पात्रों के साथ तादात्म्य स्थापित कर ले। ऐसा नहीं कि किसी पात्र के कार्य का चिंतन उसके स्वभाव या उसकी स्थिति के विपरीत हो।

जियाराम और मुंशीजी के वार्तालाप से आप देखिए कि चरित्र की स्वाभाविकता स्पष्ट दिखाई पड़ती है–

''मुंशीजी ने झुँझलाकर कहा–तुम लोग बच्चे नहीं हो।

जियाराम–और क्या बूढ़े हैं? मिठाइयाँ मँगवाकर रख दीजिए; तो मालूम हो कि बच्चे हैं या बूढ़े। निकालिए चार आना और आशा के बदौलत हमारे नसीब भी जागें।

मुंशीजी–मेरे पास इस वक्त पैसे नहीं हैं। जाओ सिया, ज़ल्द आना।

जिया–सिया नहीं जायेगा। किसी का गुलाम नहीं है। आशा अपने बाप की बेटी है, तो वह भी अपने बाप का बेटा है।''

आप देख रहे हैं कि पात्र किस प्रकार आपस में बात करते हैं। सामान्यतः हम आये दिन घरों में इसी प्रकार के संवाद सुनते हैं। बाप-बेटे में इस तरह की तकरार होने पर बातें कुछ इस अंदाज में ही की जाती हैं। इसलिए यह बातचीत बहुत स्वाभाविक बन पड़ी है।

4.4.3 जीवंतता

चरित्र सजीव और आकर्षक होने चाहिए। आदर्श चरित्र इतने आदर्श रूप में चित्रित न किए जाएँ कि उनमें बनावटीपन आ जाए। जिन पात्रों के चरित्र आदर्श गुण से ही भरपूर होंगे उनमें बनावटीपन आ जायेगा और पाठक के मन में संदेह उपस्थित होगा। उसे

BHDC-109_4th proof.indd 70 8/6/2021 2:09:03 PM

उपन्यास पढ़ने में अरुचि होगी। पात्र वस्तुतः यथार्थ के धरातल से जुड़े होने चाहिए। 'निर्मला' उपन्यास में सभी पात्र जीवंत और स्वाभाविक प्रतीत होते हैं, बनावटी नहीं।

''जियाराम ज़रा शोख था। बोला–उनको तो आप कुछ नहीं कहते, हमीं को धमकाते हैं। कभी पैसे नहीं देती।

सियाराम ने इस कथन का अनुमोदन किया–कहती है, मुझे दिक करोगे तो कान काट लूँगी। कहती है कि नहीं जिया?

निर्मला अपने कमरे से बोली–मैंने कब कहा था कि कान काट लूँगी? अभी से झूठ बोलने लगे?''

आप देखें सभी पात्र अपनी बातों से स्वाभाविक और जीवंत लगते हैं। ऐसा नहीं लगता है कि कोई अस्वाभाविक बात कह रहे हों। निम्न मध्यवर्गीय परिवारों में इस प्रकार की घटनाएँ आए दिन घटित होती रहती हैं और बातें भी इसी तरह बनाई जाती हैं।

4.4.4 मौलिकता

उपन्यासकार अपने पात्रों को तभी रोचक और प्रभावशाली बना सकता है जब उसमें मौलिकता होगी। मौलिकता से हमारा तात्पर्य इस बात से है कि रचनाकार ने पात्रों को किसी अन्य रचना से नकल करके निर्मित नहीं किया है, बल्कि वह नितांत उसकी अपनी कल्पना से गढ़ा गया है। मौलिकता का तात्पर्य यह भी नहीं है कि पात्र अयथार्थ हों। मौलिकता पात्रों में तभी आती है जब हमें उपन्यास के पात्र जीते-जागते इंसान प्रतीत हों, लेकिन हमारे आसपास दिखायी देने वाले लोगों की हूबहू नकल भी न हों। हम 'निर्मला' के पात्रों को ही उदाहरणस्वरूप रख सकते हैं। निर्मला, मुंशी तोताराम, कल्याणी, मंसाराम, डॉ. भुवन सिन्हा, सुधा, जियाराम, रुक्मिणी आदि सभी पात्र जीवन से लिए गए हैं और अपने आप में मौलिक हैं। इसके पहले अन्य किसी रचनाकार ने इन जैसे पात्रों की रचना नहीं की है।

4.4.5 संवेदना

अनेक बार उपन्यास में वर्णित पात्रों के सुख-दुःख में, उनके मन में उठने वाली भावनाओं में, पाठक सहभागी हो जाता है। पाठक पात्र की संवेदना का वैसा ही अनुभव करने लगता है या उसमें भी वही संवेदना जागृत हो जाती है। लेखक की सफलता इसी बात में है कि वह ऐसे पात्रों का सृजन करे जो पाठकों में संवेदना जागृत कर सकें। 'निर्मला' में प्रेमचंद ने निर्मला को प्रायः इसी रूप में चित्रित किया है। एक उदाहरण देखिए–

''निर्मला ने रोकर कहा–मैंने उन्हें कुछ कहा तो, मेरी जबान कट जाए। हाँ, सौतेली माँ होने के कारण बदनाम तो हूँ ही। आपके हाथ जोड़ती हूँ। ज़रा जाकर उन्हें बुला लाइए।''

रूक्मिणी ने तीव्र स्वर में कहा–तुम क्यों नहीं बुला लाती? क्या छोटी हो जाओगी? अपना होता तो क्या इसी तरह बैठी रहती? निर्मला की दशा उस पंखहीन की तरह हो रही थी, जो सर्प को अपनी ओर आते देखकर उड़ना चाहता है, पर उड़ नहीं सकता, उछलता है और गिर पड़ता है, पंख फड़फड़ाकर रह जाता है। उसका हृदय अंदर ही अंदर तड़प रहा था, पर बाहर न जा सकती थी।

इतने में दोनों लड़के अंदर आकर बोले–भैया जी चले गए। निर्मला मूर्तिवत् खड़ी रहीं, मानो संज्ञाहीन हो गई। चले गए। घर में आये तक नहीं; मुझसे मिले तक नहीं। चले गए? मुझसे इतनी घृणा। मैं उनकी कोई न सही; उनकी बुआ तो थी। उनसे तो मिलने आना चाहिए न? मैं यहाँ थी न! अंदर कैसे कदम रखते! मैं देख लेती न। इसीलिए चले गए।''

BHDC-109_4th proof.indd 71 8/6/2021 2:09:03 PM

निर्मला की इस दयनीय स्थिति को देखकर किसी भी सहृदय पाठक में सहानुभूति के भाव उठ सकते हैं। निर्मला परिस्थितिवश लाचार है। वह मंसाराम को रोक नहीं सकती, पर उस रुक्मिणी देवी के तानों से वह और भी त्रस्त है। क्या हममें रुक्मिणी देवी के प्रति रोष और निर्मला के प्रति सहानुभूति नहीं जगती? इन्हीं सहानुभूतिपूर्ण और अनुकूल भावनाओं के पाठक के हृदय में उठने को संवेदना जागना कहते हैं।

बोध प्रश्न

1. दो पंक्तियों में विश्लेषणात्मक पद्धति को समझाइये।

   .....

   .....

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति उचित शब्दों द्वारा कीजिए :

   i) पात्रों की आपसी बातचीत से जब उनका चरित्र उभारा जाये, तब उसे ..... कहते हैं।

   ii) पात्र कभी-कभी अपने बारे में या किसी घटित घटना पर चिंतन करते हैं और उसके द्वारा जब उनका चरित्र सामने आता है तब उसे ..... कहते हैं।

   iii) किसी पात्र से संबंधित घटना पहले घट चुकी होती है, लेकिन कथा मे उसका जिक्र बाद में किया जाता है, और तब जाकर उस पात्र का चरित्र सामने आता है, इस पद्धति को ..... कहते हैं।

3. उपन्यासकार अपने पात्रों को जीवंत बना सकें इसके लिए एक आवश्यक गुण है कथा के अनुकूल पात्रों का चयन। आप तीन अन्य गुणों को लिखिए।

   .....

   .....

   .....

4. दो पंक्तियों में मौलिकता का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

   .....

   .....

   .....

अभ्यास

1. 'निर्मला' उपन्यास का अध्ययन करने के बाद उपन्यास के पात्र तोताराम से संबंधित वे पंक्तियां लिखिए जिनमें उसके मनोभाव उभारे गए हों :

   .....

   .....

   .....

   .....

   .....

2. "मंसाराम ने आँसुओं के उठते हुए वेग को दबाकर कहा–मर जायेंगी, मेरी बला से! कौन मुझे बड़ा सुख दिया है, जिसके लिए पछताऊं। मेरा तो उन्होंने सर्वनाश कर दिया। कह देना, मेरे पास कोई संदेश न भेजें, कुछ जरूरत नहीं।''

BHDC-109_4th proof.indd 72 8/6/2021 2:09:03 PM

उपर्युक्त कथन में मंसाराम के कौन से भाव स्पष्ट होते हैं?

.....

.....

.....

.....

3 ''मुंशीजी ने उसे आहिस्ते से चारपाई पर लिटा दिया और लिहाफ़ अच्छी तरह उढ़ाकर सोचने लगे कि अब क्या करना चाहिए। कहीं लड़का हाथ से तो न निकल जायेगा। यह ख्याल करके वह शोक में विह्वल हो गए और स्टूल पर बैठकर फूट-फूट कर रोने लगे। मंसाराम भी लिहाफ में मुँह लपेटे रो रहा था। अभी थोड़े ही दिन पहले उसे देखकर पिता का ह्रदय गर्व से फूल उठता था; लेकिन आज उसे इस दारुण दशा में देखकर भी वह सोच रहा है कि इसे घर ले चलूं या नहीं? क्या यहां दवा नहीं हो सकती? मैं यहां चौबीसों घंटे बैठा रहूँगा। डॉक्टर साहब यहां हैं ही। कोई दिक्कत न होगी। घर ले चलने में उन्हें बाधाएं ही बाधाएं दिखाई देती थीं, सबसे बड़ा भय था कि वहां निर्मला इसके पास हरदम बैठी रहेगी और मना न कर सकूंगा–यह उनके लिए असह्य था।''

उपर्युक्त चिंतन में तोताराम के कौन-कौन से भाव उभर कर सामने आते हैं। और समग्र रूप से इससे तोताराम के चरित्र की किस विशेषता का पता चलता है।

.....

.....

.....

.....

4. 'निर्मला' उपन्यास को पढ़कर उपन्यास से उन चार-पाँच पंक्तियों को लिखिए जिनमें चिंतन के द्वारा पूर्ववृत्तात्मक पद्धति का प्रयोग किया गया है।

.....

.....

.....

.....

4.5 उपन्यास के पात्र

अब तक हमने चरित्र चित्रण की विधियों और उनमें प्रभाव पैदा करने के लिए आवश्यक गुणों की चर्चा की है। अब हम 'निर्मला' उपन्यास के पात्रों को एक-एक करके लेंगे और देखेंगे कि लेखक कितनी सफलता से इन पात्रों की रचना कर पाया है।

उपन्यास में जितने प्रकार के पात्रों की रचना की जाती है, उन्हें मोटे तौर पर दो वर्गों में रखा जा सकता है :

1. मुख्य पात्र और गौण पात्र
2. पुरुष पात्र और नारी पात्र

नारी पात्र और पुरुष पात्र मुख्य भी हो सकते हैं और गौण भी। मुख्य पात्र उन्हें कहते हैं जिनके इर्दगिर्द उपन्यास की पूरी कथा चलती है। अर्थात् लेखक किसी मुख्य पात्र को लेकर ही पूरी कथा की रचना करता है। चाहे उसका उद्देश्य मुख्य पात्र के द्वारा किसी वर्ग का प्रतिनिधित्व करना ही क्यों न हो।

BHDC-109_4th proof.indd 73 8/6/2021 2:09:03 PM

गौण पात्र उन्हें कहते हैं जो मुख्य पात्र के चरित्र को उभारने में या कथानक को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं। ऐसे पात्र कथा में किसी अवसर विशेष पर उपस्थित किये जाते हैं। ये कथा में या तो एक बार आकर समाप्त हो जाते हैं या बीच-बीच में लाये जाते हैं। हम 'निर्मला' में पात्रों का चरित्र-विश्लेषण करते हुए इसे विस्तार से समझेंगे। 'निर्मला' में प्रमुख या मुख्य पात्र हैं : निर्मला और मुंशी तोताराम। गौण पात्र हैं : कल्याणी, भालचंद्र, मतई, मंसाराम, जियाराम, सियाराम, रुक्मिणी, सुधा, डॉ. भुवन सिन्हा, कृष्णा आदि। आइए पहले प्रमुख पात्रों का विश्लेषण करें :

4.5.1 प्रमुख पात्र

'निर्मला' उपन्यास की मुख्य कथा, पति-पत्नी की पारिवारिक कहानी को केंद्र में रखकर लिखी गई है। इसलिए इसमें तोताराम और उनकी पत्नी निर्मला ही प्रमुख पात्र हैं। यदि उन दोनों में भी किसी एक पात्र को प्रधानता देना चाहें तो वह है निर्मला। निर्मला की संपूर्ण जीवनगाथा को लेखक ने कथा के कलेवर में समेटा है। निर्मला का परिचय, विवाह, पारिवारिक समस्याएँ और अंततः अभावग्रस्त होकर उसका अंत, यही पूरे उपन्यास के मुख्य कथा बिंदु हैं। कह सकते हैं कि निर्मला के जीवन की व्यथा-कथा कहना ही उपन्यासकार का उद्देश्य है। उपन्यास में निर्मला की केंद्रीय अवस्थिति के कारण ही उपन्यास का नामकरण 'निर्मला' रखा गया है। लेखक ने निर्मला के चरित्र को उभारने के लिए अन्य पात्रों की रचना भी की है।

निर्मला

निर्मला, उपन्यास की नायिका है। उसके समस्त जीवन का वर्णन इसमें है। निर्मला का जन्म कब हुआ और उसका बाल्यकाल कैसा बीता इसका वर्णन उपन्यास में नहीं है। उपन्यास की कथा वहाँ से आरंभ होती है जब निर्मला का विवाह होने वाला है। निर्मला बालिका नहीं है लेकिन इतनी बड़ी भी नहीं है कि वैवाहिक जीवन की जटिलताओं को पूरी तरह समझ सके। निर्मला का प्रथम परिचय हम बाबू उदयभानु लाल के पारिवारिक परिचय में पाते हैं। वह पन्द्रह साल की कन्या है और उस अवस्था में उसके विवाह की बात तय होती है। विवाह के योग्य उम्र नहीं होने के कारण उसमें स्वाभाविक खुशी के स्थान पर भय का भाव उत्पन्न होता है। इस बीच एक दुर्घटना घटती है और उसके पिता की हत्या हो जाती है। उसके जीवन में दुःख की शुरूआत यहीं से होती है। दहेज न दे सकने की स्थिति में उसका विवाह दुहाजू वकील मुंशी तोताराम के साथ हो जाता है। अनमेल विवाह से उसे वैवाहिक सुख नहीं मिल पाता। पति के शंकालु स्वभाव से उसका जीवन और दुःखमय हो जाता है। वह सौतले पुत्रों को खोती जाती है और अंत में पति भी छोड़ जाता है। आर्थिक तंगी के कारण उसका त्रासद अंत होता है।

इस प्रकार परिस्थितिवश उसके जीवन में उतार-चढ़ाव आता है। स्वभावतः उसके चरित्र में भी परिवर्तन आता है। पन्द्रह वर्ष की निश्छल कन्या से वह पत्नी, फिर ममतामयी मृदुभाषी माँ बनती है और परिस्थितियाँ उसे कर्कशा और चिड़चिड़ी बना देती हैं। हम निर्मला के चरित्र को क्रमशः निम्नलिखित रूप में रख सकते हैं।

- पंद्रह वर्षीय चंचल किशोरी
- कर्त्तव्यनिष्ठ पत्नी
- भावुक और संवेदनशील नारी
- ममतामयी माँ
- परिस्थितियों के आगे समर्पण
- निर्मला में चरित्रगत बदलाव

BHDC-109_4th proof.indd 74 8/6/2021 2:09:03 PM

पंद्रह वर्षीय चंचल किशोरी

उपन्यास के कथा के आरंभ में ही हम निर्मला को एक पंद्रह वर्षीय चंचल कन्या के रूप में पाते हैं जिसका विवाह तय हो चुका है।

"निर्मला का पंद्रहवाँ साल था, कृष्णा का दसवाँ, फिर भी उनके स्वभाव में कोई विशेष अंतर न था। दोनों चंचल, खिलाड़िन और सैर–तमाशे पर जान देती थी। दोनों गुड़ियों का धूम-धाम से ब्याह करती थीं, सदा काम से जी चुराती थीं। माँ पुकारती रहती थी पर दोनों कोठे में छिपी बैठी रहती थीं कि न जाने किस काम के लिए बुलाती हैं। दोनों अपने भाइयों से लड़ती थीं, नौकरों को डाँटती थीं और बाजे की आवाज सुनते ही द्वार पर आकर खड़ी हो जाती थीं।"

लेकिन निर्मला का विवाह तय हो जाने के साथ ही स्वयं प्रेमचंद के शब्दों में "जिसने बड़ी को बड़ी और छोटी को छोटी बना दिया है।" वयस्क न होने के कारण वह विवाह के महत्त्व को नहीं समझ पाती और भयभीत होती है। उसका भावुक रूप आरंभ में ही प्रकट होता है।

कर्त्तव्यनिष्ठ पत्नी

परिस्थितिवश निर्मला का विवाह रुक जाता है। आर्थिक तंगी के कारण योग्य हमउम्र वर के साथ उसका विवाह नहीं हो पाता। माता विवश होकर एक दुहाजू व्यक्ति वकील मुंशी तोताराम के साथ उसका विवाह कर देती है। तोताराम की उम्र चालीस वर्ष से अधिक है। निर्मला का जीवन एक अधेड़ व्यक्ति के साथ बँध जाता है। अब वह अपने पिता की उम्र के बराबर व्यक्ति की पत्नी है। इस अनमेल विवाह ने स्वाभाविक रूप से उसके वैवाहिक सुख को समाप्त कर दिया है। लेखक ने मनोवैज्ञानिक पद्धति से उसके चरित्र को स्पष्ट किया है।

''निर्मला जब वस्त्राभूषणों से अंलकृत होकर आइने के सामने खड़ी होती और उसमें अपने सौंदर्य की सुषमापूर्ण आभा देखती तो उसका हृदय एक सतृष्ण कामना से तड़प उठता था। उस वक्त उसके हृदय में एक ज्वाला सी उठती। मन में आता, इस घर में आग लगा दूँ। अपनी माता पर क्रोध आता, पर सबसे अधिक बेचारे निरपराध तोताराम पर आता। वह सदैव इस बात से जला करती। बाँका सवार बूढ़े लट्टू-टट्टू पर सवार होना कब पसंद करेगा, चाहे उसे पैदल ही क्यों न चलता पड़े। निर्मला की दशा उसी बाँके सवार की सी थी। वह उस पर सवार होकर उड़ना चाहती थी, टट्टू के हिनहिनाने और कनौतियाँ खड़ी करने से क्या आशा होती? संभव था कि बच्चों के साथ हँसने-खेलने से वह अपनी दशा को थोड़ी देर के लिए भूल जाती।''

उपर्युक्त कथन से स्पष्ट है कि निर्मला में भी युवा नारी के मन में उठने वाली यौवन संबंधी भावनाएँ थीं लेकिन वय में उससे काफ़ी बड़े पति के समक्ष उन भावनाओं का कोई अर्थ नहीं था। इसलिए उसे अपनी इन भावनाओं को दबाकर रखना पड़ता था। इन विषम परिस्थितियों के बावजूद वह अपने पति के प्रति वफादार है। वह परिस्थिति से समझौता कर लेती है।

''संसार के सब प्राणी सुख-सेज पर ही तो नहीं सोते। मैं भी उन्हीं अभागों में हूँ। मुझे भी विधाता ने दुःख की गठरी ढोने के लिए चुना हैं। वह बोझ सिर से उतर नहीं सकता। उसे फैंकना भी चाहूँ तो नहीं फेंक सकती। उस कठिन भार से चाहे आँखों से अँधेरा आ जाये, चाहे गर्दन टूटने लगे, चाहे पैर उठना दुस्तर हो जाये, लेकिन गठरी ढोनी पड़ेगी।''

अनमेल विवाह के बावजूद उसमें स्त्री की गरिमा भी थी। यही कारण है कि जब डॉ. सिन्हा जिनसे कभी उसका विवाह होने वाला था, उससे प्रणय निवेदन करते हैं, तो वह इसे अपना अपमान ही समझती हैः

BHDC-109_4th proof.indd 75 8/6/2021 2:09:03 PM

'निर्मला ने कुछ न सुना। उसे ऐसा जान पड़ा मानो सारी पृथ्वी चक्कर खा रही है। मानो उसके प्राणों पर सहस्त्रों वज्रों का आघात हो रहा है। उसने जल्दी से अलगनी पर लटकी हुई चादर उतार ली और बिना मुँह से एक शब्द निकाले कमरे से निकल गयी। डॉक्टर साहब खिसियाये हुए से–रोना मुँह बनाये खड़े रहे।''

इस प्रकार निर्मला ने कभी अपने पातिव्रत्य पर आँच नहीं आने दी, लेकिन साथ ही स्त्री की गरिमा की भी रक्षा की।

भावुक और संवेदनशील नारी

लेखक ने निर्मला के भावुक और संवेदनशील चरित्र को उभारा है। विवाह से पूर्व पन्द्रह वर्ष की अवस्था में ही वह अपनी भावुकता दर्शाती है। उसके भाई-बहन उससे बातें करते हुए अचानक उसे अकेला छोड़कर चले जाते हैं। वह सोचने लगती है :

''चन्द्रभानु और कृष्णा चले गये, पर निर्मला अकेली बैठी रह गई। कृष्णा के चले जाने से इस समय उसे बड़ा क्षोभ हुआ। कृष्णा, जिसे वह प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी, आज इतनी निष्ठुर हो गई। अकेली छोड़ कर चली गई? निर्मला बड़ी देर तक बैठी रोती रही। भाई-बहन, माता-पिता, सभी इसी भाँति मुझे भूल जायेंगे; सब की आँखें फिर जायेंगी, फिर शायद इन्हें देखने को भी तरस जाऊँ।''

भूँगी ने जब सूचना दी कि मंसा रो रहे हैं तो निर्मला का हृदय भावुक हो उठा :

''उसके जी में प्रबल इच्छा हुई कि चलकर उन्हें चुप कराऊँ और लाकर खाना खिला दूं। बेचारे रात-भर पड़े रहेंगे। हाय! मैं इस उपद्रव की जड़ हूँ। मेरे आने के पहले इस घर में शांति थी। पिता बालकों पर जान देता था, बालक पिता को प्यार करते थे। मेरे आते ही बाधाएं आ खड़ी हुईं। इसका अंत क्या होगा? भगवान ही जाने। भगवान मुझे मौत भी नहीं देते। बेचारा अकेले भूखा पड़ा है। उस वक्त भी मुँह जूठा करके उठ गया था; और उसका आहार ही क्या है–जितना वह खाता है, उतना साल-दो-साल के बच्चे खा जाते हैं।''

निर्मला का चरित्र इतना संवेदनशील है कि दूसरे के गलत आचरण में भी अपना ही दोष देखती है। डॉ. सिन्हा ने उससे अनुचित प्रस्ताव किया और पश्चाताप के कारण आत्महत्या भी कर ली। इस घटना के लिए निर्मला स्वयं को दोषी मानती है।

''यह सोचकर कि मेरी ही निष्ठुरता के कारण डॉक्टर साहब का यह हाल हुआ; निर्मला के हृदय के टुकड़े होने लगे। ऐसी वेदना होने लगी; हृदय में शूल उठ रहा हो।''

रुक्मिणी और निर्मला के इस संवाद में निर्मला की भावुकता स्पष्ट दिखायी देती है।

रुक्मिणी रोती हुई बोली–बहू, तुम्हारा कोई अपराध नहीं। ईश्वर से कहती हूँ, तुम्हारी ओर से मेरे मन में जरा भी मैल नहीं है। हाँ, मैंने सदैव तुम्हारे साथ कपट किया। इसका मुझे मरते दम तक दुःख रहेगा।

''निर्मला ने कातर नेत्रों से देखते हुए कहा–दीदी जी, कहने की बात है पर बिना कहे रहा नहीं जाता। स्वामी जी ने हमेशा मुझे अविश्वास की दृष्टि से देखा, लेकिन मैंने कभी मन में उनकी उपेक्षा नहीं की। जो होना था, वह हो चुका था। अधर्म करके अपना परलोक क्यों बिगाड़ती? पूर्व जन्म में न जाने कौन से पाप किये थे, जिसका यह प्रायश्चित करना पड़ा। इस जन्म में कांटे बोती, तो कौन गति होती?''

इस प्रकार लेखक ने निर्मला के भावुक और संवेदनशील रूप का बहुत सुन्दर चित्रण किया है।

ममतामयी माँ

निर्मला विवाह कर मुँशी तोताराम के यहाँ आती है। तोताराम की पहली पत्नी से तीन लड़के हैं। मंसाराम, जियाराम और सियाराम। निर्मला इन बच्चों की सौतेली माँ बनती

BHDC-109_4th proof.indd 76 8/6/2021 2:09:03 PM

है। यद्यपि मातृत्व का अनुभव उसे नहीं है लेकिन सौतेले पुत्रों के प्रति उसका व्यवहार सगी माँ के समान ही है। तोताराम द्वारा सियाराम की पिटाई वाली घटना से वह और भी कर्त्तव्यपरायण हो जाती है।

'निर्मला' बच्चे को रोता देखकर विकल हो उठी। उसने उसे छाती से लगा लिया। और गोद में लिए हुए अपने कमरे में लाकर उसे चुमकारने लगी।...

वह बड़ी देर तक निर्मला की गोदी में बैठा रोता रहा और रोते-रोते सो गया। निर्मला ने उसे चारपाई पर सुलाना चाहा तो बालक ने सुषुप्तावस्था में अपनी दोनों कोमल बाहें उसकी गर्दन में डाल दीं और ऐसा चिपट गया मानो नीचे कोई गढ़ा हो। शंका और भय से उसका मुख विकृत हो गया। निर्मला ने फिर बालक को गोद में उठा लिया। चारपाई पर न सुला सकी। इस समय बालक को गोद में लिए हुए उसे वह तुष्टि हो रही थी, जो अब तक कभी न हुई थी। आज पहली बार उसे आत्मवेदना हुई, जिसके बिना आँख नहीं खुलती, अपना कर्तव्य-मार्ग नहीं सूझता। वह मार्ग अब दिखायी देने लगा।''

निर्मला की ममता उस समय और भी स्पष्ट रूप से सामने आती है जब उसे पता चलता है कि मंसाराम की तबीयत बहुत खराब हो गई है। रुक्मिणी देवी उसे ये सूचना देती हैं कि मंसा को ताज़ा खून देने की आवश्यकता है। निर्मला की ममता इस सूचना से उमड़ पड़ती है। वह मंसा को अपना खून देने अस्पताल पहुँच जाती है।

जब निर्मला की पुत्री का जन्म होता है और जब पुत्री को लेकर वह पति के पास जाती है उस समय मुंशी जी बच्ची को गोद में नहीं लेते। उस समय निर्मला का पुत्री के प्रति प्रेम देखते ही बनता है। वह बच्ची पर किसी की नज़र नहीं लगने देगी। यहाँ तक कि उसके पिता की भी।

''उसने शतगुण स्नेह से लड़की को हृदय से लगा लिया; मानो उनसे कह रही है—अगर तुम इसके बोझ से दबे जाते हो, तो आज से मैं इस पर तुम्हारी छाया भी न पड़ने दूँगी। जिस रत्न को मैंने इतनी तपस्या के बाद पाया है, उसका निरादर करते तुम्हारा हृदय फट नहीं जाता। वह उसी क्षण शिशु को चिपकाए हुए अपने कमरे में चली आयी और देर तक रोती रही।''

बच्ची के प्रति ममता और चिंता लिये हुए निर्मला का देहांत हो जाता है।

''निर्मला—दीदी जी, अब मुझे किसी वैद्य की दवा फायदा न करेगी। आप मेरी चिंता न करें। बच्ची को आपकी गोद में छोड़ जाती हूँ। अगर जीती-जागती रहे; तो किसी अच्छे कुल में विवाह कर दीजिएगा। मैं तो इसके लिए अपने जीवन में कुछ न कर सकी, केवल जन्म देने भर की अपराधिनी हूँ। चाहे क्वाँरी रखियेगा; चाहे विष देकर मार डालिएगा; पर कुपात्र के गले न मढ़िएगा; इतनी ही आपसे विनय है।''

परिस्थितियों के आगे समर्पण

निर्मला में परिस्थितियों के साथ समझौता करने की प्रवृत्ति भी है। जब उसने देखा कि उसके कारण उसके पति को स्वांग करना पड़ता है तो उसने पति के प्रति कर्तव्य पर अपने को मिटा देने का फैसला कर लिया। वह सोचती हैः

''अब उस वेदना का वेग शांत होने लगा। उसे ज्ञात हुआ कि मेरे जीवन में कोई आनंद नहीं। उसका स्वप्न देखकर क्यों इस जीवन को नष्ट करूँ? संसार के सब के सब प्राणी सुख—सेज पर ही तो नहीं सोते। मैं भी उन्हीं अभागों में हूँ। मुझे भी विधाता ने दुःख की गठरी ढोने के लिए चुना है। वह बोझ सिर से उतर नहीं सकता। उसे फैंकना भी चाहूं तो नहीं फैंक सकती। उस कठिन भार से चाहे आँखों में अँधेरा आ जाये, चाहे गर्दन टूटने लगे, चाहे पैर उठाने दुस्तर हो जाये, लेकिन गठरी ढोनी पड़ेगी।''

BHDC-109_4th proof.indd 77 8/6/2021 2:09:03 PM

वह परिस्थितियों के दबाव में ही यह सोचती है कि सभी मनुष्य को सुख नहीं मिलता, कुछ दुःख सहने के लिए ही जन्म लेते हैं और वह भी उन्हीं लोगों में से है। यदि वह चाहे भी तो इस दुःख से मुक्ति नहीं पा सकती। निर्मला के मन में यह विचार नहीं आता कि वह अपनी परिस्थितियों को बदल भी सकती है। लेकिन उसके लिए जिस साहस और समझदारी की जरूरत होती है, निर्मला में वह नहीं है। कम से कम उसे लगता है कि वर्तमान स्थितियों में से निकलने का कोई मार्ग नहीं है, इसलिए दुःखी रहने और अपने आप पर खीझते रहने की बजाए उसे स्वीकार करने में ही भलाई है।

निर्मला में चरित्रगत बदलाव

निर्मला मृदुभाषिणी नारी थी। विवाह से पूर्व हम देखते हैं कि उसका व्यवहार किसी के प्रति कटु नहीं है। जब भाई और बहन उसे अकेला छोड़कर सैर के लिए चले जाते हैं तो उस समय वह उन्हें कुछ नहीं कहती, उसे पहली बार अपने अकेलेपन का एहसास होता है। विवाह के बाद वह परिस्थितियों से समझौता भी कर लेती है। इसके बावजूद स्थितियाँ बिगड़ती चली जाती हैं। विवाह के बाद परिस्थितियाँ उसके स्वभाव में परिवर्तन लाती हैं। कठिन परिस्थिति में भी वह अपने पर काबू रखती है। ननद रुक्मिणी देवी के कटुवचन को भी वह सहती है, जब रुक्मिणी देवी उसके पत्रों को चुरा कर पढ़ने लगती हैं तो निर्मला के धैर्य की सीमा टूट जाती है। वह पति से कहती है–

'आप ज़रा जीजी को समझा दीजिए, क्यों मेरे पीछे पड़ी रहती हैं।'

वह पति से केवल उन्हीं बातों को सीधे रूप से कहती है जो उसके साथ घटित होता था। वह कभी भी बात को बढ़-चढ़ा कर नहीं कहती।

परिस्थितिवश निर्मला ने मंसाराम को कठोर वचन कहे थे। पति की शंका को निर्मूल करने के लिए उसे ऐसा करना पड़ा।

''सहसा मर्दाने कमरे से मुंशीजी के खाँसने की आवाज आयी। देखा, मालूम हुआ कि मंसाराम के कमरे की ओर जा रहे हैं। निर्मला के चेहरे का रंग उड़ गया। वह तुरंत कमरे से निकल गयी और भीतर जाने का मौका न पाकर कठोर स्वर से बोली–मैं लौंडी नहीं हूँ कि इतनी रात तक किसी के लिए रसोई के द्वार पर बैठी रहूँ। जिसे न खाना हो पहले ही कह दिया करे।''

मुंशीजी ने निर्मला को खड़े देखा। यह अनर्थ! यह यहाँ क्या करने आ गई? बोले–क्या कर रही हो?

निर्मला ने कर्कश स्वर में कहा–''क्या कर रही हूँ, अपने भाग्य को रो रही हूँ। बस सारी बुराइयों की जड़ मैं हूँ। कोई इधर रूठा है, कोई उधर मुँह फुलाए पड़ा है। किस-किस को मनाऊँ और कहाँ तक मनाऊँ।''

परिस्थितियों और आर्थिक तंगी के कारण निर्मला के चरित्र में परिवर्तन होता है। उसके गहने चोरी हो जाते हैं। इसके बाद निर्मला के स्वभाव परिवर्तन की झलक इन संवादों में मिलती है–

''रुक्मिणी ने निर्मला से त्योरियाँ बदलकर कहा–क्या नंगे पाँव मदरसे जायेगा? निर्मला ने बच्ची के बाल गूंथते हुए कहा–मैं क्या करूँ? मेरे पास रुपये नहीं है। रुक्मिणी–गहने बनवाने को रुपये जुड़ते हैं, लड़के के जूतों के लिए रुपयों में आग लग जाती है। दो तो चले ही गए, क्या तीसरे को भी रुला-रुलाकर मार डालने का इरादा है?

निर्मला ने सांस खींचकर कहा–जिसको जीना है, जिये, जिसको मरना है, मरेगा। मैं किसी को मारने-जिलाने नहीं जाती।''

निर्मला का यह कथन उसकी असंवेदनशीलता और नैराश्य को प्रकट करता है।

BHDC-109_4th proof.indd 78 8/6/2021 2:09:03 PM

निर्मला के स्वभाव-परिवर्तन को लेखक विश्लेषणात्मक पद्धति से भी स्पष्ट करता है–

''आजकल एक–न–एक बात पर निर्मला और रुक्मिणी में रोज ही झड़प हो जाती थी। जबसे गहने चोरी गए हैं, निर्मला का स्वभाव बिल्कुल बदल गया है। वह एक-एक कौड़ी दाँत से पकड़ने लगी है। सियाराम रोते-रोते चाहे जान दे दे, मगर उसे मिठाई के लिए पैसे नहीं मिलते; और यह बर्ताव कुछ सियाराम के ही साथ नहीं है; निर्मला स्वयं अपनी जरूरतों को टालती रहती है।''

निर्मला के स्वभाव–परिवर्तन से मुंशीजी भी थोड़ा डरने लगे थे। इस संवाद को देखिये–

''मुंशीजी–तो बिना कुछ खाए ही चला गया?

निर्मला–घर में और रखा था, जो खिला देती?

मुंशीजी–ने डरते-डरते कहा–कुछ पैसे-वैसे न दे दिए?

निर्मला ने भौंहे सिकोड़कर कहा–घर में पैसे फलते हैं न!''

पति के घर छोड़ देने के बाद निर्मला के स्वभाव में और भी परिवर्तन होता है। लेखक ने उसके स्वभाव-परिवर्तन को स्वयं ही स्पष्ट किया है–

''दिन गुजरने लगे। एक महीना पूरा निकल गया, लेकिन मुंशीजी न लौटे कोई खत भी न भेजा। निर्मला को अब नित्य यही चिंता बनी रहती कि वह लौटकर न आये तो क्या होगा? उसे चिंता न होती थी कि उन पर क्या बीत रही होगी, कहाँ-कहाँ मारे-मारे फिरते होंगे, स्वास्थ्य कैसा होगा? उसे केवल अपनी और उससे भी बढ़कर बच्ची की चिंता थी। गृहस्थी का निर्वाह कैसे होगा। ईश्वर कैसे बेड़ा पार लगाएँगे? बच्ची का क्या हाल होगा? उसने कतरब्योंत करके जो रुपये जमा कर रखे थे, उसमें कुछ-न-कुछ रोज कमी होती थी, मानो कोई उसकी देह से रक्त निकाल रहा हो। झुँझलाकर मुंशीजी को कोसती। लड़की किसी चीज़ के लिए रोती; तो ''अभागिनी; कलमुँही'' कहकर झल्लाती। यही नहीं, रुक्मिणी का घर में रहना उसे कष्टकर जान पड़ता था, मानो वह उसके गर्दन पर सवार है।''

उपन्यास में अन्यत्र लेखक लिखता है–

''निर्मला मधुरभाषिणी स्त्री थी, पर अब उसकी गणना कर्कशाओं में की जा सकती थी। दिन भर उसके मुख से जली-कटी बातें ही निकला करती थीं। उसके शब्दों की कोमलता न जाने क्या हो गई? भावों में माधुर्य का कहीं नाम नहीं। भूँगी बहुत दिनों से इस घर में नौकर थी। स्वभाव की सहनशील थी। पर यह आठों पहर की बकबक उससे भी न सही गई। एक दिन उसने भी घर की राह ली। यहाँ तक कि जिस बच्ची को वह प्राणों से भी अधिक प्यार करती थी, उसकी सूरत से घृणा हो गई। बात-बात पर भड़क पड़ती, कभी-कभी मार बैठती।''

इस प्रकार आपने देखा कि निर्मला के चरित्र को स्वाभाविक बनाने के लिए लेखक ने सबसे पहले उसका आदर्श रूप हमारे सामने रखा है। फिर उसका चरित्र यथार्थवादी हो जाता है। हमें कहीं भी ऐसा प्रतीत नहीं होता कि निर्मला कोई अस्वाभाविक कार्य करती है। समय और परिस्थितियों के कारण उसके चरित्र में स्वाभाविक परिवर्तन आता है।

बोध प्रश्न

5. रुक्मिणी देवी बराबर निर्मला के पत्र को पढ़ने की चेष्टा करती। इससे रुक्मिणी देवी की किस प्रवृत्ति का पता चलता है। दो पंक्तियों में उत्तर दें।

.....

.....

BHDC-109_4th proof.indd 79 8/6/2021 2:09:04 PM

6. ''उन्हें भाई की क्षुद्रता से आश्चर्य हुआ। बोली–तो क्या लौंडी बनाकर रखोगे? लौंडी बनाकर रखना हो तो इस घर की लौंडी न बनूंगी।''

उपर्युक्त कथन से रुक्मिणी देवी के किस स्वभाव का पता चलता है। दो पंक्तियों में उत्तर दें।

.....

.....

7. ''उन्हें रुक्मिणी पर इस समय बहुत क्रोध आ रहा था। उन्हें यही जलन है कि मैं घर की मालकिन नहीं हूँ। यह नहीं समझती कि मुझे घर की मालकिन बनने का क्या अधिकार है, जिसे रुपयों का हिसाब तक करना नहीं आता, वह घर की स्वामिनी कैसे बन सकती है?''

तोताराम के उपर्युक्त चिंतन में रुक्मिणी देवी की किस चारित्रिक कमजोरी का उद्‌घाटन हुआ है। चरित्र चित्रण की इस पद्धति को किस नाम से जाना जाता है :

.....

.....

.....

.....

.....

अब हम उपन्यास के एक और प्रमुख पात्र की विस्तृत चर्चा करेंगे।

मुंशी तोताराम

मुंशी तोताराम उपन्यास के प्रमुख पुरुष पात्र और कथा-नायक हैं। लेखक ने उपयुक्त समय पर इस पात्र को उपस्थित किया है। निर्मला के पिता की हत्या हो जाती है। शादी की बात टूट जाती है। कल्याणी के कहने पर पंडित मोटेराम नए वर की खोज में लग जाते हैं। कई रिश्तों में कल्याणी को वकील साहब का रिश्ता उपयुक्त लगता है। कारण अन्य अच्छे रिश्तों के लिए दहेज देना आवश्यक था। तोताराम का परिचय मोटेराम इस प्रकार देते हैं।

''अच्छा यह चौथी नकल देखिए। लड़का वकील है, उम्र कोई पैंतीस साल होगी। तीन-चार सौ की आमदनी है। पहली स्त्री मर चुकी है। उसके तीन लड़के भी हैं। अपना घर बनवाया है। कुछ जायदाद भी खरीदी है। यहाँ भी लेन-देन का झगड़ा नहीं है।''

मोटेराम अंदाज से वकील साहब की उम्र बताते हैं। वास्तव में उनकी उम्र चालीस वर्ष के आसपास हैं। इसे लेखक ने स्वयं स्पष्ट किया है। मुंशीजी अधेड़ उम्र में पंद्रह वर्ष की कन्या के साथ विवाह करते हैं। पत्नी निर्मला की ओर से उदासीनता पाकर उनका शंकालु मन पत्नी तथा पुत्र के संबंध को लेकर चिंतित होता है। शंका के कारण उनकी मानसिक स्थिति बदलती रहती है। इसी शंका के कारण वे अपने पुत्र को खो देते हैं। पुत्र शोक से उनकी मानसिक स्थिति और बिगड़ती जाती है। काम में मन नहीं लगता। कार्य में असफलता मिलने लगती है। आर्थिक तंगी से परिवार में संकट बढ़ता ही जाता है। दूसरे पुत्र जियाराम के कारनामों से उन्हें पुलिस को घूस भी देना पड़ता है। अंत में सबसे छोटे पुत्र को खोने पर वे घर त्याग देते हैं। कभी वे अपने आप को दोष देते हैं कि उन्होंने क्यों शादी की और कभी निर्मला को वे सब कष्टों का कारण मानते हैं। कभी अपने किए पर पश्चाताप भी करते हैं। लेकिन उनका ढुलमुल चरित्र कभी स्थिर नहीं रहता। लेखक ने वकील साहब का–शारीरिक, मानसिक सभी दृष्टि से स्वाभाविक

BHDC-109_4th proof.indd 80 8/6/2021 2:09:04 PM

चित्रण किया है। यद्यपि उनके कारनामे अनुचित होते हैं। फिर भी लेखक ने उन्हें घृणा का पात्र नहीं बनाया है। पाठक को उनके साथ भी सहानुभूति होती है।

तोताराम में हम निम्नलिखित चारित्रिक विशेषताओं को देख सकते हैं:

रोगी पुरुष

निर्मला का विवाह मुंशी तोताराम से होता है। लेखक ने वकील साहब के शारीरिक रूप और उनकी व्याधियों को स्वयं ही इस प्रकार बताया है:

''वकील साहब का नाम था मुंशी तोताराम। साँवले रंग के मोटे-ताजे आदमी थे। उम्र तो अभी चालीस से अधिक न थी, पर वकालत के कठिन परिश्रम ने सिर के बाल पका दिये थे। व्यायाम करने का अवकाश न मिलता था। यहाँ तक कि कभी कहीं घूमने न जाते, इसलिए तोंद निकल आयी थी। देह स्थूल होते हुए भी आए दिन कोई-न-कोई शिकायत रहती थी। मंदाग्नि और बवासीर से तो उनका चिरस्थायी संबंध था। अतएव बहुत फूंक-फूंक कर कदम रखते थे। उनके तीन लड़के थे। बड़ा मंसाराम सोलह वर्ष का था, मंझला जियाराम ग्यारह और सियाराम सात वर्ष का था। तीनों अंग्रेजी पढ़ते थे। घर में वकील साहब की विधवा बहन के सिवा और कोई औरत न थी।''

इस प्रकार तोताराम रोगी व्यक्ति थे, अतः वे परहेज़ से रहते थे। वे परिश्रमी वकील थे जिसके कारण उनके स्वास्थ्य पर असर हुआ था। उन्हें इस उम्र में विवाह की चिंता हुई। उन्होंने पन्द्रह वर्ष की कन्या से विवाह किया, यह उनकी वासनाप्रियता का प्रमाण था।

वासनाप्रिय और आत्मप्रशंसक

मुंशी तोताराम का निर्मला से दूसरा विवाह था। उनकी पहले भी शादी हो चुकी थी जिससे उनके तीन पुत्र भी थे, जिनमें सबसे बड़े मंसाराम की उम्र सोलह वर्ष की थी। पत्नी के न रहने पर उनके घर की देखभाल उनकी बड़ी और विधवा बहन रुक्मणी करती थी। लेकिन दांपत्य सुख की इच्छा ने मुंशीजी को फिर से विवाह करने के लिए प्रेरित किया। छोटी उम्र का ख्याल किए बिना मुंशी जी पंद्रह वर्ष की कन्या निर्मला को अपनी पत्नी बना लाए।

जैसाकि स्वाभाविक था, निर्मला इस विवाह से खुश नहीं थी। पिता के हमउम्र का पति पाकर उसके युवा मन की उमंगें दबकर रह गयी थी। तोताराम के प्रति निर्मला का व्यवहार सहज नहीं हो सकता था, जैसाकि प्रायः पति-पत्नी के बीच होता है। लेकिन मुंशीजी इसे समझ नहीं पाए। निर्मला के संकोच को उन्होंने स्त्री सुलभ लज्जा ही समझा। वे पत्नी को आकर्षित करने के लिए तरह-तरह के स्वांग रचने लगे। आत्म-प्रशंसा द्वारा पत्नी को रिझाने का प्रयत्न किया। उपहारों से प्रसन्न रखना चाहा। उपन्यासकार के शब्दों में–

''तोताराम दम्पत्ति-विज्ञान में कुशल थे। निर्मला को प्रसन्न रखने के लिए उनमें जो स्वाभाविक कमी थी, उसे वह उपहारों से पूरी करना चाहते थे। यद्यपि वह बहुत ही मितव्ययी पुरुष थे; तथापि निर्मला के लिए कोई-न-कोई तोहफा रोज़ लाया करते। मौके पर धन की परवाह न करते। लड़कों के लिए थोड़ा दूध आता पर निर्मला के लिए मेवे, मुरब्बे, मिठाइयाँ–किसी चीज़ की कमी न थी। अपनी जिन्दगी में कभी सैर-तमाशे देखने न गए थे। अब अपने बहुमूल्य समय का थोड़ा-सा हिस्सा उसके साथ बैठकर ग्रामोफोन बजाने में व्यतीत किया करते थे।''

मुंशीजी के मित्र नयनसुख उन्हें जवांमर्दी दिखाकर पत्नी को आकर्षित करने की सलाह देता है। तोताराम वैसा ही करते हैं। आत्मप्रशंसा के लिए वे स्वांग रचते हैं। उदाहरण के लिए यह प्रसंग देखिए–

BHDC-109_4th proof.indd 81 8/6/2021 2:09:04 PM

''एक दिन रात को नौ बजे तोताराम बाँके बने हुए सैर करके लौटे और निर्मला से बोले–आज तीन चोरों से सामना हो गया। मैं जरा शिवपुर की तरफ चला गया था। अँधेरा था, ज्यों ही रेल की सड़क के पास पहुँचा, तो तीन आदमी तलवार लिये हुए न जाने किधर से निकल पड़े। यकीन मानो, तीनों काले देव थे। मैं बिल्कुल अकेला; हाथ में सिर्फ यह छड़ी थी। उधर तीनों तलवार बाँधे हुए, होश उड़ गए। समझ गया कि जिन्दगी का यहीं तक साथ था; मगर मैंने भी सोचा मरता ही हूँ तो वीरों की मौत क्यों न मरूँ। इतने में एक आदमी ने ललकारकर कहा–रख दे, पास जो कुछ हो और चुपके से चला जा। मैं छड़ी सँभाल कर खड़ा हो गया और बोला–मेरे पास सिर्फ यही छड़ी है और इसका मूल्य एक आदमी का सिर है।''

''मेरे मुँह से इतना निकलना था कि तीनों तलवार खींचकर मुझ पर झपट पड़े और मैं उनके वारों को छड़ी पर रोकने लगा। तीनों झल्ला झल्लाकर वार करते थे, खटाके की आवाज होती थी और मैं बिजली की तरह झपट कर उनके वारों को काट देता था। कोई दस मिनट तक तीनों ने खूब तलवार का जौहर दिखायाः मुझ पर रेफ तक न आयी। मजबूरी यह थी कि मेरे हाथ में तलवार न थी। यदि कहीं तलवार होती तो एक को जीता न छोड़ता। खैर, कहाँ तक बयान करूँ, उस वक्त मेरे हाथ की सफाई देखने काबिल थी। मुझे खुद आश्चर्य हो रहा था कि यह चपलता मुझमें कहां से आ गई। जब तीनों ने देखा कि यहाँ दाल नहीं गलने की, तो तलवार म्यान में रख ली और पीठ ठोंककर बोले–जवान, तुम-सा वीर आज तक नहीं देखा। हम तीनों सौ पर भारी हैं, गाँव-के-गाँव ढोल बजाकर लूटते हैं। पर आज तुमने हमें नीचा दिखा दिया। हम तुम्हारा लोहा मान गए। कहकर तीनों फिर नजरों से गायब हो गए।''

कहने की आवश्यकता नहीं कि यह पूरा प्रसंग मुंशीजी ने अपनी जवांमर्दी दिखाने के लिए गढ़ा है। यह आत्मप्रशंसा का सबसे सुंदर नमूना है।

ढोंगी

मुंशीजी पत्नी को रिझाने के लिए ढोंग भी किया करते थे, बालों को रंग कर, सुरमा लगाकर, निकले हुए तोंद को कसकर वे जवांमर्द दिखने का प्रयत्न करते थे। मुंशी तोताराम धीरे-धीरे रंग बदलने लगे, जिनसे लोग खटक न जायें। पहले बालों से शुरू किया, फिर सुरमे की बारी आई, यहाँ तक कि एक दो महीने में उनका कलेवर ही बदल गया। उनकी नज़र में गजलें याद करने का प्रस्ताव तो हास्यास्पद था, लेकिन वीरता की डींग मारने में कोई हानि न थी।

शंकालु

आप स्पष्ट देख रहे हैं कि किस प्रकार कथा आगे बढ़ती है और साथ ही साथ पात्र में परिवर्तन भी आता है। जब सभी प्रकार के प्रयत्नों से भी तोताराम निर्मला को रिझा नहीं पाते तो उन्हें खीज होती है। एक छोटी-सी घटना के साथ उनके चरित्र में परिवर्तन आता है। एक दिन मंसाराम खेलकर आता है। निर्मला उसे कुछ मेवे खाने को देती है। जब वह खाकर जाने लगता है तो पूछती है कि कब आइयेगा। जवान बेटे के प्रति निर्मला के इस स्नेह को वे सह नहीं पाते और निर्मला से चिढ़कर पूछ बैठते हैं–

''यह तुम्हारे पास खाने-पीने की चीज क्यों माँगने आता है? दीदी से क्यों नहीं कहता?''

तोताराम में इन्हीं छोटी-छोटी बातों से शंका उत्पन्न होती है। उनमें पुत्र और पत्नी के प्रति शंका बढ़ती ही जाती हैं। पुत्र को घर से बाहर रखने का प्रयत्न करते हैं। निर्मला तथा मंसाराम दोनों उनकी शंका को पहचान जाते हैं। निर्मला पति के व्यवहार से दुःखी रहती है और सब तरह से प्रयत्न करती है कि पति उसकी निष्ठा पर संदेह न करे। मंसाराम को पिता के इस शंका से इतना दुःख पहुँचता है कि उसमें जीने की इच्छा ही मर जाती है और अंत में मर भी जाता है।

BHDC-109_4th proof.indd 82 8/6/2021 2:09:04 PM

मंसाराम के अस्वस्थ हो जाने तथा स्थिति नाजुक होने पर भी तोताराम की शंकालु प्रवृत्ति में फर्क नहीं आता।

''आखिर मुंशीजी ने मंसाराम से कहा–बेटा, तुम्हें घर चलने से क्यों इंकार हो रहा है? वहाँ तो सभी तरह का आराम होगा। मुंशीजी ने कहने को तो यह बात कह दी; लेकिन डर रहे थे कि कहीं मंसाराम चलने पर राजी न हो जाये। वह मंसाराम को अस्पताल में रखने का कोई बहाना खोज रहे थे। और उसकी सारी जिम्मेदारी मंसाराम के सिर पर डालना चाहते थे।''

तोताराम की शंका ने ही परिवार में अशांति ला दी। पुत्र की मृत्यु हो जाने पर उनके स्वभाव में फिर परिवर्तन होता है और यह परिवर्तन भी उनके मूल स्वभाव के अनुरूप होता है।

आत्मपीड़क

आत्मपीड़क का तात्पर्य है अपने किए हुए कार्य पर पश्चाताप कर स्वयं को पीड़ित करना। पुत्र शोक के कारण तोताराम की दिनचर्या ही बदल गई। यदि तोताराम ने सोच समझ कर काम लिया होता तो, हो सकता है उनका घर बर्बाद होने से बच जाता। वे अपनी वासना की तृप्ति के लिए इतना भी ख्याल न कर पाए कि जिस कन्या के साथ वे विवाह रचा रहे हैं, वह उसके बड़े पुत्र के उम्र की है। उनकी करनी के कारण निर्मला का जीवन भी परिवर्तित हो जाता है। पत्नी का प्यार न पाने से उनके अंदर कुंठा जन्म लेती है; बाद में वह कुंठा शंका में बदल जाती है। अपनी शंका के कारण वे अपने गुणवान पुत्र को खो देते हैं। पुत्र का शोक इतना गहरा होता है कि उनके आगे के जीवन को और भी दुःखदायी बना देता है। वे आत्मपीड़ा से व्याकुल रहने लगते हैं। लेखक ने उनकी मनोव्यथा का सुंदर चित्रण किया है।

''पुत्र शोक से मुंशीजी का जीवन भार स्वरूप हो गया। उस दिन से फिर उनके होठों पर हँसी न आयी। यह जीवन उन्हें व्यर्थ-सा जान पड़ता था। कचहरी जाते, मगर मुकदमों को पैरवी करने के लिए नहीं, केवल दिल बहलाने के लिए। घंटे-दो-घंटे में वहाँ से उकताकर चले आते। खाने बैठते तो कौर मुँह में न जाता। निर्मला अच्छी से अच्छी चीज पकाती पर मुंशीजी दो-चार कौर से अधिक न खा सकते। ऐसा जान पड़ता कि कौर मुँह से निकला जाता है। मंसाराम के कमरे की ओर जाते ही उनका हृदय टूक-टूक हो जाता था। उनके दो पुत्र अब भी थे, लेकिन दूध देती गाय मर गई, तो बछिया का क्या भरोसा? जब फलने-फूलने वाला वृक्ष गिर पड़ा तो नन्हें-नन्हें पौधों की क्या आशा? यों तो जवान-बूढ़े सभी मरते है; लेकिन दुःख इस बात का था कि उन्होंने स्वयं लड़के की जान ली। जिस दम यह बात याद आती, तो ऐसा मालूम होता कि उनकी छाती फट जायेगी–मानों हृदय बाहर निकल पड़ेगा।''

जब उनका सबसे छोटा पुत्र सियाराम घर छोड़ कर चला जाता है। उस समय तोताराम पर क्या बीतती है, उसका चित्रण देखिए।

''क्या मुंशीजी को नींद आ सकती थी? तीनों लड़कों में केवल एक बच रहा था वह भी हाथ से निकल गया, तो फिर जीवन में अंधकार के सिवाय और क्या है? कोई नाम लेनेवाला भी न रहेगा। हा, कैसे-कैसे रत्न हाथ से निकल गए। मुंशीजी की आँखों से अश्रुधारा बह रही थी तो कोई आश्चर्य है? उस व्यापक पश्चाताप, उस सघन ग्लानि-तिमिर में आशा की एक हल्की-सी रेखा उन्हें सँभाले हुए थी। किस क्षण यह लुप्त हो जायेगी कौन कह सकता है, उन पर क्या बीतेगी? उनकी उस वेदना की कल्पना कौन कर सकता है?''

BHDC-109_4th proof.indd 83 8/6/2021 2:09:04 PM

चूंकि मुंशी तोताराम अपने किए हुए कार्य पर विचार करते, फिर सोचते हैं कि यदि अंतिम पुत्र भी नहीं लौटा तो उनके भविष्य का क्या होगा? कौन उन्हें सहारा देगा, इन्हीं सब बातों के कारण उन्हें आत्मपीड़ा होती है।

आत्मालोचक

मुंशीजी में आत्मालोचना करने का भी गुण है अर्थात् वे अपने किए हुए कार्यों पर विचार करते हैं कि क्या उन्होंने जो किया वह अनुचित था, अगर अनुचित था तो किस प्रकार। यह और बात है कि आत्मालोचना से वे कुछ सीखते नहीं है। यही नहीं वे उसे साथ ही साथ उचित ठहराने का प्रयत्न भी करते हैं और इसी वजह से उनके जीवन की कोई भी समस्या हल नहीं हो पाती। उनके आत्मालोचक चरित्र को देखिए,

''उन्होंने सोचा, मुझे यह दुर्भावना उत्पन्न ही क्यों हुई? मैंने क्यों बिना किसी प्रत्यक्ष प्रमाण के ऐसी भीषण कल्पना कर डाली? अच्छा, मुझे उस दशा में क्या करना चाहिए था? जो कुछ उन्होंने किया, उसके सिवा वह और क्या करते इसका वह निश्चय न कर सके। वास्तव में विवाह के बंधन में पड़ना ही अपने पैरों में कुल्हाड़ी मारना था। हाँ, यही सारे उपद्रव की जड़ है।''

फिर वे अपने किए कर्म को तर्क से मन ही मन उचित ठहराने का प्रयत्न करते हैं।

''मगर यह मैंने कोई अनोखी बात नहीं की। सभी स्त्री-पुरुष विवाह करते हैं उनका जीवन आनंद से कटता है। आनंद की इच्छा से ही तो हम विवाह करते हैं। मुहल्ले में सैकड़ों आदमियों ने दूसरी, तीसरी, चौथी यहाँ तक कि सातवीं शादियाँ की हैं और मुझसे भी अधिक अवस्था में। जब तक जिए, आराम ही से जिए। यह भी नहीं हुआ कि सभी स्त्री से पहले मर गए हों। दुहाज-तिहाज होने पर भी कितने ही रंडुए ही गए। अगर मेरी जैसी दशा सबकी होती, तो विवाह का नाम ही कौन लेता? मेरे पिता जी ने पचपनवें वर्ष में विवाह किया था और मेरे जन्म के समय उनकी अवस्था साठ से कम न थी। हाँ इतनी बात जरूर है कि तब और अब में कुछ अंतर हो गया है। पहले स्त्रियाँ पढ़ी-लिखी न होती थीं। पति चाहे कैसा ही हो, उसे पूज्य समझती थी; या यह बात हो कि पुरुष सब कुछ रखकर भी बेहयाई से काम लेता हो, अवश्य यही बात है। जब युवक वृद्धा के साथ प्रसन्न नहीं रह सकता; तो युवती क्यों किसी वृद्ध के साथ प्रसन्न रहने लगी।''

इस प्रकार एक ओर तो वे अपने मन को तर्क द्वारा मनाते हैं कि जो उन्होंने किया उचित किया क्योंकि ऐसा और भी लोग भी करते हैं। दूसरी ओर, वे आत्मलोचना करके अपने कार्य को अनुचित ठहराते हैं। लेकिन उनका आत्मालोचक मन यह मानने को तैयार नहीं कि वे बूढ़े हो गए हैं। देखिए–''लेकिन मैं तो कुछ ऐसा बूढ़ा न था। मुझे देखकर कोई चालीस से अधिक नहीं बता सकता। कुछ भी हो; जवानी ढल जाने पर जवान औरत से विवाह करके कुछ-न-कुछ बेहयाई जरूर करनी पड़ती है; इसमें संदेह नहीं।''

वे यह भी सोचते हैं कि अनमेल विवाह के कारण पति-पत्नी का मन नहीं मिल पाता।

''स्त्री स्वभाव से लज्जाशील होती है। जोड़ का पति पाकर वह परपुरुष से हँसी दिल्लगी कर ले; उसका मन शुद्ध रहता है। बेजोड़ विवाह हो जाने से वह चाहे किसी की ओर आँख उठाकर न देखें, पर उसका चित्त दुःखी रहता है।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि लेखक ने मुंशी तोताराम का बड़ा स्वाभाविक और यथार्थ चित्रण किया है। तोताराम के कार्य, उनका चिंतन, सभी स्वाभाविक हैं। किस प्रकार की परिस्थिति में वे क्या करते हैं तथा क्या सोचते हैं, सब स्वाभाविक बन पड़ा है। उनकी चारित्रिक दुर्बलताओं को लेखक ने कभी विवरण से, तो कभी मनोविश्लेषण से, और कभी

BHDC-109_4th proof.indd 84 8/6/2021 2:09:04 PM

संवादों के माध्यम से उभारा है। कुल मिलाकर मुंशी तोताराम कई प्रकार की मानवीय दुर्बलताओं से भरे साधारण व्यक्ति हैं। अपनी दुर्बल शारीरिक और मानसिक प्रवृत्तियों से संचालित होने के कारण वे अपने लिए ही नहीं अपने परिवार के लिए भी लगातार संकट पैदा करते हैं। इसी वजह से वह अपनी और अपने परिवार की खुशहाल जिंदगी को नष्ट कर डालते हैं। तोताराम के परिवार की दुर्दशा के लिए अगर कोई जिम्मेदार है, तो वह स्वयं तोताराम।

4.5.2 गौण पात्र

अब तक हमने उपन्यास के मुख्य पात्रों का विश्लेषण किया है। अब हम गौण पात्रों का विश्लेषण करेंगे। जैसा कि हमने बताया है, गौण पात्रों की रचना लेखक अपने मुख्य पात्रों के चरित्र चित्रण और कथा के विकास के लिए करता है। समयानुकूल ये पात्र कथा में आते जाते हैं। कथा में ऐसे पात्र या तो एक बार आकर लुप्त हो जाते हैं या लगातार कहीं-कहीं उपस्थित होते रहते हैं। गौण पात्र ऐसे भी होते हैं जो कथा में आरंभ से अंत तक रहें, लेकिन उनके कार्य-व्यापार इतने सीमित रहते हैं कि उन्हें गौण पात्र की श्रेणी में ही रखा जाएगा। उदाहरणस्वरूप आप 'निर्मला' उपन्यास की कथा में भूँगी पात्र को लें, यह पात्र वकील साहब के घर की नौकरानी है; लेखक उसे कथा में आदि से अंत तक रखता है। लेकिन उसका कार्य-व्यापार सीमित है। कभी वह कोई सूचना देने के लिए उपस्थित होती है कभी अन्य कार्य के लिए।

लेकिन इसका तात्पर्य यह नहीं है कि गौण पात्र महत्त्वपूर्ण नहीं होते। भले ही ये कथा में कुछ देर के लिए आएँ, इनके द्वारा कथा को गति मिलती है। इसी उपन्यास में मतई नामक गौण पात्र को लीजिए। लेखक ने इस पात्र के द्वारा कथा में एक नया मोड़ उपस्थित किया है। मतई को उदयभानुलाल ने सजा दिलवाई थी। वह सजा काटकर जेल से छूटता है। संयोग से उसी दिन उदयभानुलाल का अपनी पत्नी से झगड़ा होता है। वे रात्रि में घर छोड़ कर निकल पड़ते हैं। मतई उनसे बदला लेने के लिए उनकी हत्या कर देता है। इस प्रकार कथा में नया मोड़ उपस्थित होता है। मतई का चरित्र यहीं समाप्त हो जाता है। कथा में आगे फिर कहीं उसका जिक्र नहीं होता। इसी प्रकार हम पंडित मोटेराम को लें। इस पात्र को लेखक ने निर्मला के विवाह तक रखा है। वे निर्मला के विवाह के लिए प्रयत्नशील रहते हैं और उनके प्रयत्नों से ही निर्मला का विवाह होता है। निर्मला की बहन कृष्णा, भाई, माता कल्याणी आदि सभी पात्र समय-समय पर आते हैं। यद्यपि इन पात्रों को कथा में कम स्थान दिया गया है लेकिन इनके द्वारा मुख्य पात्र के चरित्र को उभारा गया है। निर्मला की बहन कृष्णा की रचना एक ओर निर्मला के चरित्र को उभारती है, वहीं डॉ. भुवन सिन्हा के पूर्व कार्यों के पश्चाताप के लिए सहायक होता है। पाठक जब कृष्णा और निर्मला को एक जगह पाता है तो दोनों के भाग्य की तुलना करता है और पाता है कि निर्मला की अपेक्षा कृष्णा भाग्यशालिनी है। डॉ. सिन्हा अपने भाई के साथ कृष्णा का विवाह करके अपने पूर्व कार्य के प्रति पश्चाताप करते हैं।

उपन्यास की कथा कृष्णा और डॉक्टर सिन्हा के भाई के विवाह की बात से आगे बढ़ती है। लेखक यह भी दिखाना चाहता है कि दहेज की समस्या न रहे तो किसी लड़की का जीवन किस प्रकार सुधर जाता है। कृष्णा का परिचय हम कथा के आरंभ में ही पाते हैं लेकिन कथा को आगे बढ़ाने के लिए उसका प्रसंग फिर जोड़ा जाता है। सुधा और डॉक्टर सिन्हा को जब इस बात का पता चलता है कि निर्मला वही लड़की है जिसके साथ पहले डॉ. सिन्हा का विवाह तय हुआ था। और इस प्रकार कृष्णा के विवाह की बात होती है। इस प्रकार गौण पात्रों के द्वारा कथा आगे बढ़ती है।

BHDC-109_4th proof.indd 85 8/6/2021 2:09:04 PM

अभ्यास

5. नीचे लिखे बिंदुओं के आधार पर रुक्मिणी देवी का चरित्र चित्रण कीजिए।

   i) छोटे भाई के घर की विधवा मालकिन

   ii) ईर्ष्यालु

   iii) शंकालु प्रवृत्ति

   iv) क्रोधी स्वभाव

   v) ममतामयी महिला

6. निम्नलिखित बिंदुओं के आधार पर मंसाराम का चरित्र चित्रण कीजिए।

   निर्भीक, निष्कपट, परिश्रमी तथा स्वाभिमानी युवक

   इसी तरह उसके अन्य प्रमुख गुणों को ध्यान में रखते हुए लगभग 500 शब्दों में उसका चरित्र चित्रण कीजिए।

7. सुधा उपन्यास की प्रमुख पात्रों में से हैं।

   वह सहृदय, सच्ची सहेली, पतिव्रता, स्पष्टवादिनी, वाकपटु तथा विनोदप्रिय महिला है। उसके इन गुणों को ध्यान में रखते हुए लगभग 500 शब्दों में उसका चरित्र चित्रण कीजिए।

4.6 सारांश

आशा है आपने इस इकाई को ध्यानपूर्वक पढ़ा होगा। उपन्यास के कथानक का आधार पात्र होते हैं। पात्रों के द्वारा लेखक घटनाओं को नए-नए मोड़ देता चलता है। इस पाठ में आपने उपन्यास के पात्रों के चरित्र चित्रण की विस्तृत जानकारी प्राप्त कर ली है। अब आप जान गए होंगे कि :

- उपन्यासकार कभी स्वयं विश्लेषण द्वारा, कभी पात्रों के संवाद द्वारा, कभी पात्रों के मन में उठनेवाले भावों द्वारा और कभी पूर्व घटना की जानकारी द्वारा पात्रों का चरित्र चित्रण करता है, इसके आधार पर आप चरित्र चित्रण की उपर्युक्त सभी विधियों के बारे में बता सकते हैं।
- पात्रों के चरित्र को प्रभावशाली और जीवंत बनाने के लिए यह आवश्यक है कि वे कथा के अनुकूल हों, स्वाभाविक लगें, वे प्राणवान हों तथा उनमें संवेदनशीलता हों। आप चरित्र चित्रण से संबंधित इन गुणों के आधार पर 'निर्मला' के किसी भी पात्र का चरित्र विश्लेषण कर सकते हैं।
- 'निर्मला' उपन्यास में लेखक के चरित्र चित्रण की किन-किन विधियों का उपयोग किया है, उन्हें स्पष्ट कर सकते हैं।

4.7 शब्दावली

भावनाएँ : अनुभव और स्मृति से मन में उत्पन्न होने वाला कोई विकार। ध्यान, ख्याल, विचार।

मितव्ययी : कम खर्च करने वाला।

दृष्टिकोण : वह समझ जिससे किसी बात का निहितार्थ समझने की कोशिश की जाय।

तथ्यपूर्ण : सच्चाई से पूर्ण, यथार्थता।

BHDC-109_4th proof.indd 86 8/6/2021 2:09:04 PM

तादात्म्य : एक वस्तु का दूसरी वस्तु से मिलकर उसके साथ एक हो जाना।

सहृदय : दूसरों के दुःख-सुख आदि समझने वाला।

संवेदना : मन में होने वाला बोध या अनुभव। अनुभूति। किसी को कष्ट में देखकर मन में उत्पन्न होने वाला भाव।

निश्छल : जो छल-कपट न जानता हो। सरल प्रकृति का। सीधा।

भावुक : भावना करने या सोचने वाला। जिसके मन में कोमल भावों की प्रबलता हो अथवा जिस पर कोमल भावों का जल्दी और अधिक प्रभाव पड़ता हो।

4.8 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

बोध प्रश्न

1. उपन्यासकार जब अपने पात्रों के बारे में स्वयं कुछ कहता है, अर्थात उनके चारित्रिक गुण, अवगुण को खुद स्पष्ट करता है तब इस पद्धति को विश्लेषणात्मक पद्धति कहते हैं।
2. i) संवादात्मक पद्धति ii) मनोवैज्ञानिक पद्धति iii) पूर्ववृत्तात्मक
3. 1) स्वाभाविकता 2) मौलिकता 3) संवदेनशीलता
4. जब किसी उपन्यासकार के पात्र मौलिक हों अर्थात् वे किसी अन्य रचना के आधार पर नहीं तैयार किए गए हों। उस लेखक से पूर्व के अन्य रचनाकारों ने वैसे पात्रों की रचना न की हो, तब वैसे पात्र को मौलिक कहते हैं।
5. रुक्मिणी देवी निर्मला के पत्र शंका के कारण पढ़ा करती थी। उनकी शंकालु प्रवृत्ति को यह भय रहता था कि पत्र में उनकी शिकायत लिखी होगी।
6. उपर्युक्त कथन द्वारा रुक्मिणी देवी के क्रोधी और वाचाल स्वभाव का पता चलता है। वे स्पष्टवक्ता भी हैं।
7. तोताराम के इस चिंतन में रुक्मिणी देवी के इस चरित्र का पता चलता है कि अनधिकार घर की मालकिन बनना चाहती थीं, जबकि उन्हें पैसे का सही-सही हिसाब भी रखना नहीं आता था। चरित्र चित्रण की इस पद्धति को मनोविश्लेषणात्मक पद्धति के अंतर्गत रखा जा सकता है। इसमें एक पात्र दूसरे पात्र के बारे में सोचता है जिससे उसका चरित्र स्पष्ट होता है।

अभ्यास

1. ''मुंशीजी ने दिल में कहा–खूब समझता हूँ। तुम कल की छोकरी होकर मुझे चराने चली? दीदी का सहारा लेकर अपना मतलब पूरा करना चाहती है। बोले–मैं नहीं समझता, बोर्डिंग का नाम सुनकर क्यों लौंडे की नानी मरती है। और लड़के खुश होते हैं कि अपने दोस्तों में रहेंगे, यह उल्टे रो रहा है।''
2. उपर्युक्त कथन में मंसाराम का बनावटी रोष प्रकट हुआ है। वह जानता है कि पिता की गलतफहमी के कारण निर्मला को कष्ट होता है, इसलिए वह नहीं चाहता कि पिता की शंका बलवती हो और सौतेली माँ की कठिन परिस्थिति और कठिन बन जाए।
3. उपर्युक्त चिंतन में तोताराम के अंदर कई भाव एक साथ उभरते हैं। वे दुःखी हैं कि उनके पुत्र का स्वास्थ्य गिर गया है। चिंता है कि इसे कहाँ रखा जाए, और शंकित हैं कि घर पर निर्मला उसके पास बैठी रहेगी। दुख, चिंता और शंका के

BHDC-109_4th proof.indd 87 8/6/2021 2:09:04 PM

भाव उनके अंदर उठते हैं। और वे कुछ भी निर्णय लेने में असमर्थ हैं। इस प्रकार समग्र रूप से उनका ढुलमुल चरित्र उभरता है। वे क्या करें, क्या न करने की स्थिति में लटके हुए हैं।

4. ''अगर मेरी–जैसी दशा सबकी होती, तो विवाह का नाम ही कौन लेता? मेरे पिता जी ने पचपनवें वर्ष में विवाह किया था और मेरे जन्म के समय उनकी अवस्था साठ से कम न थी। हाँ, इतना जरूर है कि तब और अब में कुछ अंतर हो गया है।''

5, 6 और 7 का उत्तर उपन्यास और इस इकाई को पढ़कर स्वयं लिखें।

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

BHDC-109_4th proof.indd 88 8/6/2021 2:09:04 PM

इकाई 5 'निर्मला' : परिवेश और संरचना-शिल्प

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य

5.1 प्रस्तावना

5.2 परिवेश

5.3 संरचना–शिल्प

5.3.1 शैली

5.3.2 भाषा

5.3.3 संवाद

5.4 सारांश

5.5 शब्दावली

5.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

5.0 उद्देश्य

इस इकाई से पहले की इकाई में आपने उपन्यास के पात्रों के चरित्र के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त की थी। इस इकाई में हम आपको उपन्यास के परिवेश और संरचना–शिल्प की जानकारी देंगे। संरचना–शिल्प के अंतर्गत उपन्यास की शैली, भाषा और संवाद शामिल हैं। इस इकाई को पढ़ने के बाद आपः

- उपन्यास के परिवेश से संबंधित विशेषताओं को बता सकेंगे;
- उपन्यास की शैली का विश्लेषण प्रस्तुत कर सकेंगे;
- उपन्यास की भाषा और संवाद के विषय में बता सकेंगे; और
- 'निर्मला' उपन्यास के परिवेश, शैली, भाषा और संवाद का विश्लेषण कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

लेखक जिस देश, स्थान और समाज में रहता है उस देश की सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक और आर्थिक परिस्थितियों का प्रभाव उस पर अवश्य पड़ता है। अपने समाज की परिस्थितियों से प्रभावित होकर ही उसकी रचना ऊँचे दर्जे की बनती है। इस पाठ में देखेंगे कि किस प्रकार 'निर्मला' उपन्यास में तत्कालीन सामाजिक परिवेश अभिव्यक्त हुआ है। अपनी बात को कहने के लिए प्रत्येक लेखक भिन्न-भिन्न तरीके अपनाता है। इस संदर्भ में हम उपन्यास की शैलियों के बारे में विस्तृत जानकारी प्राप्त करेंगे। प्रेमचंद ने 'निर्मला' उपन्यास में किस प्रकार की शैली अपनाई है, और उसकी क्या विशेषताएँ हैं इसे भी हम पाठ के माध्यम से जान सकेंगे। उपन्यासकार अपनी रचना के लिए कोई-न-कोई भाषा अपनाता है लेकिन उसे रचना की कथावस्तु और प्रतिपाद्य को ध्यान में रखते हुए भाषा का उपयोग करना होता है। उपन्यास की भाषा किस प्रकार स्वाभाविक बनती है तथा इसके लिए उसमें क्या-क्या गुण होने चाहिए, इसके बारे में विचार किया जाएगा। उपन्यास के पात्रों के संवाद कितने प्रकार के होते हैं, उन्हें स्वाभाविक बनाने के लिए किन-किन बातों का ध्यान रखना पड़ता है, उसे भी हम विस्तृत रूप से जानेंगे। कुछ उदाहरण से हम यह भी जानने का प्रयत्न करेंगे कि 'निर्मला' में पात्रों के संवाद कितने सटीक बन पाए हैं। आइए, पहले परिवेश के बारे में जानें।

ignou THE PEOPLE'S UNIVERSITY

5.2 परिवेश

किसी भी उपन्यास को भली-भाँति समझने के लिए उसका परिवेशगत अध्ययन आवश्यक है, क्योंकि यह जानना भी जरूरी है कि उपन्यास जिस समय लिखा जा रहा था, उस समय देश और समाज की क्या दशा थी। प्रत्येक लेखक चाहे वह किसी विधा में लिख रहा हो, अपने समय के परिवेश से सर्वाधिक प्रभावित होता है। इस प्रकार परिवेश की छाप उसकी कृति पर स्पष्ट दिखाई देती है। आइए, सबसे पहले परिवेश शब्द को अच्छी प्रकार समझ लें।

परिवेश शब्द का कोशगत पहला और मूल अर्थ होता है : घेरा। परिवेश हमारे चारों ओर के उस परिदृश्य का नाम है जिसके कारण हमारा जीवन है और जिसके कारण हमारी वृद्धि और विकास होता है। परिवेश शब्द के पर्याय हैं–प्राकृतिक पर्यावरण, परिसर, आस-पड़ोस आदि। अगर इसे हम व्यापक रूप से जानें तो इसका अर्थ होगा, पारिवारिक, सामाजिक, धार्मिक, नैतिक, आर्थिक और राजनीतिक परिस्थितियों का सामूहिक रूप जिसमें कि हम जन्म से मरण तक घिरे रहते हैं और जिससे प्रभावित होते हैं। गहराई से विचार करें तो हमें ज्ञात होगा कि दो ऐसे विशेष कारण हैं जिनसे परिवेश निरंतर परिवर्तनशील और गतिशील रहता है। ये दो तत्त्व हैं, देश और काल। देश का अभिप्राय है वह भूमि जिस पर प्रकृति के सभी चेतन पदार्थ जन्म लेते हैं और बड़े होते हैं। इस प्रकार देश में भूमि पर रहने वाला मानव और उससे संबंधित सभी बातें आ जाती हैं। प्रकृति के मौसम या बदलते रंग, पशु-पक्षियों, पेड़-पौधों और मानव जीवन के क्रिया-कलापों को प्रभावित करते रहते हैं, और उन्हीं के अनुसार अपना रंग भी बदलते रहते हैं।

साहित्य मानव जीवन का संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करता है। उसमें भी अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास मानव जीवन का यथार्थ प्रतिबिंब प्रस्तुत करने में अधिक समर्थ है। उपन्यासकार अपने उपन्यास में देश और काल का जीता-जागता रूप प्रस्तुत करता है। आइए 'निर्मला' उपन्यास के परिवेश को देखते हुए इसे समझें।

'निर्मला' की कहानी भारतवर्ष की उन निम्नमध्यवर्गीय बेबस युवतियों की कहानी है जो दहेज के अभाव में किसी बूढ़े, अपाहिज, रोगी और शराबी आदि कुपात्रों के गले बिना उनकी इच्छा जाने मढ़ दी जाती हैं। प्रेमचंद ने 'निर्मला' की कहानी जीवन के सच्चे अनुभवों की बुनियाद पर खड़ी की है। इलाहाबाद के एक परिवार से उन्होंने यह कथानक लिया। प्रेमचंद का उस परिवार में बराबर आना-जाना था। प्रेमचंद के पुत्र अमृतराय ने प्रेमचंद की जीवनी 'कलम का सिपाही' में लिखा है–

''और इसमें शक नहीं कि औरत की ज़िन्दगी का दर्द जिस तरह इस किताब में निचुड़कर आ गया है वैसा मुंशी जी की और किसी किताब में मुमकिन न हुआ, न आगे न पीछे।''

उपन्यास की कथा आप भली-भाँति पढ़ चुके हैं। इसके माध्यम से प्रेमचंद दो सामाजिक कुरीतियों को प्रस्तुत करना चाहते थे। वे हैं–दहेज प्रथा और अनमेल विवाह। ये दोनों समस्याएँ परस्पर एक दूसरे से जुड़ी हुई हैं। ये दोनों प्रेमचंद के समय के समाज की कुरीतियाँ थीं। कोई भी उपन्यासकार या अन्य विधाओं के लेखक अपने समाज की वास्तविकताओं से अलग रहकर लेखन कार्य नहीं कर सकता। समाज की राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक परिस्थितियाँ जैसा वातावरण बनाती हैं, उसका सम्मिलित प्रभाव ही परिवेश का निर्माण करता है। प्रत्येक व्यक्ति का चिंतन, दैनिक घटनाओं की प्रतिक्रियाओं से भी प्रभावित होकर व्यावहारिक बनता है इसे केवल घर या राजनीति तक ही सीमित नहीं रख सकते। इसलिए साहित्यकार भी चाहे राजनीतिक घटनाएँ हों, चाहे आर्थिक विषमता हो, या धार्मिक संस्कार हो अथवा सामाजिक विघटन हो, इनमें से

BHDC-109_4th proof.indd 90 8/6/2021 2:09:04 PM

किसी एक को ग्रहण नहीं करता, बल्कि उसे समग्र रूप से ग्रहण करता है और इसी कारण उपन्यास जीवंत बनता है।

बीसवीं शताब्दी के भारत का परिवेश, अनेक ऐसे तत्व लेकर निर्मित हुआ था जिसने साहित्य की सभी धाराओं को प्रभावित किया। हिंदी उपन्यास साहित्य में भी इसी परिवेश के प्रभाव का व्यापक रूप मिलता है और इसी युगीन परिवेश में हिंदी उपन्यास के नए युग की शुरूआत होती है। प्रेमचंद इस नए युग के प्रतिनिधि उपन्यासकार थे।

सामाजिक परिवेश : 'निर्मला' उपन्यास के परिवेश से पता चलता है कि उस समय हमारा समाज अंधविश्वासों तथा विकृत परंपरागत रूढ़ियों के दबाव से ग्रस्त था। दहेज की प्रथा इनमें सबसे भयानक और अनिष्टकारी थी। प्रेमचंद ने दहेज प्रथा से उत्पन्न नारी जीवन के अभिशापों का चित्रण 'निर्मला' में किया है। दहेज प्रथा हिंदू समाज के लिए सदा ही अभिशाप रही है। निर्मला, पूरे तत्कालीन नारी समाज का प्रतिनिधित्व करती है। प्रेमचंद के समकालीन समाज में दहेज और अनमेल विवाह आदि कुप्रथाएँ थीं जिनके कारण योग्य कन्याओं का विवाह अयोग्य पुरुषों से कर दिया जाता था। आपने देखा कि दहेज के कारण ही निर्मला का विवाह दुहाजू तोताराम से होता है जो उम्र में निर्मला से लगभग दुगुना बड़ा होता है। और उसका सारा जीवन दुःखदायी बन जाता है। उस समय स्त्रियों की आर्थिक दासता से समाज जकड़ा हुआ था। आर्थिक अभाव के कारण ही परिवारों की सुख शांति नष्ट हो जाती थी।

तत्कालीन समाज में पाखंडी साधुओं का भी बोलबाला था। ऐसा इसलिए होता था कि जनसाधारण अंधविश्वासों से ग्रस्त था। उपन्यास की कथा में आपने देखा कि तोताराम के सबसे छोटे पुत्र सियाराम को साधु बहकाकर ले जाता है। ये साधु लुटेरे, पाखण्डी होते थे और छोटे-छोटे बच्चों को बहलाकर भगा ले जाते और उनसे गलत काम करवाते थे तथा खुद मौज करते थे। उस समय लोगों में अंधविश्वास तथा पुराने संस्कार इस हद तक विद्यमान थे कि कभी-कभी भयानक परिणाम सामने आते थे। जैसे, सुधा के बच्चे की तबीयत खराब होती है और उसे डाक्टर को दिखाने के लिए सुधा और निर्मला तैयार हो जाती हैं, लेकिन–

''उसकी बूढ़ी माता ने कहा–डॉक्टर-हकीम का यहाँ कुछ काम नहीं। साफ तो देख रही हूँ कि बच्चे को नज़र लग गई। भला, डॉक्टर क्या करेगा।''

इस प्रकार महँगू नामक व्यक्ति से उसकी नजर उतरवाने का प्रयत्न किया जाता है इसी में बच्चे की मृत्यु हो जाती है। तत्कालीन समाज की इस सड़ी-गली परंपरा को दर्शाकर प्रेमचंद ने समाज का यथार्थ चित्रण किया है तथा इन कुरीतियों को समाप्त करने के लिए आवाज़ उठायी है।

राजनीतिक परिवेश : यद्यपि 'निर्मला' उपन्यास में राजनीतिक परिस्थितियों का प्रत्यक्ष चित्रण नहीं हुआ है, लेकिन वैसी बातें अवश्य मिलती हैं जिनसे कि तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। इस उपन्यास की रचना प्रेमचंद ने 1927 ई. में की थी। इसका प्रकाशन पहले पहल प्रयाग से प्रकाशित होने वाली सामाजिक जागरण की प्रसिद्ध पत्रिका 'चाँद' में हुआ था। सन् 1923 में जब सरकारी नौकरी करते हुए लगभग बीस वर्ष बीत गए थे, तभी गोरखपुर में उन्होंने महात्मा गाँधी के आह्वान के बाद सरकारी नौकरी छोड़ दी थी और अपना सारा समय राष्ट्रीय विचारों को फैलाने में लगा दिया था। तत्कालीन समाज सुधारकों और राजनेताओं के विचारों का प्रभाव भी प्रेमचंद पर पड़ा। उनके अन्य उपन्यासों जैसे 'कर्मभूमि', 'ग़बन' आदि में तो स्पष्ट रूप से तत्कालीन राजनीतिक परिस्थिति का चित्रण हुआ है। 'निर्मला' में प्रेमचंद ने उन दिनों चल रहे स्वदेशी आंदोलन और खादी तथा चर्खे आदि के प्रसंग को ला दिया है। उपन्यास के पंद्रहवें परिच्छेद में कृष्णा और निर्मला की बातचीत होती है। जब निर्मला

BHDC-109_4th proof.indd 91 8/6/2021 2:09:04 PM

कृष्णा से पूछती है कि उसको वर पसंद है या नहीं? उसी वार्तालाप के दौरान निर्मला वर की तस्वीर को देखकर कहती है कि कपड़े सब खद्दर के मालूम होते हैं।

कृष्णा–हाँ खद्दर के बड़े प्रेमी हैं। सुनती हूँ, पीठ पर खद्दर लाद कर देहातों में जाया करते हैं। व्याख्यान देने में बड़े चतुर हैं।

निर्मला–तब तो तुझे भी खद्दर पहनना पड़ेगा। तुझे तो मोटे कपड़े से चिढ़ है।

कृष्णा–जब उन्हें मोटे कपड़े पसंद हैं तो मुझे क्यों चिढ़ होगी? मैंने तो चर्खा चलाना सीख लिया है।

निर्मला–सूत निकाल लेती है?

कृष्णा–हाँ बहन। थोड़ा निकाल लेती हूँ। जब वह खद्दर के इतने प्रेमी है, तो चर्खा भी जरूर चलाते होंगे। मैं न चला सकूँगी तो मुझे कितना लज्जित होना पड़ेगा।''

इस प्रकार हम देखते हैं कि इस समय देश में राजनीतिक उथल-पुथल मची हुई थी, प्रेमचंद के मानस पर भी उसका प्रभाव पड़ा रहा था। इसीलिए प्रेमचंद ने इसे अपनी रचनाओं में चित्रित किया है।

धार्मिक परिवेश : उपन्यास में धार्मिक परिवेश का चित्रण प्रभावी ढंग से किया गया है। निर्मला की माँ कल्याणी धर्मपरायण महिला है उसे इस बात का आजीवन पश्चाताप रहता है कि उसके कारण ही उसके पति के प्राण गए। वह अपने को हत्यारिन समझती रही। उसे इस बात के लिए सदा दुःख होता रहा कि उसके व्यंग्य बाणों के कारण ही उदयभानु घर छोड़कर निकल पड़े थे। निर्मला भी एक धर्मपरायण स्त्री थी। आदर्श हिंदू स्त्री की तरह उसने अपने बूढ़े पति को ही परमेश्वर माना। प्रेमचंद ने एक अन्य महत्वपूर्ण पात्र सुधा के मुख से कहलवाया है।

''शिकायत क्यों करेगी? क्या वह उसका पति नहीं है? संसार में उसके लिए वही सब कुछ है। वह बुड्ढ़े हों या रोगी, पर हैं तो उसके स्वामी ही। कुलवती स्त्रियाँ अपने पति की निन्दा नहीं करतीं, वह कुलटाओं का काम है।''

उस समय के समाज में धर्म को रूढ़ियों के रूप में मान लिया गया था।

भालचंद्र जैसे दुराचारी व्यक्ति भी पापकर्म से डरते हैं। जब पुरोहित जी ने उन पर धर्म के भय का अस्त्र छोड़ा और कहा, ''आप लोगों में ब्राह्मणों के प्रति लेश मात्र भी श्रद्धा नहीं है। ..... जहाँ ब्राह्मण का आदर नहीं है, वहाँ कल्याण नहीं हो सकता।''

इस पर ब्राह्मण के शाप से बचने के लिए भालचंद्र ने पुरोहित जी को दक्षिणा दी।

हिंदू धर्म के मानने वाले लोग पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं। उपन्यास में इसे देखा जा सकता है। जब सुधा अपने पुत्र के बारे में कहती है कि वह उस जन्म का कोई तपस्वी है। जब निर्मला की पुत्री का जन्म होता है तब सब विश्वास करते हैं कि मानो मंसाराम ने ही उसकी कोख से पुनः जन्म लिया है।

यात्रा आदि में शकुन विचार जैसे धार्मिक मान्यताओं को भी लेखक ने प्रस्तुत किया है।

''रुक्मिणी–आज कौन दिन है किसी पंडित से पूछ लिया है यात्रा है कि नहीं.....।''

नज़र आदि उतारने के प्रसंग भी धार्मिक अन्धविश्वास के अंग हैं।

साधु महात्माओं पर लोगों का विश्वास था। सियाराम को स्वामी परमानंद के द्वारा लुभाया जाता हैं। और वह योग विद्या से अपनी माँ के दर्शन के लिए साधु के साथ चल देता है। इस प्रकार तत्कालीन धार्मिक परिवेश का यथार्थ चित्रण किया गया है।

आर्थिक परिवेश : 'निर्मला' की कथा में आर्थिक परिवेश का चित्रण स्पष्ट है। लेखक ने तत्कालीन समाज की आर्थिक परिस्थिति का हूबहू चित्रण किया है। आर्थिक कारण

BHDC-109_4th proof.indd 92 8/6/2021 2:09:05 PM

से निर्मला का विवाह टूट जाता है। उदयभानुलाल तथा कल्याणी में विवाह के खर्चे को लेकर ही अनबन होती है। जबकि उदयभानु उधार लेकर भी विवाह में अधिक खर्च करना चाहते थे। भुवनमोहन का परिवार मध्यवर्ग का था। वह चाहता था कि दहेज में अधिक से अधिक रुपये मिलें, चाहे पत्नी किसी भी तरह की क्यों न हो? अतः तत्कालीन समाज में पैसे को ही प्रथम स्थान दिया जाता था। आर्थिक कमी के कारण ही निर्मला के ससुराल में नित्य कलह हुआ करती थी। मध्यवर्ग चाहे आर्थिक तंगी से ग्रस्त हो लेकिन दिखावे की प्रवृत्ति के कारण अपना रहन-सहन धनी वर्ग का रखते थे। जिसके कारण से उन्हें कठिनाइयाँ झेलनी पड़ती थीं। आर्थिक तंगी के कारण निर्मला अपना इलाज ठीक तरह से नहीं करवा पाती और उसकी मृत्यु हो जाती है।

इस प्रकार समग्र रूप से 'निर्मला' उपन्यास के परिवेश की बात करें, तो यह स्पष्ट समझ में आता है कि लेखक ने परिवेश का यथार्थ चित्रण किया है।

बोध प्रश्न

1. परिवेश का तात्पर्य दो-तीन पंक्तियों में स्पष्ट कीजिए।

   .....

   .....

   .....

2. साहित्य की किस विधा में मानव जीवन से संबंधित परिवेश को विस्तृत रूप में चित्रित किया जा सकता है?

   .....

   .....

3. ''कल्याणी ने अपने पत्र में लिखा–इस अभागिनी पर दया कीजिए और डूबती हुई नाव को पार लगाइए। स्वामी जी के मन में बड़ी-बड़ी कामनाएँ थीं, किंतु ईश्वर को कुछ और ही मंजूर था–अब मेरी लाज आपके हाथ है। कन्या आपकी हो चुकी। मैं आप लोगों की सेवा सत्कार करने को अपना सौभाग्य समझती हूँ, लेकिन यदि इसमें कुछ कमी हो, कुछ त्रुटि हो पड़े तो मेरी दशा का विचार कीजिएगा।''

   उपर्युक्त पंक्तियों में किस परिवेश का पता चलता है? नीचे दिए गए कोष्ठकों में सही (✓) का चिह्न लगाइए।

   i) धार्मिक ( )

   ii) राजनीतिक ( )

   iii) सामाजिक-आर्थिक ( )

4. ''निर्मला तस्वीर को देखकर कहती है सब खद्दर के मालूम होते हैं। कृष्णा–हाँ खद्दर के बड़े प्रेमी हैं, सुनती हूँ, पीठ पर खद्दर लाद कर देहातों में जाया करते हैं, व्याख्यान देने में बड़े चतुर हैं।''

   उपर्युक्त पात्रों के कथनों में किस प्रकार के परिवेश का पता चलता है?

   i) धार्मिक ( )

   ii) राजनीतिक ( )

   iii) सामाजिक ( )

BHDC-109_4th proof.indd 93 8/6/2021 2:09:05 PM

अभ्यास

1. 'निर्मला' में वर्णित धार्मिक परिवेश पर पाँच पंक्तियाँ लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

2. ''बाबू उदयभानु लाल का मकान बाज़ार बना हुआ है। बरामदे में सुनार के हथौड़े और कमरे में दरज़ी की सुइयाँ चल रही हैं। सामने नीम के नीचे बढ़ई चारपाई बना रहा है। खपरैल में हलवाई के लिए भट्टी खोदी गई। मेहमानों के लिए अलग–अलग मकान ठीक किया गया है। यह प्रबंध किया जा रहा है कि हर मेहमान के लिए एक–एक चारपाई, कुर्सी और एक–एक मेज हो। हर तीन मेहमानों के लिए एक–एक कहार रखने की तजवीज़ हो रही है। अभी बारात में आने में एक महीने की देर है, लेकिन तैयारियाँ अभी से हो रही हैं। बारातियों का ऐसा सत्कार किया जाए कि किसी को जबान हिलाने का मौका न मिले।''

   क) परिवेश का उपर्युक्त चित्रण किस प्रकार का है और क्यों? तीन पंक्तियों में लिखिए।

   ख) अंश की पंक्तियों से क्या ध्वनित हो रहा है?

   i) बारातियों का स्वागत धार्मिक कार्य था।

   ii) सामाजिक प्रतिष्ठा को बनाए रखने के लिए ऐसा किया जाता था।

   iii) बाराती उद्दण्ड होते थे।

3 ''कल्याणी–दस दिन में पाँच हजार से दस हजार हुए। एक महीने में तो शायद एक लाख की नौबत आ जाए।

उदयभानु–क्या करूँ, जग हँसाई भी तो अच्छी नहीं लगती। शिकायत हुई तो लोग कहेंगे, नाम बड़े दर्शन छोटे। फिर जब मुझसे दहेज में एक पाई नहीं लेते, तो मेरा भी यह कर्त्तव्य है कि मेहमानों के आदर सत्कार में कोई बात न उठा रखूँ।''

उपर्युक्त संवाद से समाज की किस प्रथा का पता चलता है? चार-पाँच पंक्तियों में उत्तर दें।

4 ''मोटे–आप से ऐसी ही आशा थी। आप जैसे सज्जनों के दर्शन दुर्लभ हैं, नहीं तो आज कौन बिना दहेज के विवाह करता है।

भाल–महाराज दहेज की बातचीत ऐसे सत्यवादी पुरुषों से नहीं की जाती। उनसे तो संबंध हो जाना ही लाख रुपये के बराबर है। मैं इसको अपना अहोभाग्य समझता हूँ। हाँ! कितनी उदार आत्मा थी। रुपये को तो उन्होंने कुछ समझा ही नहीं, तिनके के बराबर परवाह नहीं की। बुरा रिवाज है, बेहद बुरा! बस चले तो दहेज देने-लेने वालों को गोली मार दूँ, चाहे फाँसी क्यों न हो जाए। पूछो, आप लड़के का विवाह करते हैं या उसे बेचते हैं। अगर आपको लड़के की शादी में दिल खोलकर खर्च करने का अरमान है तो शौक से खर्च कीजिए, लेकिन जो कुछ कीजिए अपने बल पर। यह क्या कि कन्या के पिता का गला रेतिए। नीचता है, घोर नीचता है। मेरा वश चले तो इन पापियों को गोली मार दूं।''

BHDC-109_4th proof.indd 94 8/6/2021 2:09:05 PM

क) उपर्युक्त संवादों में मोटेराम के कथन से किस बात की ओर संकेत किया गया है?

ख) उपर्युक्त अंश में वक्ता भालचंद्र के कथन का तात्पर्य क्या है?

i) उदयभानु लाल बहुत धनी थे।

ii) दहेज में अधिक धन देते।

iii) रुपये उनके लिए कोई चीज न थी।

iv) रुपये की चिन्ता उन्हें नहीं थी।

ग) भालचंद्र के कथन से पता चलता है कि समाज में ऐसे लोग भी होते थे जो–

i) दहेज प्रथा को बुरा मानते थे।

ii) दहेज प्रथा को रोकने के लिए सब कुछ कर सकते थे।

iii) दहेज प्रथा के विरोध में बोलने का ढोंग करते थे।

5. ''ठेकेदार शराब के नाम पर पानी बेचे, चौबीसों घंटे दुकान खुली रखें, आपको खुश रखना काफी था। सारा कानून आपकी खुशी है।''

इस वाक्य से समाज की किस स्थिति का पता चलता है।

i) अफसरों के हाथ में सभी कानून थे।

ii) घूस देकर गैर कानूनी कार्य किया जाता था।

iii) सभी कानून अफसर बनाते थे।

6. ''भुवन– इसमें शर्म की कौन सी बात है? रुपये किसे काटते हैं? लाख रुपये तो लाख जन्म में भी न जमा कर पाऊँगा। इस साल पास भी हो गया, तो कम से कम पाँच साल तक रुपये की सूरत नजर न आयेगी। फिर सौ-दो सौ रुपये महीने कमाने लगूँगा। पाँच छह सौ तक पहुँचते-पहुँचते उम्र के तीन भाग बीत जायेंगे। रुपये जमा करने की नौबत न आएगी। दुनिया का कुछ मजा न उठा सकूँगा। किसी धनी लड़की से शादी हो जाती तो चैन से कटती। मैं ज्यादा नहीं चाहता, बस एक लाख नकद हो फिर कोई ऐसी जायदाद वाली बेवा मिले, जिसके एक ही लड़की हो।''

उपर्युक्त कथन के द्वारा लेखक ने समाज के किस वर्ग के बारे में कहा है? यह वर्ग पैसे के लिए क्या करता है? छह-सात पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

7. 'निर्मला' उपन्यास में तत्कालीन भारत के राजनीतिक परिवेश का चित्रण किस प्रसंग में हुआ है? छह-सात पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

5.3 संरचना–शिल्प

अब हम 'निर्मला' के संरचना–शिल्प पर विचार करेंगे। उपन्यासकार किस प्रकार से शैली, भाषा और संवाद का प्रयोग करके रचना को सफल बनाता है, इसे हम 'निर्मला' उपन्यास के उदाहरणों से देखेंगे।

5.3.1 शैली

प्रेमचंद से पहले अधिकतर घटना–प्रधान उपन्यास लिखे जाते थे। उनमें अद्‌भुत, आश्चर्यचकित घटनाओं के द्वारा मनोरंजन किया जाता था। इसके प्रभाव से सामाजिक उपन्यासों में भी अप्रत्याशित घटनाएँ, संयोग, भाग्य, विधान आदि का आयोजन होता

BHDC-109_4th proof.indd 95 8/6/2021 2:09:05 PM

था। साथ ही परिच्छेदों के आरंभ में आलंकारिक दृश्य-वर्णन, रचना के बीच-बीच में नीति उपदेश के उदाहरण, पाठकों को संबोधन, कवित्वमय, कृत्रिम संवाद वर्णनों की अधिकता आदि उन उपन्यासों के शिल्प की विशेषताएँ थीं।

प्रेमचंद ने इनमें क्रांतिकारी परिवर्तन ला दिया। उनके उपन्यास के शिल्प में निम्नलिखित बातें दिखाई देती हैं :

- उन्होंने जीवन को उसके यथार्थ परिवेश में व्यक्त किया।
- कथानक के उपकरण दैनिक जीवन से एकत्र किए।
- घटनाओं में कार्य-कारण शृंखला स्थापित की।
- पात्रों की चरित्र सृष्टि में मनोविज्ञान का प्रवेश कराया।
- पात्र और परिस्थिति में गहरा संबंध स्थापित किया।
- संवाद दैनिक जीवन के वार्तालाप जैसे बन गए।
- जीवन के प्रति एक निश्चित दृष्टि दी।

इसी प्रकार शैली-शिल्प में भी यथार्थवादी और व्यावहारिक रूप दिखाई दिया। साथ ही शैली में निम्नलिखित विविधताएँ भी पाई जाती हैं, जैसे–

क) वर्णनात्मक शैली
ख) आलंकारिक शैली
ग) रेखाचित्र शैली
घ) चित्रात्मक शैली
ङ) व्यंग्यात्मक शैली
च) नाटकीय शैली

वर्णनात्मक शैली के द्वारा कथा के विकास को तथा भावों को प्रस्तुत किया जाता है। प्रेमचंद ने अत्यंत भावपूर्ण वर्णन किए हैं। कई स्थलों पर अलंकारों के प्रयोग से मार्मिकता की वृद्धि हुई है। पात्रों के बाह्य व्यक्तित्व की रेखाएँ अंकित करके रेखाचित्र शैली को अपनाया जाता है। जैसे–

''बाबू भालचंद्र दीवानखाने के सामने आराम कुर्सी पर नंग धड़ंग लेटे हुए हुक्का पी रहे थे। बहुत ही स्थूल कद के आदमी थे। ऐसा मालूम होता था कि काला देव है या कोई हब्शी अफ्रीका से पकड़कर आया है। सिर से पैर तक एक ही रंग था–काला। चेहरा इतना स्याह था कि मालूम न होता था कि माथे का अंत कहाँ है और सिर का आरंभ कहाँ। बस, कोयले की एक सजीव मूर्ति थी।''

इस प्रकार लेखक ने यहाँ शब्दों द्वारा व्यक्ति का चित्र उपस्थित कर दिया है। आप इस वर्णन के सहारे अपनी कल्पना से भालचंद्र का रूप खड़ा कर सकते हैं। इस प्रकार जब किसी घटना के दृश्य के वर्णन द्वारा चित्र उपस्थित कर दिया जाय तो इसे चित्रात्मक शैली कहेंगे।

''मंसाराम खाना खा रहा था। मुंशी जी तो बाहर गये, उधर वह खाना छोड़कर अपनी हॉकी का डंडा हाथ में ले, कमरे में घुस ही पड़ा और तुंरत चारपाई खींच ली। साँप मस्त था, भागने के बदले फन निकाल कर खड़ा हो गया।''

यहाँ घटना का पूरा दृश्य उपस्थित कर दिया गया है।

उपन्यासकार जब किसी स्थान पर पात्रों या घटनाओं द्वारा व्यंग्य की सृष्टि करता है। इसे व्यंग्यात्मक शैली कहते हैं। लेखक ने 'निर्मला' उपन्यास में स्थान-स्थान पर व्यंग्य का सहारा लिया है। एक उदाहरण से इसे आप स्पष्ट रूप से समझ सकते हैं :

''मोटे–एक दो दिन की कोई बात न थी। विचार भी यही था कि त्रिवेणी का स्नान करूंगा, पर बुरा न मानिए तो कहूं–आप लोगों में ब्राह्मणों के प्रति लेशमात्र भी श्रद्धा नहीं है। हमारे यजमान हैं, जो हमारा मुँह जोहते रहते हैं कि पंडित जी कोई आज्ञा दें तो उसका पालन करें। हम उनके द्वार पर पहुँच जाते हैं, तो अपना धन्यभाग समझते

BHDC-109_4th proof.indd 96 8/6/2021 2:09:05 PM

हैं और सारा घर छोटे-बड़े तक हमारे सेवा संस्कार में मग्न हो जाता है। जहाँ हमारा आदर नहीं, वहाँ एक क्षण ठहरना असह्य है। जहां ब्राह्मण का आदर नहीं, वहाँ कल्याण नहीं हो सकता।''

पंडित जी के पूरे कथन में लेखक ने व्यंग्य व्यक्त किया है। किस प्रकार धर्म का भय दिखाकर लोगों को बहकाया जाता था उसको लेखक ने व्यंग्यात्मक शैली में हमारे सामने रखा है।

नाटकीय शैली के माध्यम से लेखक पात्रों के संवाद द्वारा किसी स्थान पर कथा में नए या आकस्मिक ऐसे मोड़ लाता है जिनकी पूर्व कल्पना पाठक को नहीं होती। आपने 'निर्मला' उपन्यास में हर जगह इस शैली को देखा है। फिर भी इसका एक उदाहरण देखें।

''उदयभानु–तो मैं तुम्हारा गुलाम हूँ?

कल्याणी–तो क्या मैं तुम्हारी लौंडी हूँ?

उदयभानु–ऐसे मर्द और होंगे, जो औरतों के इशारे पर नाचते हैं।

कल्याणी–तो ऐसी स्त्रियाँ और होंगी, जो मर्दों की जूतियाँ सहा करती हैं।

उदयभानु–मैं कमाकर लाता हूँ, जैसे चाहूँ खर्च कर सकता हूँ। किसी को बोलने का अधिकार नहीं है।

कल्याणी–तो, आप अपना घर सँभालिए, ऐसे घर को मेरा दूर से सलाम है।''

आप स्पष्ट देख रहे हैं कि संवादों में नाटकीयता है। कथा एक नए मोड़ की ओर अग्रसर होती है। पति-पत्नी दोनों में विवाद बढ़ता है, पत्नी घर छोड़ने का फैसला करती है। आप इस नाटकीय शैली से प्रभावित होते हैं और आगे क्या होगा सोचने लगते हैं, फिर कथा को दिलचस्पी से पढ़ते-चलते हैं।

बोध प्रश्न

5. तीन-चार पंक्तियों में शैली का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

6. ''मुंशी तोताराम अन्य एकान्तसेवी मनुष्यों की भाँति विषयी जीव थे कुछ दिन तो वह निर्मला को सैर-तमाशे दिखाते रहे। लेकिन जब देखा कि इसका कुछ फल नहीं होता, तो फिर एकान्त सेवन करने लगे। दिन भर के कठिन मानसिक परिश्रम के बाद उनका चित्त आमोद-प्रमोद के लिए लालायित हो जाता, लेकिन जब अपनी विनोद-वाटिका में प्रवेश करते और उसके फूलों को मुरझाया, पौधों को सूखा और क्यारियों से धूल उड़ती हुई देखते तो उनका जी चाहता–क्यों न इस वाटिका को उजाड़ दूँ।''

   उपर्युक्त अंश में लेखक ने कथा के वर्णन के लिए एक साथ दो प्रकार की शैलियों का प्रयोग किया है। इनके नाम बताइए और वैसा नाम देने का कारण लिखिए।

7. रेखाचित्र शैली किसे कहते हैं? चार पंक्तियों में लिखिए।

   .....

   .....

   .....

   .....

BHDC-109_4th proof.indd 97 8/6/2021 2:09:05 PM

8. ''रुक्मिणी–जब तक अपना समझती थी, करती थी। अब तुमने गैर समझ लिया तो मुझे क्या पड़ी है कि तुम्हारे गले से चिपटूं? पूछो कै दिन से दूध नहीं पिया। जाकर कमरे में देख आओ, नाश्ते के लिए जो मिठाई भेजी गई थी, वह पड़ी सड़ रही है। मालकिन समझती है, मैंने तो खाने का सामान रख दिया, कोई न खाए तो क्या मैं मुँह में डालूं।''

.....

.....

रुक्मिणी देवी के उपर्युक्त कथन में लेखक ने किस शैली का प्रयोग किया है?

9. नाटकीय शैली किसे कहते हैं? दो-तीन पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

5.3.2 भाषा

उपन्यासकार अपने भावों को भाषा के द्वारा प्रकट करता है। यह उपन्यास का महत्त्वपूर्ण उपकरण है। यह भाव और विचार के वहन का माध्यम है। भाषा की विशेषताएँ हैं, स्वाभाविकता, सहजता और सरलता। उपन्यासकार भाषा को स्वाभाविक, सहज और सरल बनाने के लिए मुहावरों और लोकोक्तियों का प्रयोग करता है। साथ ही सहज, स्वाभाविक अलंकारों के प्रयोग से भाषा को सशक्त, सप्राण, रम्य और सुन्दर बनाता है। हम 'निर्मला' उपन्यास में प्रयुक्त भाषा को दो दृष्टियों से देखेंगे:

1) कथा वर्णन के लिए प्रयुक्त भाषा
2) संवादों के लिए प्रयुक्त भाषा

1) **कथा वर्णन के लिए प्रयुक्त भाषा** : प्रेमचंद ने कथा वर्णन के लिए सरल-स्वाभाविक तथा अंलकृत और काव्यात्मक दोनों प्रकार की भाषा का प्रयोग किया है। कथा वर्णन का उदाहरण यहाँ प्रस्तुत है:

''विधवा का विलाप और अनाथों का रोना सुनाकर हम पाठकों का दिल न दुखाएँगे। जिसके ऊपर पड़ती है, वह रोता है, विलाप करता है, पछाड़ खाता है, यह कोई नई बात नहीं। हाँ आप चाहें तो कल्याणी के उस घोर मानसिक यातना का अनुमान कर सकते हैं, जो उसे इस विचार से हो रही थी कि वे ही अपने प्राणाधार की घातिका हैं।

आप देखें कि लेखक कथा का वर्णन कर रहा है। भाषा बोलचाल की और सरल है, आप ऐसा अनुभव करते हैं कि कोई आपके सामने बैठा कथा कह रहा हो और आप सुन रहे हों।

आलंकारिक भाषा का एक उदाहरण देखिए:

''बालक का सरल, निष्कपट हृदय पितृप्रेम से पुलकित हो उठा। मालूम हुआ कि साक्षात् भगवान खड़े हैं। नैराश्य और क्षोभ से विकल होकर उसने अपने पिता को निष्ठुर और न जाने क्या-क्या समझ रखा था।''

यहाँ भाषा काव्य जैसी हो गई है। सरल, निष्कपट, पितृप्रेम, पुलकित आदि तत्सम शब्दों के प्रयोग से भाषा में परिवर्तन आ गया है।

प्रसन्न होने के लिए पुलकित हो जाने का प्रयोग भी भाव की स्वच्छता और निर्मलता को व्यक्त करता है।

BHDC-109_4th proof.indd 98 8/6/2021 2:09:05 PM

2) **संवादों के लिए प्रयुक्त भाषा** : लेखक ने सामान्य बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है। सभी पात्र उर्दू मिश्रित हिंदी बोलते हैं। पात्रानुकूल भाषा में स्वाभाविकता और रोचकता है। एक उदाहरण देखिए।

''डॉक्टर–फिर आपने अनर्गल बातें करनी शुरू की। अरे साहब, आप बच्चे नहीं हैं–बुजुर्ग आदमी हैं, जरा धैर्य से काम लीजिए।

मुंशी जी–अच्छा डॉक्टर साहब, अब न बोलूँगा। खता हुई। आप जो चाहे कीजिए। मैंने सब कुछ आप पर छोड़ दिया। कोई उपाय ऐसा नहीं है, जिससे मैं इतना समझ सकूँ कि मेरा दिल साफ है। आप ही कह दीजिए, डॉक्टर साहब, कह दीजिए, तुम्हारा अभागा पिता बैठा रो रहा है। उसका दिल तुम्हारी तरफ से बिल्कुल साफ है। उसे कुछ भ्रम हुआ था। वह अब दूर हो गया है। बस, इतना ही कह दीजिए। मैं और कुछ नहीं चाहता। मैं चुपचाप बैठा हूँ। जबान तक नहीं खोलता, लेकिन आप इतना जरूर कह दीजिए।

डॉक्टर–ईश्वर के लिए बाबू साहब, जरा सब्र कीजिए, वरना मुझे मजबूर होकर आपसे कहना पड़ेगा कि घर जाइए। जरा दफ्तर में जाकर डॉक्टर को खत लिख रहा हूँ।''

आप देखिए कि उपर्युक्त संवादों में एक ओर डॉक्टर साहब अनर्गल, धैर्य, ईश्वर आदि संस्कृत शब्दों का प्रयोग करते हैं वहीं शुरू, बुजुर्ग, सब्र, मजबूर, खत आदि उर्दू के शब्दों का प्रयोग करते हैं। मुंशी जी भी खता, दिल, तरफ, जरूर आदि उर्दू और अभागा, भ्रम आदि सरल तत्सम शब्दों का मिश्रित प्रयोग करते हैं। शब्द किसी भी स्रोत से लिए गए हों, वे आमतौर पर प्रचलित शब्द हैं और पाठकों को उन्हें समझने में किसी तरह की कठिनाई नहीं होती।

पात्रानुकूल तथा प्रसंगानुकूल भाषा : निर्मला उपन्यास के पात्र ग्रामीण और शहरी मिश्रित भाषा का प्रयोग करते हैं। विशेष रूप से नौकरों की भाषा इसी प्रकार की है।

''तीन-चार मिनट के बाद एक काना आदमी खाँसता हुआ आकर बोला–सरकार ई–तना नौकरी हमारे किन न होई। कहाँ तक उधार बाढ़ी लै-लै खायी। माँगत-माँगत चेथर होय गयेन।

भाल–बको मत, जाकर कुर्सी लाओ। जब कोई काम करने को कहा गया, तो रोने लगता है। कहिए पंडित जी वहाँ सब कुशल है?

मोटेराम–क्या कुशल कहूँ बाबूजी, अब कुशल कहाँ दूसरा घर मिट्टी में मिल गया।

इतने में कहार ने एक टूटा चीड़ का सन्दूक लाकर रख दिया और बोला–कुर्सी मेज हमारे नहीं उठत है।''

आप देखिए 'हमरे किन न होई', 'बाढ़ी लै-लै खायी', 'माँगत-माँगत चेथर होय गयेन', 'नहीं उठत है' आदि देहाती भाषा के प्रयोग हैं। पात्रानुकूल और प्रसंगानुकूल भाषा का एक सुंदर उदाहरण देखिए।

निर्मला की बच्ची की भाषा–

''बच्ची ने द्वार पर झाँककर पूछा–बापू दी तहाँ दाते हो?

मुंशी जी–दूर जाता हूँ बेटी, तुम्हारे भैया को खोजने जाता हूँ।

बच्ची ने वहीं खड़े-खड़े कहा–अम बी तलेंगे।

मुंशी ने उसी स्वर में कहा–तुमको नहीं ले तलेंगे।

बच्ची तोतली बोली में पिता से बोलती है। तोताराम प्रसंगानुकूल उसी तोतली भाषा में जवाब देते हैं।

BHDC-109_4th proof.indd 99 8/6/2021 2:09:05 PM

रोचक भाषा का एक उदाहरण देखिए–

''तोता–अजी यह सब कर चुका। दम्पत्ति शास्त्र के सारे मंत्रों का इम्तहान ले चुका, सब कोरी गप्पे हैं।

नयन–अच्छा तो अब मेरी एक सलाह मानो। जरा अपनी सूरत बनवा लो। आजकल यहाँ एक बिजली के डॉक्टर आए हुए हैं, जो बुढ़ापे के सारे निशान मिटा देते हैं।

इनकी चलती भाषा और मुहावरों का प्रयोग संवाद को रोचक बनाता है।

जब हम समग्र रूप से 'निर्मला' की भाषा का विश्लेषण करते हैं तो पाते हैं कि उसमें सभी विशेषताएँ हैं। सरल, रोचक, प्रसंगानुकूल, व्यंग्यात्मक, चित्रात्मक, पात्रानुकूल भाषा है। साथ ही तत्सम, तद्भव, उर्दू, अंग्रेजी, देशज भाषा के शब्दों का यथास्थान प्रयोग किया गया है। भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरों का भी खूब प्रयोग किया गया है। जगह-जगह सूक्तियों का प्रयोग भी भाषा को सुन्दर और प्रभावशाली बनाता है।

उपर्युक्त बातों को हम एक-एक कर उदाहरण द्वारा देखेंगे। सरलता, रोचकता, चित्रात्मकता और प्रसंगानुकूल भाषा को आप समझ गए हैं। हम यहाँ तत्सम आदि शब्दों को देखेंगे।

1) **हिंदी के तत्सम शब्दों का प्रयोग**–'निर्मला' में वैसे तत्सम शब्दों का प्रयोग किया गया है जो प्रचलित हैं। उदाहरणार्थ–लज्जाशील, गंभीर, प्रसन्न, सत्कार, अज्ञात, विचित्र, अदृश्य, प्रकाश आदि।

2) **हिंदी के तद्भव शब्दों का प्रयोग**–भाषा को स्वाभाविक तथा प्रभावशाली बनाने के लिए तद्भव शब्दों का प्रयोग 'निर्मला' की भाषा की विशेषताओं में से एक है– उदाहरण के लिए–अम्माँ, भाई-भतीजा, मुट्ठी, निठुर, फूल, मीठी, अँधेरा आदि।

3) **अरबी-फारसी शब्दों का प्रयोग**– आप उपन्यास का वाचन करते समय अवश्य अनुभव करेंगे कि प्रेमचंद अरबी-फारसी शब्दों का बहुलता से प्रयोग करते हैं। लेकिन उनके उर्दू के शब्द ऐसे नहीं जो प्रचलित न हों। वे या तो हमारी बोलचाल में रच-बस गए हैं या उर्दू में सामान्य प्रयोग में आते रहते हैं। अतएव उनसे हमारा परिचय है। उदाहरण के लिए परवाह, जरूर, खुशी, अलबत्ता, आतिशबाजी, मजा, रोशनी, शान, जरा, किस्मत, खत आदि।

4) **अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग**–'निर्मला' में प्रेमचंद ने अंग्रेजी के ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जो हिंदी में खूब प्रचलित हैं। और वे लगभग हिंदी भाषा में स्वीकृत हो चुके हैं। उदाहरण के लिए–ज्योमेट्री, बैंच, बोर्डिंग हाउस, डॉक्टर, थियेटर, मेमोरी, सेंट, कार्ड, पुलिसमैन, बटन, स्कूल आदि। इन शब्दों का प्रयोग पात्र के शैक्षिक स्तर के अनुकूल किया गया है। अंग्रेजी पढ़े-लिखे व्यक्ति अपनी बातचीत में ऐसे शब्दों का सामान्य रूप से प्रयोग करते हैं। प्रेमचंद ने ऐसे पात्रों से ही इनका प्रयोग कराया है।

   इस प्रकार प्रेमचंद ने सरल, प्रवाहमयी और बोधगम्य भाषा का प्रयोग किया है।

5) **मुहावरों का प्रयोग**–भाषा को जीवंत और बोधगम्य बनाने के लिए उपन्यास में मुहावरों का भरपूर प्रयोग किया गया है। उपन्यास का वाचन करते समय आपने अवश्य ध्यान दिया होगा कि विचार को संप्रेषणीय बनाने के लिए लेखक ने जगह-जगह मुहावरों का प्रयोग किया है। कहीं व्यंग्य के लिए तो कहीं भाव को उभारने के लिए मुहावरों का सटीक प्रयोग मिलता है। उदाहरण से इसे समझिए।

   चन्द्र–मेरे साथ घूमने चल तो रास्ते में सारी बातें बता दूँ। ऐसे-ऐसे तमाशे होंगे कि देखकर तेरी आँखें खुल जाएंगी।

BHDC-109_4th proof.indd 100 8/6/2021 2:09:05 PM

यहाँ आँखें खुल जाना का प्रयोग सटीक है। अपनी बात मनवाने के लिए चन्द्र ने कृष्णा से ऐसी बातें कही।

बाबू उदयभानु चिंतन करते हुए सोचते हैं।

'कई दिन से देख रहा हूँ ऐसी ही जली-कटी सुनाया करती है।'

यहाँ जली-कटी सुनाना मुहावरे का प्रयोग करके लेखक ने पात्र के भावों को उभारा है। उदयभानु लाल कहना चाहते हैं कि उनकी पत्नी कठोर बातें कहती रहती है। इस स्थान पर यदि लेखक ने कठोर बातें या बुरा भला शब्दों का प्रयोग किया होता तो भाषा उतनी प्रभावशाली नहीं बन पाती। आगे उदयभानु सोचते हैं कि

''बस चल ही दूँ''।

''जब देख लूँगा कि इनका सारा घमण्ड धूल में मिल गया और मिज़ाज ठंडा हो गया, तो लौट जाऊँगा।''

यहाँ "धूल में मिलना" और ''मिज़ाज ठंडा होना'' मुहावरे के प्रयोग में व्यंग्य व्यंजित है।

6) **सूक्तियों का प्रयोग**–सूक्ति ऐसे सूत्र वाक्य होते हैं जिनमें कुछ अधिक अर्थ निहित रहता है। व्याख्या करने पर उस अर्थ का विस्तार किया जा सकता है। प्रेमचंद ने जगह-जगह सूक्तियों का प्रयोग करके भाषा में भाव गांभीर्य ला दिया है।

उदाहरण–''स्वस्थ अंग की परवाह कौन करता है? लेकिन वह अंग जब किसी वेदना से टपकने लगता है, तो उसे ठेस और धक्के से बचाने का यत्न किया जाता है।''

इस उदाहरण में आप देखिए कि लेखक ने एक महत्त्वपूर्ण बात को सूत्र रूप में कहा है ''स्वस्थ अंग की परवाह कौन करता है।'' इसमें इस भाव को रखा है कि जब तक व्यक्ति सुखी रहता है वह अन्य बातों की चिन्ता नहीं करता, लेकिन जैसे ही उसे किसी कारणवश दुःख पहुँचता है तो उसके निदान के लिए तरह-तरह के उपायों के बारे में सोचने लगता है। इसी प्रकार लेखक ने जगह-जगह सूक्तियों का प्रयोग कर भाषा को गंभीर बनाया है।

इस प्रकार प्रेमचंद की भाषा सरल और प्रभावशाली हैं। उसमें कहीं कोई कृत्रिमता नहीं आने पाई है।

बोध प्रश्न

10. भाषा की एक विशेषता है सरलता, आप दो और विशेषताएँ लिखिए।

.....

.....

11. पात्रानुकूल तथा प्रसंगानुकूल भाषा का तात्पर्य क्या है? चार-पांच पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

.....

BHDC-109_4th proof.indd 101 8/6/2021 2:09:05 PM

अभ्यास

8. ''मंसाराम आकर रुक्मिणी से बोला–बुआ जी, बाबू जी ने मुझे कल से स्कूल में रहने को कहा है।

रुक्मिणी ने विस्मित होकर पूछा–क्यों?

मंसा–मैं क्या जानूं? कहने लगे कि तुम यहां आवारों की तरह इधर-उधर फिरा करते हो।

रुक्मिणी–तूने कहा नहीं कि मैं कहीं नहीं जाता।

मंसा–कहा क्यों नहीं? मगर जब वह माने भी।

रुक्मिणी–तुम्हारी नई अम्माँजी की कृपा होगी, और क्या?

मंसा–नहीं बुआ जी, मुझे उन पर संदेह नहीं हैं। वह बेचारी तो भूल से भी कभी नहीं कहती। कोई चीज़ मांगने जाता हूँ तो तुरंत उठकर देती है।

रुक्मिणी–तू यह त्रिया-चरित्र क्या जाने। यह उन्हीं की लगायी हुई आग है देख मैं जाकर पूछती हूं।''

उपर्युक्त संवादों में भाषा की विशेषताएँ बताइए।

9. ''मुंशी जी ने रोते हुए कहा–नहीं डाक्टर साहब, यह शब्द मुँह से न निकालिए। हालात इसके दुश्मनों के नाजुक हों। ईश्वर मुझ पर इतना कोप न करेंगे। आप कलकत्ता और बंबई के डॉक्टरों को तार दीजिए। मैं जिन्दगी भर आपकी गुलामी करूँगा। यही मेरे कुल का दीपक है। यही मेरे जीवन का आधार है। मेरा हृदय फटा जा रहा है। कोई ऐसी दवा दीजिए जिससे इसे होश आ जाए। मैं जरा अपने कानों से इसकी बात सुनूं कि इसे क्या कष्ट हो रहा है, हाय मेरा बच्चा।''

उपर्युक्त अंश में प्रयुक्त भाषा की विशेषताओं को लिखिए।

5.3.3 संवाद

पात्रों के परस्पर वार्तालाप को कथोपकथन या संवाद कहते हैं। उपन्यास का यह महत्त्वपूर्ण तत्व है। इनका उपयोग पात्रों के मन में उठने वाले भावों, इच्छाओं, आकांक्षाओं, राग-द्वेष आदि को सजीव बनाता है। इनके उपयोग से उपन्यास में स्वाभाविकता, रोचकता, सुंदरता और नाटकीयता आती है। संवाद के बारे में प्रेमचंद का कथन है :

''उपन्यास में वार्तालाप जितना अधिक हो और लेखक की कलम से जितना ही कम लिखा जाए, उतना ही उपन्यास सुंदर होगा। वार्तालाप केवल रस्मी नहीं होना चाहिए। प्रत्येक वाक्य को जो किसी चरित्र के मुँह से निकले उसके मनोभावों और चरित्र पर कुछ न कुछ प्रकाश डालना चाहिए बातचीत का स्वाभाविक, परिस्थितियों के अनुकूल सरल और सूक्ष्म होना जरूरी है।''

उपन्यास के संवाद किस उद्देश्य से लिखे जाते हैं पहले इसे जानें। मुख्य रूप से चार उद्देश्य से संवाद लिखे जाते हैं।

i) कथानक के विकास के लिए

ii) पात्रों के चरित्र चित्रण के लिए

iii) उपन्यासकार के उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए

iv) कथा में नाटकीयता लाने के लिए

उपर्युक्त बातों को हम थोड़ा बाद में 'निर्मला' उपन्यास के संदर्भ में विस्तार से जानेंगे, इसके पहले यह जान लें कि संवाद कितने प्रकार के होते हैं।

BHDC-109_4th proof.indd 102 8/6/2021 2:09:05 PM

आकार की दृष्टि से संवाद दो प्रकार के होते हैं;

1) लंबे संवाद 2) छोटे संवाद

लंबे संवाद : लंबे संवाद कभी–कभी बहुत बड़े हो जाते हैं और भाषण के समान लगते हैं। लेकिन लंबे संवाद के द्वारा जहाँ कथा का विकास होता है, वहीं पात्रों के चारित्रिक गुण, दोष भी प्रकट होते हैं। लेखक का विचार भी प्रकट होता है। लंबे संवाद का एक उदाहरण देखिए।

''रँगीली–साफ बात कहने में संकोच क्या? हमारी इच्छा है, नहीं करते। किसी का कुछ लिया तो नहीं है? जब दूसरी जगह दस हजार नगद मिल रहे हैं, तो वहाँ क्यों न करूँ? उनकी लड़की कोई सोने की थोड़े ही है। वकील साहब जीते होते तो शरमाते-शरमाते पन्द्रह-बीस हजार दे मारते। अब वहाँ क्या रखा है?''

उपर्युक्त उदाहरण लंबे संवाद का है। इसमें पात्रों का चरित्र उभरता है, साथ ही कथा का विकास भी होता है। रँगीली के कथन से निर्मला के पिता के चरित्र पर भी प्रकाश पड़ता है। रँगीली वर की माता है वह भी दहेज की पक्षधर है और पुत्र की शादी वहीं करना चाहती है, जहाँ धन मिले। निर्मला से अपने पुत्र के विवाह के लिए साफ इन्कार कर देती है, इस प्रकार उसका धन के प्रति लालची चरित्र का पता चलता है। जब वह यह कहती है कि ''वकील साहब जीते होते तो शरमाते-शरमाते पन्द्रह-बीस हजार दे मरते।'' इससे निर्मला के पिता के चरित्र पर यह प्रकाश पड़ता है कि वे पुत्री के विवाह के लिए किसी प्रकार पैसे का इन्तज़ाम करते। लेखक का अभीष्ट यह दिखाना है, किस प्रकार दहेज प्रथा के पक्षधर किसी लड़की की जिन्दगी का महत्व नहीं समझते। वे धन को ही सब कुछ मानते हैं। संवाद में कथा का विकास इस प्रकार होता है कि निर्मला का विवाह टूट जाता है।

आप यदि उपन्यास का दुबारा वाचन करते हुए ध्यान देंगे तो पाएँगे कि निर्मला उपन्यास में जगह-जगह ऐसे संवाद हैं।

छोटे संवाद : छोटे संवाद कभी एक वाक्य के होते हैं कभी दो वाक्य के। कभी दो शब्द के भी और कभी एक शब्द के भी। लेकिन जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है इन संवादों के माध्यम से भी जहाँ कथा का विकास होता है वहीं पात्रों के चरित्र पर भी प्रकाश पड़ता है। एक दो वाक्यों के संवाद के उदाहरण देखिए:

''उदयभानु–क्या तुम समझती हो कि तुम न सँभालोगी तो मेरा घर ही न सँभलेगा? मैं अकेले ऐसे-ऐसे दस घर सँभाल सकता हूँ।

कल्याणी–कौन? अगर आज के महीनवें दिन मिट्टी में न मिल जायँ, तो कहना कोई कहती थी।''

एक अन्य उदाहरण–

''मतई–शामत मेरी नहीं आई–बोलो खाते हो कसम–एक!

उदयभानु–तुम हटते हो कि मैं पुलिसमैन को बुलाऊँ!

मतई–दो!

उदयभानु (गरजकर)–हट जा बदमाश, सामने से।

मतई–तीन!''

उपर्युक्त उदाहरण छोटे-छोटे संवादों का है। यहा तक कि एक शब्द का भी। आप स्वयं देखें कि इनमें कथा का विकास, पात्रों का चरित्र तथा नाटकीयता शामिल है। संवादों से पता चलता है कि घटना आगे बढ़ रही है। मतई उदयभानु को कसम खाने के लिए

BHDC-109_4th proof.indd 103 8/6/2021 2:09:05 PM

कहता है। वे नहीं मानते और पुलिस को बुलाने की धमकी देते हैं। मतई गिनती गिनता हुआ उन पर वार करने के लिए बढ़ता है। संवादों से स्पष्ट है कि कथा का विस्तार हो रहा है। उदयभानु का निर्भीक चरित्र तथा मतई का क्रूर चरित्र उभर कर सामने आता है। एक, दो, तीन जैसे गिनती के शब्द रखकर लेखक ने यहाँ नाटकीयता ला दी है।

ऊपर हमने आकार की दृष्टि से संवादों का वर्गीकरण देखा। अब हम अन्य दृष्टि से संवादों का विश्लेषण करेंगे। हम किसी उपन्यास के संवादों को ध्यान से देखें तो पाएँगे कि कहीं लेखक ने विश्लेषण करते हुए संवादों की रचना की, कहीं नाटकीयता के लिए, तो कहीं पात्रों के मानसिक उहापोह को सामने रखने के लिए। कभी पात्र स्वयं से भी वार्तालाप करता है, तो कहीं पात्रों के भावों को प्रकट करने के लिए संवादों की रचना की गई है। आइए इन्हें एक–एक कर जानें। हम इन्हें पाँच नाम दे सकते हैं।

1) नाटकीय संवाद
2) विश्लेषणयुक्त संवाद
3) आत्मालापपरक संवाद
4) स्वगत कथन
5) भावपूर्ण संवाद।

1. **नाटकीय संवाद** : पात्रों के परस्पर वार्तालाप द्वारा जब नाटकीयता लाई जाय तो इसे नाटकीय संवाद कहते हैं। ऐसे संवादों में लेखक अपने पात्रों के लिए संकेत हाव-भाव, मनःस्थिति संबंधी विश्लेषण प्रस्तुत नहीं करता बल्कि बातों को इस तरह से प्रस्तुत करता है जिससे नाटकीयता व्यक्त होती है। पात्रों की बातचीत से ही घटना में नाटकीयता आती है। उदाहरण,

''निर्मला–और नहीं क्या तू बैठी रहेगी। हम लड़कियाँ हैं, हमारा घर कहीं नहीं होता।

कृष्णा–चन्दर भी निकाल दिया जाएगा?

निर्मला–चन्दर तो लड़का है, उसे कौन निकालेगा।

कृष्णा–तो लड़कियाँ बहुत खराब होती होंगी?

निर्मला–खराब न होती तो घर से भगाई क्यों जाती?

कृष्णा–चन्दर इतना बदमाश है, उसे कोई नहीं भगाता? हम तुम तो कोई बदमाशी नहीं करते।''

एक अन्य उदाहरण देखिए–

''उदयभानु–तो मैं क्या तुम्हारा गुलाम हूँ?

कल्याणी–तो क्या मैं तुम्हारी लौंडी हूँ?

उदयभानु–ऐसे मर्द और होंगे जो औरतों के इशारे पर नाचते हैं।

कल्याणी–तो ऐसी स्त्रियाँ और होंगी जो मर्दों की जूतियाँ सहा करती हैं।''

दोनों उदाहरणों में लेखक ने संवादों के बीच में कोई संकेत नहीं रखा है। वार्तालाप से ही कथा में गति आती है।

2. **विश्लेषणात्मक संवाद** : आपने देखा होगा कि उपन्यास के पात्रों के संवाद के बीच-बीच में कभी-कभी लेखक कुछ संकेत देता रहता है जिससे पात्रों के कार्य-व्यापार, मनोभाव आदि को समझने में सहायता मिलती है। ऐसे संवादों को विश्लेषणात्मक संवाद कहते हैं। इसे उदाहरण द्वारा समझें।

''इस वक्त मंसाराम भी स्कूल से लौटा-धूप में चलने के कारण मुख पर पसीने की बूंदे आयी हुई थीं, गोरे मुखड़े पर खून की लाली दौड़ रही थी, आँखों से

BHDC-109_4th proof.indd 104 8/6/2021 2:09:05 PM

ज्योति सी निकलती मालूम होती थी। द्वार पर खड़ा होकर बोला–अम्माँ जी, लाइए, कुछ खाने को निकालिए, जरा खेलने जाना है।

निर्मला जाकर गिलास में पानी लायी और तश्तरी में कुछ मेवे रखकर मंसाराम को दिये।

मंसाराम जब खाकर चलने लगा तो निर्मला ने पूछा, कब तक आओगे।

मंसाराम–कह नहीं सकता, गोरों के साथ हाकी का मैच है। बारक यहाँ से बहुत दूर है।

निर्मला–भई, जल्द आना। खाना ठण्डा हो जाएगा तो कहोगे कि मुझे भूख नहीं है।

मंसाराम ने निर्मला की ओर स्नेह भाव से देखकर कहा–मुझे देर हो जाए तो समझ लीजिएगा वहीं खा रहा हूँ। मेरे लिए बैठने की जरूरत नहीं।

वह चला गया तो निर्मला बोली–पहले तो घर में आते ही न थे, मुझसे बोलते शर्माते थे। किसी चीज़ की जरूरत होती, तो बाहर से ही मँगवा भेजते। जब से मैंने बुलाकर कहा तब से आने लगे हैं।

तोताराम ने चिढ़कर कहा–यह तुम्हारे पास खाने-पीने की चीजें माँगने क्यों आता है? दीदी से क्यों नहीं कहता?''

उपर्युक्त उदाहरण में पात्रों के संवाद को देखें तो आप पाएँगे कि लेखक ने अपनी ओर से कुछ जोड़ा है। जैसे मंसाराम के बारे में कुछ बातें बता कर लेखक कहता है ''द्वार पर खड़ा होकर बोला''। फिर निर्मला के द्वारा किए हुए कार्य का वर्णन करता है कि ''वह गिलास में पानी तथा तश्तरी में मेवे लेकर आती है'', आगे मंसाराम के भाव का चित्रण करता है। ''मंसाराम ने निर्मला की ओर स्नेह भाव से देखकर कहा", इसी प्रकार तोताराम के संवाद से पहले लेखक लिखता है कि ''तोताराम ने चिढ़कर कहा'', इस प्रकार आप समझ गए कि पात्रों के संवाद के आगे, पीछे या मध्य में जब लेखक पात्रों के हाव-भाव, क्रिया-कलाप आदि के बारे में कुछ कहे तब उसे विश्लेषण युक्त संवाद कहेंगे।

3. **आत्मालाप (मानसिक ऊहापोह को प्रकट करने वाले संवाद)** : जब उपन्यास का कोई पात्र संवाद के माध्यम से मानसिक द्वंद्व को प्रकट करे तो उसे मानसिक ऊहापोह प्रकट करने वाले संवाद कहते हैं। ऐसे संवाद की एक विशेषता है कि इसमें अन्य पात्र भाग नहीं लेते। उदाहरण के लिए देखें–

''मुंशी जी तो भोजन करने गये और निर्मला द्वार की चौखट पर खड़ी सोच रही थी– भगवान क्या इन्हें सचमुच कोई भीषण रोग हो रहा है? क्या मेरी दशा को और भी दारुण बनाना चाहते हो? मैं इनकी सेवा कर सकती हूँ, सम्मान कर सकती हूँ, अपना जीवन इनके चरणों पर अर्पण कर सकती हूँ, लेकिन वह नहीं कर सकती, जो मेरे किये नहीं हो सकता। अवस्था का भेद मिटाना मेरे वश की बात नही। आखिर यह मुझसे क्या चाहते हैं–समझ गयी आह! यह बात पहले ही नहीं समझी थी, नहीं तो इनको क्यों इतनी तपस्या करनी पड़ती, क्यों इतने स्वांग करने पड़ते।''

उपर्युक्त संवाद में निर्मला का मानसिक द्वंद्व प्रकट हुआ है। आप उपन्यास में जगह-जगह ऐसे संवादों को पाएँगे।

4. **स्वगत कथन** : ऐसे संवाद मानसिक द्वंद्व को प्रकट करने वाले संवाद जैसे लगते हैं लेकिन अंतर यह है कि स्वगत कथन वाले संवाद में पात्र अन्य पात्र के साथ वार्तालाप कर रहा होता है लेकिन उसके मन में भी वार्तालाप चलता रहता है। और दोनों वार्तालाप में समानता नहीं होती। पात्र बोलता कुछ और है और मन

BHDC-109_4th proof.indd 105 8/6/2021 2:09:05 PM

के अंदर स्वयं से कुछ और वार्तालाप कर रहा होता है। उदाहरण से आप इसे स्पष्ट समझ जायेंगे।

''निर्मला बोली–पहले तो शाम ही को पढ़ा देते थे, अब कई दिनों से एक बार आकर लिखना भी देख लेते हैं। .....

मुंशी जी ने दिल में कहा–खूब समझता हूँ। तुम कल की छोकरी मुझे चराने चली। दीदी का सहारा लेकर अपना मतलब पूरा करना चाहती है। बोले, मैं नहीं समझता, बोर्डिंग का नाम सुनकर क्यों लौंडे की नानी मरती है और लड़के खुश होते हैं कि अब अपने दोस्तों में रहेंगे, यह उल्टे रो रहा है। अभी कुछ दिन पहले यह दिल लगाकर पढ़ता था।''

उपर्युक्त संवाद में रेखांकित अंग स्वगत कथन वाला संवाद है। मुंशीजी मन में कुछ और सोचते हैं और बाहर कुछ और कहते हैं।

5. **भावपूर्ण संवाद** : जिन संवादों में पात्रों के भाव उभर कर आए उन्हें भावपूर्ण संवाद कहते हैं। ऐसे संवाद निश्छल होते हैं। पात्रों के अंदर उठने वाली सच्ची भावनाएँ ही संवाद के माध्यम से बाहर निकल पड़ती हैं।

एक उदाहरण देखिए–

''मुंशी जी एक क्षण तक मंसाराम की शिथिल मुद्रा की ओर व्यथित नेत्रों से ताकते रहे, फिर सहसा उन्होंने डॉक्टर साहब का हाथ पकड़ लिया और अत्यंत दीनतापूर्ण आग्रह से बोले–डॉक्टर साहब, इस लड़के को बचा लीजिए–ईश्वर के लिए बचा लीजिए। नहीं–मेरा सर्वनाश हो जाएगा। मैं अमीर नहीं हूँ। लेकिन आप जो कहेंगे, वह हाजिर करूँगा, इसे बचा लीजिए। आप बड़े से बड़े डॉक्टर को बुलाइए और उनकी राय लीजिए, मैं सब खर्च दूँगा। इसकी यह दशा अब नहीं देखी जाती। हाय, मेरा होनहार बेटा।

डॉक्टर साहब ने करुण स्वर में कहा–बाबू साहब, मै आपसे सत्य कह रहा हूँ कि मैं इनके लिए अपनी तरफ से कोई बात उठा नहीं रख रहा हूँ। अब आप दूसरे डॉक्टरों से सलाह लेने की कहते हैं। अभी डॉक्टर लाहिरी, डॉक्टर भाटिया और डॉक्टर माथुर को बुलाता हूँ। विनायक शास्त्री को भी बुलाये लेता हूँ, लेकिन मैं आपको व्यर्थ का आश्वासन नहीं देना चाहता–हालत नाजुक है।

मुंशी जी ने रोते हुए कहा–नहीं डॉक्टर साहब, यह शब्द मुँह से न निकालिये। हालत इसके दुश्मनों की नाजुक हों। ईश्वर मुझ पर इतना कोप न करेंगे। आप कलकत्ता और बंबई के डॉक्टरों को तार दीजिए, मैं ज़िन्दगी भर आपकी गुलामी करूंगा।''

आप देखिए मुंशी जी के संवाद में उनके मन की भावनाएँ ही निकल रही हैं। पुत्र के प्रति उनकी व्याकुलता का भावपूर्ण चित्रण किया गया है।

बोध प्रश्न

12. संवाद का अर्थ स्पष्ट कीजिए।

.....

13. नाटकीय संवाद किसे कहते हैं? चार पंक्तियों में लिखिए।

.....

.....

.....

.....

BHDC-109_4th proof.indd 106 8/6/2021 2:09:06 PM

14. आत्मलापपरक संवाद और स्वगत कथन वाले संवाद का अंतर स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

.....

.....

15. भावूपर्ण संवाद का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

.....

.....

अब तक हमने जाना कि संवाद कितने प्रकार के होते हैं। अब हम संवाद के गुणों को समझने का प्रयत्न करेंगे। उपन्यासकार की रचना संवाद की दृष्टि से भी उत्कृष्ट बन सके इसके लिए आवश्यक है कि उनमें कुछ मूलभूत गुण हों। हम इन्हें इस प्रकार रख सकते हैं।

1. अनूकूलता
2. सरलता
3. स्वाभाविकता
4. सुसंबद्धता
5. संक्षिप्तता
6. मार्मिकता
7. रोचकता
8. व्यंग्यपूर्णता
9. चरित्र प्रकाशन क्षमता
10. सोद्देश्यता

उपुर्यक्त गुणों के द्वारा ही लेखक संवादों को सही रूप में प्रस्तुत करता है, जिससे उनकी रचना प्रभावशाली बनती है। आप जान चुके हैं कि संवादों का संबंध पात्रों, चरित्र–चित्रण तथा कथा के विकास से है। इन्हीं बातों को ध्यान में रखकर लिखा गया संवाद सफल होता है। हम इस इकाई में संवाद के प्रकार तथा गुणों की चर्चा विस्तार से इसलिए कर रहे हैं ताकि जब आप पाठ्यक्रम में निर्धारित अन्य उपन्यासों पर विचार करें तो इन बिन्दुओं के आधार पर स्वयं उनका मूल्यांकन और विश्लेषण कर सकें। आइए, 'निर्मला' उपन्यास के उदाहरणों द्वारा इसे विस्तार से समझें।

1. **अनुकूलता** : अनुकूलता से हमारा तात्पर्य उन बातों से है जिससे संवाद उचित मालूम पड़े। अर्थात् जिस परिवेश, वर्ग से पात्र का संबंध है उसी के अनुकूल संवाद का चयन हो। उदाहरण के लिए यदि पात्र पढ़ा-लिखा है, तो उसका संवाद कुछ और होगा। यदि पात्र अनपढ़ है, तो उसका संवाद कुछ दूसरे तरीके का होगा। यदि पात्र समाज के उच्च वर्ग या निम्न वर्ग से संबंध रखता है, तो उसके लिए वैसा ही संवाद लिखना आवश्यक है। स्त्री-पुरुष पात्रों के संवाद में भी भिन्नता आवश्यक है। एक उदाहरण देखिए–

   ''भाल–महाराज, हमसे तो ऐसा अपराध नहीं हुआ।

   मोटे–अपराध नहीं हुआ। और अपराध कहते किसे हैं। अभी आप ही ने जाकर कहा कि यह महाशय तीन सेर मिठाई चट कर गये, पक्की तौल। आपने अभी खाने वाले देखे कहाँ। एक बार खिलाइये तो आँखें खुल जायँ। 'ऐसे महान् पुरुष पड़े हैं जो पसेरी भर मिठाई खा जाय और डकार तक न लें। एक-एक मिठाई खाने के लिए हमारी चिरौरी की जाती है, रुपये दिये जाते हैं। हम भिक्षुक ब्राह्मण नहीं हैं, जो आपके द्वार पर पड़े रहें। आपका नाम सुन कर आये थे, यह न जानते थे कि यहां मेरे भोजन के लाले पड़ेंगे। जाइये, भगवान आपका कल्याण करे।''

   मोटेराम उस पुरोहित वर्ग का प्रतिनिधित्व करते हैं जो धर्म का भय दिखा कर लोगों से अपना काम निकलवाते हैं। लेखक ने यहाँ मोटेराम के अनुकूल ही संवाद रखे हैं।

BHDC-109_4th proof.indd 107 8/6/2021 2:09:06 PM

नीचे निर्मला और तोताराम की बातचीत का एक उदाहरण देखिए:

''निर्मला ने कहा–आज इतनी देर कहाँ लगायी? दिन भर राह देखते–देखते आँखें फूटी जाती हैं। तोताराम ने खिड़की की ओर ताकते हुए जवाब दिया–मुकदमों के मारे दम मारने की छुट्टी नहीं मिलती। अभी एक मुकदमा और था, लेकिन मैं सिर दर्द का बहाना करके भाग खड़ा हुआ।

निर्मला–तो क्यों इतने मुकदमे लेते हो? काम उतना ही करना चाहिए जितना आराम से हो सके। प्राण देकर थोड़े ही काम किया जाता है। मत लिया करो बहुत मुकदमे। मुझे रुपये का लालच नहीं। तुम आराम से रहोगे तो बहुत रुपये मिलेंगे।

तोताराम–भाई, आती हुई लक्ष्मी भी तो नहीं ठुकराई जाती।

निर्मला–लक्ष्मी अगर रक्त और मांस की भेंट लेकर आती है, तो उसका न आना ही अच्छा! मैं धन की भूखी नहीं हूँ।''

मुंशी तोताराम वकील हैं, तथा उन्होंने अधेड़ उम्र में विवाह किया है। निर्मला उनकी पत्नी है और उम्र में वकील साहब से बहुत छोटी है। उपर्युक्त संवाद की रचना लेखक ने पात्रों की अनुकूलता को ध्यान में रखकर किया है। मुंशी जी एक ओर मध्य वर्ग का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं वहीं वे उन पुरुषों में से भी हैं जो वैवाहिक सुख के लिए बिना सोचे-समझे कम उम्र की कन्या से विवाह करते हैं। संयोगवश अपना और निर्मला का चेहरा एक साथ आइने में देखते हैं और झेंप जाते हैं। इन परिस्थितियों में एक चतुर वकील की भाँति वे निर्मला के प्रश्न का उत्तर देते हैं। निर्मला चाहे उम्र में वकील साहब से छोटी है किंतु वह उनकी पत्नी है इसलिए वह पति के स्वास्थ्य का ख्याल रखती है। इन्हीं सब बातों को ध्यान में रख कर संवादों की रचना की गई है।

इसी प्रकार आप ध्यान देंगे तो पाएँगे कि उपन्यास में जितने पात्र हैं और जिस वर्ग आयु या लिंग से संबंधित हैं, संवादों की रचना इन सभी बातों को ध्यान में रखकर की गई है।

2. **सरलता** : संवादों का एक गुण सरलता भी है। सरलता से हमारा तात्पर्य वैसे संवादों से है जिनमें कठिन शब्दों का प्रयोग नहीं किया गया हो। 'निर्मला' के सभी संवादों में यह गुण दिखाई देता है।

3. **स्वाभाविकता** : जिन संवादों को पढ़कर यह अनुभव न हो कि पात्र कुछ वैसी बातें कर रहा है जो नहीं होनी चाहिए थी, वे संवाद स्वाभाविक कहलाते हैं। अर्थात् पात्रों के संवाद बनावटी न लगें, पात्रों के स्वभाव के अनुकूल हो। उदाहरण के लिए मंसाराम और रुक्मिणी का यह स्वाभाविक संवाद देखें–

''रुक्मिणी ने विस्मित होकर पूछा–क्यों?

मंसा–मैं क्या जानूँ कहने लगे कि तुम यहाँ आवारों की तरह इधर-उधर फिरा करते हो।

रुक्मिणी–तूने कहा नहीं कि मैं कहीं नहीं जाता?

मंसा–कहा क्यों नहीं, मगर जब वह माने भी।''

उपर्युक्त संवाद पात्रानुकूल और स्वाभाविक है। मंसाराम शांत स्वभाव का है और रुक्मिणी उग्र स्वभाव की, इसलिए दोनों अलग-अलग तरह से बोलते हैं। एक अन्य उदाहरण देखिए–

''जियाराम ने बिगड़कर कहा–दूध बंद रहने से तो आपका महल बन रहा होगा, भोजन भी बंद कर दीजिए।

BHDC-109_4th proof.indd 108 8/6/2021 2:09:06 PM

मुंशी जी–दूध पीने का शौक है, तो जाकर दुहा क्यों नहीं लाते? पानी के पैसे तो मुझसे न दिये जायेंगे।

जियाराम–मैं दूध दुहाने जाऊं, कोई स्कूल का लड़का देख ले तब।''

जियाराम उद्दंड स्वभाव का है, इसलिए पिता से भी वह अपने स्वभाव के अनुकूल ही बात करता है।

4. **सुसंबद्धता** : सुसंबद्धता से तात्पर्य यह है कि संवाद कथा और पात्र दोनों से जुड़े हों। उदाहरण–

''निर्मला चारपाई से उठकर बोली–आइए दीदी, बैठिए।

रुक्मिणी ने खड़े ही कहा–मैं पूछती हूँ क्या तुम सबको घर से निकाल कर अकेले ही रहना चाहती हो।

निर्मला ने कातर भाव से कहा–क्या हुआ दीदीजी? मैंने तो किसी से कुछ नहीं कहा।

रुक्मिणी–मंसाराम को घर से निकाले देती हो, तिस पर कहती हो मैंने तो किसी से कुछ नहीं कहा। क्या तुमसे इतना भी नहीं देखा जाता।''

उपर्युक्त उदाहरण में देखिए संवाद पीछे की घटना से जुड़े हुए हैं। मुंशी तोताराम मंसाराम को होस्टल में रखने के लिए उस पर दबाव डालते हैं। रुक्मिणी देवी को जब इसकी सूचना मिलती है, तो वह तुरंत निर्मला के पास इस बारे में पूछने जाती है, क्योंकि वह निर्मला को ही इस बात के लिए दोषी समझती है। इस प्रकार कथा आगे बढ़ती है।

5. **संक्षिप्तता** : संवाद का एक गुण संक्षिप्तता भी है। यह आवश्यक नहीं कि लंबे संवादों से ही कथा आगे बढ़े। छोटे संवाद भी प्रभावशाली होते हैं। उदाहरण के लिए जब जियाराम ने आत्महत्या कर ली और डाक्टर सिन्हा को इसकी सूचना मिल जाती है, उस समय वे मुंशी जी को केवल यह कह कर कि *''भाई साहब अब धैर्य से काम''* द्वारा इस घटना की सूचना देते हैं। इसी प्रकार जगह-जगह छोटे–छोटे वाक्यों द्वारा संवाद में संक्षिप्तता लाई जाती है।

6. **मार्मिकता** : जिन संवादों को पढ़कर पाठक का मन कथा पढ़ने में रम जाए वहाँ संवाद में मार्मिकता का गुण होता है। ऐसे संवाद मन को स्पर्श करते हैं और पाठक में पात्र के प्रति सहानुभूति जाग उठती है। उदाहरण–

''निर्मला ने काँपते हुए स्वर में कहा–मैं तो हूँ। भोजन करने क्यों नहीं चल रहे हो? कितनी रात गयी।

मंसाराम ने मुँह फेर कहा–मुझे भूख नहीं है।

निर्मला–यह तो मैं तीन बार भूँगी से सुन चुकी हूँ।

मंसाराम–तो चौथी बार मेरे मुँह से सुन लीजिए।

निर्मला–शाम को भी तो कुछ नहीं खाया था, भूख क्यों नहीं लगी?

मंसाराम ने व्यंग्य की हँसी हँस कर कहा–'बहुत भूख लगेगी तो आयेगा कहाँ से।' यह कहते–कहते मंसाराम ने कमरे का द्वार बन्द करना चाहा, लेकिन निर्मला किवाड़ों को हटाकर कमरे में चली आयी और मंसाराम का हाथ पकड़ सजल नेत्रों से विनय-मधुर स्वर में बोली–मेरे कहने से चलकर थोड़ा सा खा लो। तुम न खाओगे तो मैं भी जाकर सो रहूँगी। क्या मुझे रात भर भूखों मारना चाहते हो?

मंसाराम सोच में पड़ गया। अभी भोजन नहीं किया, मेरे ही इन्तज़ार में बैठी रही। पर स्नेह, वात्सल्य और विनय की देवी है या ईर्ष्या और अमंगल की मायाविनी

BHDC-109_4th proof.indd 109 8/6/2021 2:09:06 PM

मूर्ति। उसे अपनी माता का स्मरण हो आया। जब वह रूठ जाता था, तो वे भी इसी तरह मनाने आया करती थी और जब तक न जाता था, वहाँ से न उठती थी। वह इस विनय को अस्वीकार न कर सका। बोला ''मेरे लिए आपको इतना कष्ट हुआ, इसका मुझे खेद है। मैं जानता कि आप मेरे, इन्तज़ार में भूखी बैठी हैं, तो कभी खा आया होता।''

यहाँ निर्मला और मंसाराम के संवाद में मार्मिकता है। एक सौतेली माँ का सच्चे स्नेह से पूर्ण व्यवहार और पुत्र द्वारा वास्तविक स्थिति को जानने पर खेद प्रकट करना मन को छू लेते हैं।

7. **रोचकता** : पाठक किसी उपन्यास की कथा को पढ़ने में गंभीरता से रम सकता है लेकिन महत्त्वपूर्ण और गंभीर विषय भी कभी-कभी उबाने लगते हैं। ऐसी स्थिति में कथा में कुछ ऐसे संवाद भी होने चाहिए जिससे पाठक का थोड़ा मनोरंजन भी हो और उसे रुचिकर भी लगे। 'निर्मला' उपन्यास की कथा में मुंशी जी के मित्र नयनसुख के प्रसंग से संवादों के द्वारा लेखक ने इस रोचकता को उपस्थित किया है। उदाहरण–

''तोताराम ने गंभीर भाव में कहा–कहीं ऐसी हिमाकत न कर बैठना, नहीं तो पछताओगे।

लौंडिया तो लौंडो से ही खुश रहती हैं। हम तुम अब उस काम के नहीं रहे। सच कहता हूँ मैं तो शादी करके पछता रहा हूँ। बुरी बला गले पड़ी। सोचा था, दो चार साल और जिन्दगी का मजा उठा लूँ, उल्टी आंतें गले पड़ी।

नयनसुख–तुम क्या बातें करते हो? लौंडियों को पंजों में लाना क्या मुश्किल बात है, जरा सैर तमाशे दिखा दो, उनके रूप रंग की तारीफ कर दो, बस रंग जम जाय।

तोता–यह सब करके हार गया।

नयन–अच्छा, कुछ इत्र, फूल–पत्ते, चाट-वाट का भी मजा चखाया?

तोता–अजी, यह सब कर चुका। दम्पत्ति शास्त्र के सारे मंत्रों का इम्तहान ले चुका, सब कोरी गप्पें हैं।''

दो मित्र आपस में यह विचार कर रहे हैं कि पत्नी को कैसे खुश किया जाय। यद्यपि दोनों अधेड़ उम्र के हैं, तोताराम की पत्नी उससे काफी छोटी है।

नयनसुख तरह-तरह के नुस्खे बताते हैं जिससे पत्नी को खुश किया जाय। उनकी बातें मनोरंजन पूर्ण हैं। सैर तमाशे दिखाना, इत्र, तेल, आदि का प्रयोग करना इन सब बातों से रोचकता की सृष्टि की गई है।

8. **व्यंग्यपूर्णता** : कभी-कभी पात्र परिस्थितिवश दूसरे पात्र पर व्यंग्य करता है। संवादों के माध्यम से ऐसा करना संभव है। 'निर्मला' उपन्यास की कथा में जब भूँगी, निर्मला द्वारा भेजी गई मिठाई लेकर मंसाराम के पास होस्टल पहुँचती है, उस समय मंसा के कथन में व्यंग्य का भाव व्यक्त होता है।

''भूँगी–भैया, तुम तो कहते हो, यहाँ खूब खाता हूँ और मौज करता हूँ, मगर देह आधी भी नहीं रही। जैसे आये थे उसके आधे भी न रहे।

मंसाराम–यह तेरी आँखों का फेर है। देखना दो चार दिन में मुटा कर कोल्हू हो जाता हूँ कि नहीं! उनसे यह भी कह देना कि रोना-धोना बंद करें। मैंने सुना कि रोती हैं और खाना नहीं खाती। मुझसे बुरा कोई नहीं। मुझे घर से निकाला है तो आप चैन से रहे। चली हैं प्रेम दिखाने। मैं ऐसे त्रिया चरित्र बहुत पढ़े बैठा हूँ।''

BHDC-109_4th proof.indd 110 8/6/2021 2:09:06 PM

उपुर्यक्त संवाद में निर्मला पर व्यंग्य किया गया है कि उसने मंसाराम को घर से निकाला है और झूठे आँसू बहाती है।

9. **चरित्र प्रकाशन क्षमता** : आप जान चुके हैं कि संवाद ऐसे होने चाहिए जिनसे पात्रों का चरित्र उभरे। 'निर्मला' उपन्यास में सभी पात्रों के चरित्र को संवादों के द्वारा उभारा गया है।

''निर्मला ने रोकर कहा–मैंने उन्हें कुछ कहा हो तो मेरी जबान कट जाय। हाँ, जाकर उन्हें बुला लाइये।

रुक्मिणी ने तीव्र स्वर में कहा–तुम क्यों नहीं बुला लाती? क्या छोटी हो जाओगी? अपना होता तो क्या इसी तरह बैठी रहती?''

उपर्युक्त संवाद में जहाँ निर्मला के सरल, निष्कपट चरित्र को उभारा गया है वहीं रुक्मिणी का ईष्यालु, कटुभाषिणी तथा कठोर हृदय महिला का चरित्र उभर कर सामने आया है। परिस्थितिवश पात्रों के चरित्र में बदलाव भी आता है। इसे भी लेखक ने संवादों के द्वारा दिखाया है। रुक्मिणी देवी निर्मला के चरित्र को पहचान जाती है और कथा के अंत में हम देखते हैं कि इसके लिए पश्चाताप भी करती हैं।

''रुक्मिणी रोती हुई बोली–बहू, तुम्हारा कोई अपराध नहीं। ईश्वर से कहती हूँ, तुम्हारी ओर से मेरे मन में जरा भी मैल नहीं है। हाँ, मैंने सदैव तुम्हारे साथ कपट किया, इसका मुझे मरते दम तक दुख रहेगा।''

10. **सोद्देश्यता** : कोई भी रचनाकार अपनी रचना किसी न किसी उद्देश्य को लेकर करता है। वह पात्रों के संवादों के माध्यम से अपने उद्देश्य को प्रकट करता है। 'निर्मला' उपन्यास के संवाद भी सोद्देश्य हैं। दहेज प्रथा और अनमेल विवाह के भयानक परिणाम को लेखक संवादों के द्वारा प्रस्तुत करता चलता है। कथा के आंरभ में हम देखते हैं कि दहेज की बात को लेकर समस्या शुरू होती है।

''कल्याणी–दस दिन में पाँच हजार से दस हजार हुए। एक महीने में तो शायद एक लाख की नौबत आ जाए।

उदयभानु–क्या करूँ जगहँसाई भी तो अच्छी नहीं लगती। कोई शिकायत हुई तो लोग कहेंगे, नाम बड़े दर्शन छोटे। फिर जब वह मुझसे दहेज की एक पाई नहीं लेते तो यह मेरा भी कर्त्तव्य है कि मेहमानों के आदर-सत्कार में कोई बात उठा न रखूँ।''

इस प्रकार आदि से अंत तक लेखक ने अपने उद्देश्य को सामने रख कर संवादों की रचना की है।

बोध प्रश्न

16. संवाद के पाँच गुण हैं। सरलता, अनुकूलता, स्वाभाविकता, सुसंबद्धता, मार्मिकता। आप अन्य पाँच गुण बताइये।

.....

17. मार्मिक संवाद का तात्पर्य स्पष्ट कीजिए।

.....

18. ''रँगीलीबाई ने विस्मित होकर कहा–अजी नहीं, तीन सेर भला क्या खायेगा। आदमी है या बैल?

भाल–तीन सेर तो अपनी मुँह से कह रहा है। चार से कम न खायी होगी पक्की तोल।

BHDC-109_4th proof.indd 111 8/6/2021 2:09:06 PM

रँगीली–पेट में शनीचर है क्या?

भाल–आज और रह गया तो छह सेर पर हाथ फेरेगा।''

उपर्युक्त संवाद में कौन से गुण हैं? कारण सहित बताइए।

5.4 सारांश

- लेखक अपने समय और समाज से अवश्य प्रभावित होता है। जब वह किसी उपन्यास की रचना करता है उस समय उसकी रचना में भी समय और समाज की छाप मिलती है। 'निर्मला' उपन्यास का प्रकाशन 1927 में हुआ था और उसमें समकालीन समाज का यथार्थवादी चित्रण मिलता है। प्रेमचंद ने इस उपन्यास के द्वारा मध्यवर्गीय हिंदू परिवारों का चित्र प्रस्तुत किया है। यह वह दौर है जब लड़कियों का विवाह जल्दी कर दिया जाता था और माता–पिता को दहेज की व्यवस्था करनी पड़ती थी। दहेज न दे सकने की स्थिति में लड़की की शादी किसी अधेड़ और दुहाजू व्यक्ति से कर दी जाती है। निर्मला के साथ भी ऐसा ही होता है और उसके नतीजतन उसे किस तरह की स्थितियों से गुजरना पड़ता है, इसे ही उपन्यास का विषय बनाया गया है। एक मध्यवर्गीय वकील के परिवार का परिवेश इस उपन्यास में चित्रित किया गया है।
- प्रत्येक लेखक की रचना करने की अपनी रीति होती है। उसकी रचना पर उसके व्यक्तित्व की छाप रहती है। आप इस पर ध्यान दें, तो उपन्यास की शैली को स्पष्ट कर सकते हैं। 'निर्मला' की रचना वर्णनात्मक शैली में की गयी है। जिसका विस्तृत विश्लेषण इकाई में पढ़ चुके हैं।
- उपन्यास की कथावस्तु के अनुकूल भाषा का प्रयोग किया जाता है। उपन्यास के पात्रों के संवाद भी उपन्यास के प्रतिपाद्य को ध्यान में रख कर किए जाते हैं। आप उपन्यास की भाषा और संवाद का विश्लेषण कर सकते हैं। 'निर्मला' उपन्यास की भाषिक विशेषताओं का अध्ययन आप उपन्यास में कर चुके हैं।
- निर्मला उपन्यास में परिवेश, भाषा-शैली, संवाद आदि का कितना सटीक प्रयोग किया गया है। उसे आप स्पष्ट कर सकते हैं।

5.5 शब्दावली

अभिप्राय : तात्पर्य, जो कहना चाहते हैं।

प्रतिबिम्ब : छाया

बुनियाद : नींव, आधार

कुरीति : बुरी रीति, कुप्रथा, बुरी चाल

विकृत : जिसमें किसी प्रकार का विकार हो गया हो, बिगड़ा हुआ।

अभिशाप : पूर्व जन्म कुल मर्यादा, शिक्षा, सभ्यता आदि का मन पर पड़ने वाला प्रभाव।

व्यंग्यवाण : किसी का मज़ाक उड़ाना, उसे हीन सिद्ध करने आदि के लिए कहा गया ऐसा कथन जो उसे पीड़ा पहुँचाये।

अनबन : बिगाड़, विरोध, खटपट

झेलना : सहना

BHDC-109_4th proof.indd 112 8/6/2021 2:09:06 PM

उपकरण : साधन, वह वस्तु जिसके द्वारा या जिसकी सहायता से कोई काम संपन्न किया जाय।

नाटकीय : नाटक जैसी, बहुत आकस्मिक रूप से परन्तु कुशलतापूर्वक और चतुरतापूर्वक किया जाने वाला कार्य।

अलंकार : साहित्य लेखन में वर्णन करने की वह रीति जिससे भाषा या कथ्य में सुंदरता, चमत्कार तथा रोचकता आती है।

तत्सम : किसी भाषा का वह शब्द जिसका व्यवहार दूसरी अथवा देशी भाषाओं में मूल रूप में या ज्यों का त्यों हों जैसे हिंदी में प्रयुक्त संस्कृत शब्द–प्रसन्न, सत्कार, क्रीड़ा, पैशाचिक।

तद्भव : किसी भाषा का वह शब्द जिसका रूप दूसरी भाषा में या मूल भाषा में बदले हुए रूप में प्रयुक्त हो। संस्कृत का मूल शब्द दृष्टि का तद्भव रूप दीठि है। तथा निष्ठुर का निठुर।

बोधगम्य : समझ में आने योग्य

सटीक : बिल्कुल ठीक

5.6 बोध प्रश्नों/अभ्यासों के उत्तर

1. परिवेश का कोशगत अर्थ है ''घेरा'', लेकिन साहित्यिक रचना के संदर्भ में हम इस शब्द का प्रयोग इस अर्थ में करते हैं कि एक लेखक किसी विशिष्ट समय और समाज में जो कुछ देखता, सुनता है उसे अपने रचना कौशल से उपन्यास जैसी साहित्यिक विधा में ढालता है। ऐसा करते हुए वह विशिष्ट समय और समाज भी साथ ही साथ चित्रित होता है। समाज के अंतर्गत परिवार, समुदायिक जीवन और राष्ट्रीय जीवन सभी कुछ आ जाता है। अतः यह परिवार तथा समाज उसका परिवेश कहलाता है।

2. साहित्य की अन्य विधाओं की अपेक्षा उपन्यास विधा में मानव जीवन से संबंधित परिवेश को विस्तृत रूप में चित्रित किया जा सकता है।

3. iii) 4. ii)

5. शैली का कोशगत अर्थ है, ढंग, तरीका, किंतु साहित्य के संदर्भ में इसका तात्पर्य है, ''बोल या लिख कर प्रकट करने का वह विशिष्ट ढंग जिस पर वक्ता या लेखक के काल तथा समाज आदि की छाप लगी होती है।'' उदाहरण के लिए भारतेंदु की शैली, प्रेमचंद की शैली से अलग थी।

6. उपर्युक्त अंश में लेखक ने दो प्रकार की शैली का प्रयोग किया है। वे शैलियाँ हैं–वर्णनात्मक शैली और आलंकारिक शैली। ''मुंशी तोताराम से ..... हो जाता'' तक वर्णनात्मक शैली है क्योंकि यहाँ मुंशी तोताराम के बारे में वर्णन द्वारा यह बताया है कि वे ऐसे थे, ऐसा किया, ऐसा कर रहे थे। लेकिन इसके बाद इस अंश में ''लेकिन जब अपनी विनोद वाटिका .... उजाड़ दूँ'' तक का वर्णन आलंकारिक शैली में है। यहाँ लेखक ने काव्यात्मक भाषा का प्रयोग किया है।

7. कोई लेखक जब शब्दों द्वारा पात्रों के बाह्य रूप को स्पष्ट करता है तब हम उसे रेखाचित्र शैली का नाम देते हैं। उदाहरण के लिए, "मुंशी तोताराम साँवले रंग के मोटे/ताजे आदमी थे। उम्र अभी चालीस से अधिक न थी, पर वकालत के कठिन परिश्रम से सिर के बाल पका दिये थे। तोंद निकल आयी थी।" इन पंक्तियों में तोताराम के बाह्य रूप को अंकित किया गया है।

BHDC-109_4th proof.indd 113 8/6/2021 2:09:06 PM

8. उपर्युक्त कथन में लेखक ने व्यंग्यात्मक शैली का प्रयोग किया है। रुक्मिणी देवी निर्मला के ऊपर व्यंग्य कर रही हैं।

9. जब लेखक कथा का वर्णन करते समय किसी पात्र के द्वारा आकस्मिक रूप से कुशलता और चतुराई पूर्वक ऐसा कार्य करवाये या दृश्य में परिवर्तन करे जिसकी पूर्व कल्पना पाठक को न हो, तो इसे ही हम नाटकीय शैली कहते हैं।

10. स्वाभाविकता

    बोलचाल की भाषा

11. उपन्यासकार अपने पात्रों के द्वारा समाज के वर्ग विशेष को हमारे सामने प्रस्तुत करता है। एक शिक्षित पात्र की भाषा तथा अशिक्षित पात्र की भाषा में अंतर होता है। पात्रों के मानसिक स्तर और मनोभावों के अनुकूल भी भाषा में अंतर आता है। इसे ही पात्रानुकूल भाषा कहते हैं। प्रसंगानुकूल भाषा का तात्पर्य है कथा में घट रही घटना के अनुकूल भाषा। यदि कथा में दुःख की स्थिति का वर्णन है, तो भाषा भी वैसे ही होगी। यदि मनोरंजन या सुख की स्थिति का वर्णन है तो भाषा उसी के अनुसार प्रसन्नतापूर्वक और प्रवाहमय होगी।

12. उपन्यास के पात्रों के आपस में वार्तालाप को संवाद कहते हैं। किसी पात्र का अपने आप से बात करना भी संवाद माना जाता है, जिसके आत्मालाप तथा स्वगत कथन नामक दो भेद होते हैं।

13. उपन्यास के पात्रों के वार्तालाप में जब किसी अज्ञात या पहले जिसकी कल्पना न की गयी हो, ऐसी बात उपस्थित हो जाती है और पात्र तथा पाठक को उसके घटित होने या उसके विषय में सुनने से आश्चर्य, दुख या सहसा विशेष हर्ष होता है अथवा जब घटनाओं के मोड़ से कथा आगे बढ़ती है और संवादों के आगे या पीछे लेखक की ओर से कोई संकेत नहीं रहता तो ऐसे संवादों को नाटकीय संवाद कहते हैं।

14. जब उपन्यास के पात्र अकेले ही चिंतन करते हुए किसी कार्य या घटना के बारे में सोचते हैं तब उनके इस आत्मचिंतन करते हुए बोलने की क्रिया को आत्मालाप परक संवाद कहते हैं, किंतु साथ ही साथ जब कोई पात्र बात को किसी अन्य पात्र के साथ कर रहा हो, लेकिन साथ ही साथ उसके मन में स्वयं भी वार्तालाप चल रहा हो तो ऐसे संवाद को स्वगत कथन कहते हैं।

15. किसी पात्र के मन की सच्ची स्थिति या उसके मन के भावों को प्रकट करने वाले संवाद को भावपूर्ण संवाद कहते हैं।

16. संक्षिप्तता, रोचकता, व्यंग्यपूर्णता, चरित्र प्रकाशन क्षमता, सोद्देश्यता।

17. जिन संवादों से पाठक में कथा पढ़ने की रुचि बढ़ जाय और वह पात्रों के मनोभाव से जुड़ जाएँ ऐसे हृदयग्राही संवाद मार्मिक संवाद कहलाते हैं।

18. उपर्युक्त संवाद में रोचकता और व्यंग्य के गुण हैं। ''आदमी है या बैल'' ''पेट में शनीचर है क्या'' आदि कथनों से संवाद में इन दोनों गुणों की सृष्टि हुई है।

अभ्यास

1. 'निर्मला' उपन्यास में धार्मिक पाखण्ड, अंधविश्वास आदि से ग्रसित तत्कालीन सामाजिक परिवेश का यथार्थ चित्रण किया गया है। पंडित मोटेराम द्वारा भालचंद्र को धर्म का भय दिखा कर ठगना, पाखंडी साधु द्वारा तोताराम के सबसे छोटे पुत्र को योग विद्या द्वारा माँ का दर्शन कराने का प्रलोभन देना तथा सुधा के पुत्र की तबीयत खराब होने पर डॉक्टर के स्थान पर झाड़ फूँक द्वारा इलाज कराना आदि प्रसंग इसके उदाहरण हैं।

BHDC-109_4th proof.indd 114 8/6/2021 2:09:06 PM

2. क) जब कोई लेखक उपन्यास की कथा में किसी घटना या दृश्य का वर्णन करता है तो उसे हम वर्णनात्मक चित्रण की संज्ञा देते हैं यहाँ लेखक विवाह की तैयारी का वर्णन कर रहा है, अतः यह वर्णनात्मक चित्रण है।

ख) ii)

3. उपर्युक्त संवाद द्वारा समाज में व्याप्त दहेज जैसी कुप्रथा और उससे उत्पन्न समस्या का पता चता है। मध्यवर्गीय परिवार में कन्या के विवाह के लिए कर्ज लेना पड़ता है फिर उसे चुकता न कर पाने पर पूरे परिवार को कष्ट भोगना पड़ता है।

4. क) उपर्युक्त संवाद में मोटेराम के कथन द्वारा यह पता चलता है कि तत्कालीन समाज में दहेज प्रथा का इतना जोर था कि इने-गिने लोग ही बिना दहेज लिए अपने पुत्र का विवाह करते थे।

ख) ii) ग) iii)

5. ii)

6. उपर्युक्त कथन में लेखक ने समाज के उस वर्ग पर व्यंग्य किया है जो शिक्षित होकर भी सामाजिक बुराइयों को दूर करने के बजाय उन्हें बढ़ाते हैं। भुवनमोहन डॉक्टरी पढ़ रहा है फिर भी वह दहेज नहीं मिलने के कारण निर्मला जैसी गुणवती कन्या के साथ विवाह करने से साफ इन्कार कर देता है। वह दहेज मिलने पर किसी भी प्रकार की लड़की से विवाह करने के लिए तैयार है। यहाँ तक कि उसकी दिली इच्छा है कि कोई विधवा की कन्या मिले जिससे सारे धन पर उसका अधिकार हो जाय।

7. 'निर्मला' उपन्यास की रचना सन् 1927 में हुई। राजनीतिक स्थिति में एक नया मोड़ आ रहा था। गाँधी जी के आह्वान पर देश की जनता क्रूर अंग्रेजी शासन की समाप्ति के लिए आंदोलन कर रही थी। प्रेमचंद ने बीस साल की सरकारी नौकरी का परित्याग कर दिया था और साहित्यिक रचना द्वारा जगजागृति में लग गए थे। 'निर्मला' उपन्यास में भी निर्मला और कृष्णा के वार्तालाप द्वारा उन्होंने देश की राजनीति पर प्रकाश डाला है। वार्तालाप में खादी और चर्खे के उल्लेख से स्वदेशी आंदोलन की ओर ध्यान दिलाया गया है।

8. उपर्युक्त अंश में भाषा पात्रानुकूल है। मंसाराम की भाषा उसके स्वभाव के अनुकूल, सहज, विनम्र और संवेदनापूर्ण है, जबकि रुक्मिणी की भाषा उसके स्वभाव के अनुकूल कठोर तथा व्यंग्यपूर्ण है। ''अम्माँ जी की कृपा होगी, तू त्रिया चरित्र क्या जाने'' आदि प्रयोग कठोर और व्यंग्यपूर्ण हैं। रुक्मिणी निर्मला से चिढ़ती है इसलिए उसकी उदारता या विनम्रता के प्रति संदेह व्यक्त करने के लिए व्यंग्य का सहारा लेती है। यहाँ कृपा का अर्थ सचमुच कृपा नहीं है, बल्कि इस शब्द में रुक्मिणी के हृदय में निर्मला को अधिकार मिल जाने से रुष्टता का भाव है।

9. उपर्युक्त कथन से तोताराम की विकल मनोदशा प्रकट होती है। उनके कथन से पुत्र के स्वास्थ्य के विषय में उनकी चिन्ता तथा दयनीयता का संकेत मिलता है। शिक्षित और पेशे से वकील होने के नाते उनकी भाषा में संस्कृत और अरबी-फारसी के शब्दों का प्रयोग मिलता है। एक ओर जहाँ वह ईश्वर, कोप, कुल-दीपक, हृदय, कष्ट आदि संस्कृत के शब्दों का प्रयोग करते हैं, वहीं दूसरी ओर हालत, दुश्मन, नाजुक, गुलामी, जिंदगी, होश आदि अरबी-फारसी के शब्दों का। प्रचलित शब्दों के प्रयोग से भाषा सरल और बोधगम्य बन गई है।

BHDC-109_4th proof.indd 115 8/6/2021 2:09:06 PM

BHDC-109_4th proof.indd 116 8/6/2021 2:09:06 PM